December 2021

@NewsRotary /RotaryNewsIndia

रोटरी समाचार

INDIA
www.rotarynewsonline.org

Vol.21, Issue 2 | Annual Subscription ₹420

Rotary

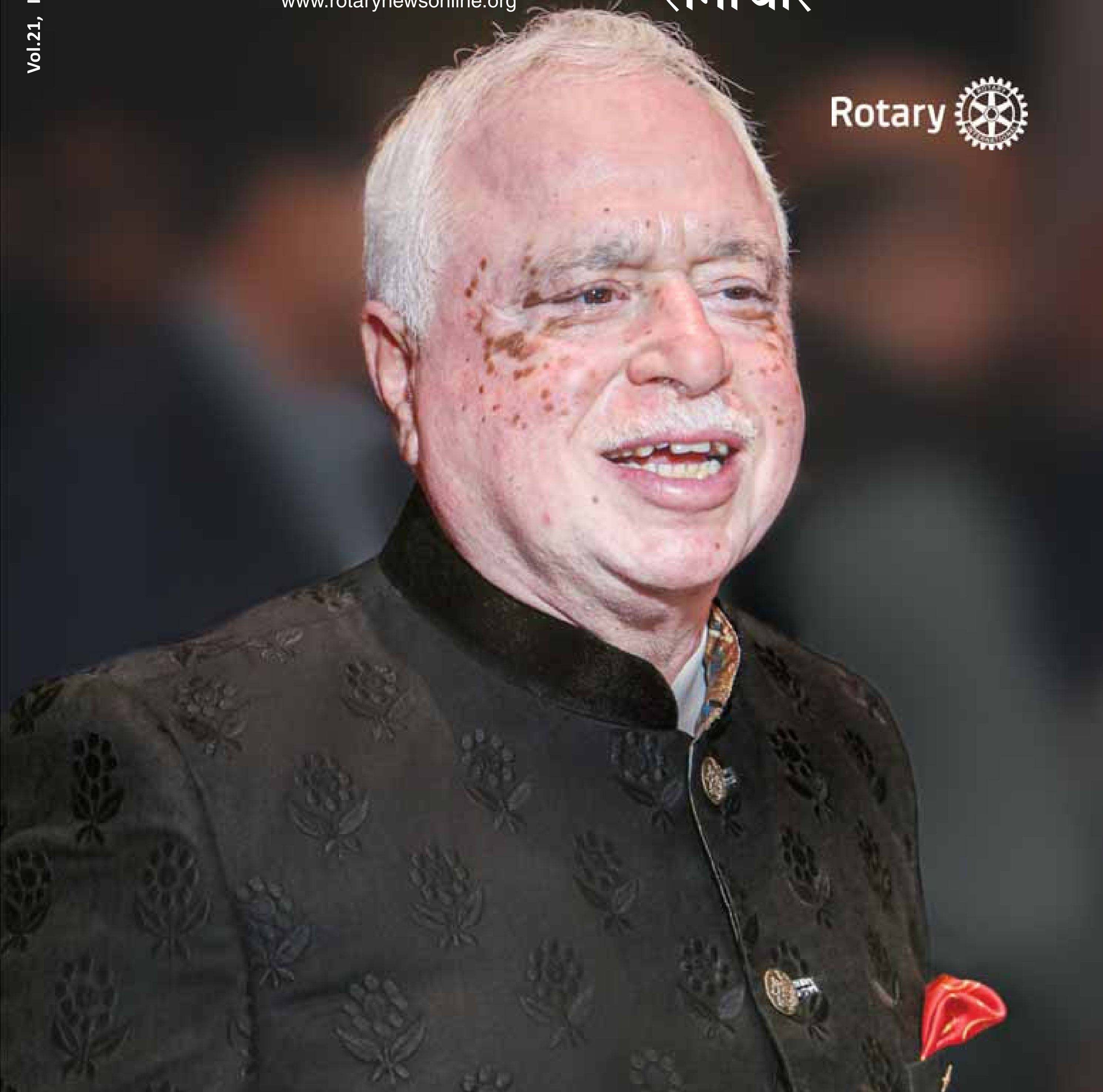

Share the gift of Rotary

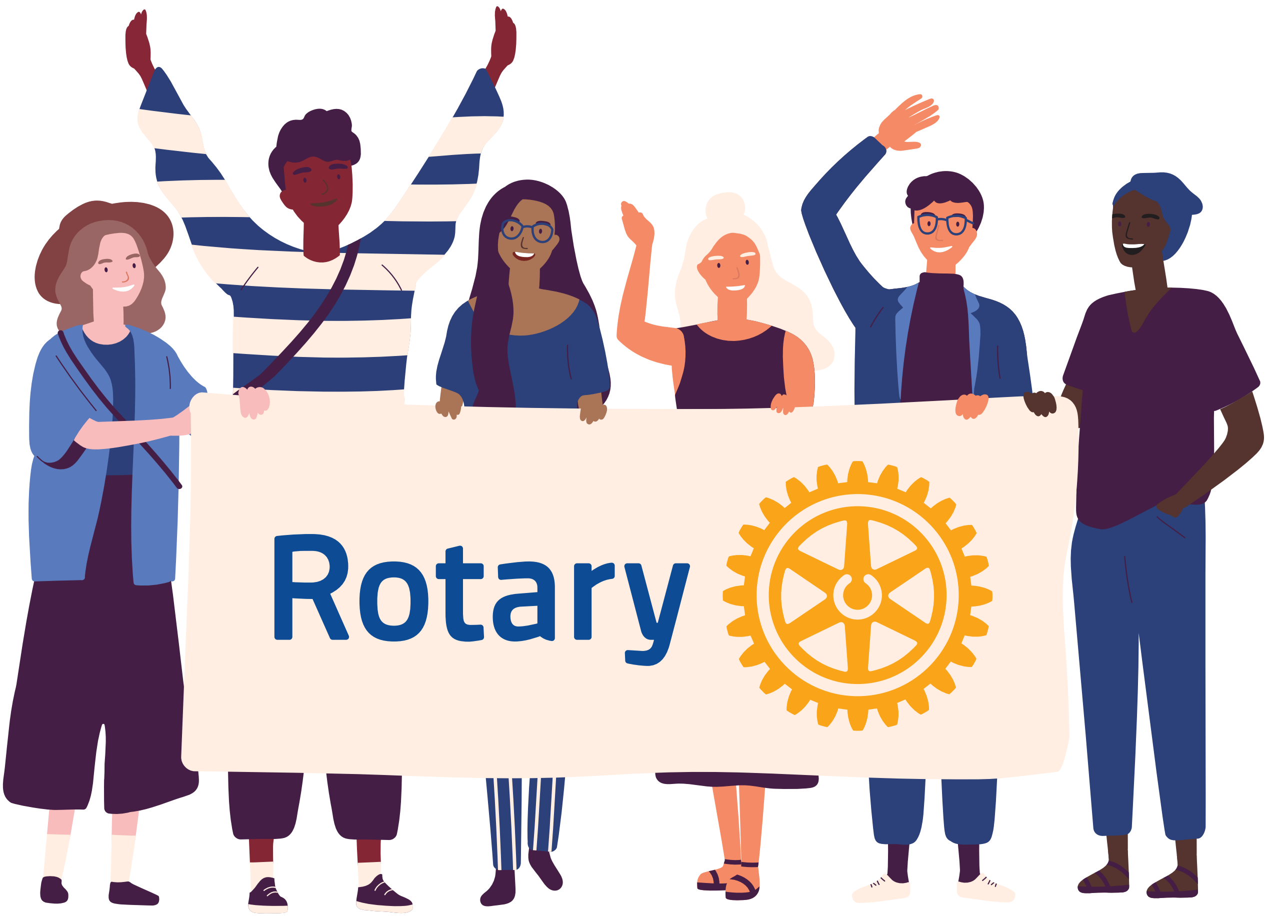

Each of us was given an extraordinary gift when we were proposed for membership in Rotary.

Extend that gift to others by visiting the Member Center in My Rotary and referring a new member.

Refer a new member today

my.rotary.org/member-center

विषयसूची

12 सुशील गुप्ता, एक रोटरी योद्धा, हमारे दिलों में हमेशा ज़िंदा रहेंगे

PRIP कल्याण बेनर्जी ने PRID सुशील गुप्ता को श्रद्धांजलि अर्पित की।

20 भारत के मिल्क मैन का स्मरण: वर्गीज़ कुरियन

वह ऑपरेशन फ्लड के जनक थे जिससे भारत दुनिया का सबसे बड़ा दुध उत्पादक बन गया।

26 रोटरी की सामूहिक शक्ति राष्ट्र निर्माण में मदद कर सकती है

होसपेट के दौरे पर रो ई अध्यक्ष शेखर मेहता रोटेरियनों से अच्छे कार्य करते रहने का आग्रह करते है।

28 भारत-पाक शांति पार्क की खोज में रोटेरियन

भारत और पाकिस्तान के रोटरी क्लबों के बीच ज़ूम फेलोशिप बैठक में दोनों पड़ोसियों के बीच तनाव कम करने के तरीकों पर चर्चा की गई।

36 दिल्ली की झुग्गी बस्ती में 100 हैंडपंप जीवन को आसान बनाते है

रोटरी क्लब दिल्ली साउथ सेंट्रल की इस परियोजना ने पानी को एक बस्ती के निवासियों के पास पहुँचाया।

42 मुंबई में नाइजीरियाई बच्चे की दिल की सर्जरी

रो ई मंडल 3141 ने इस रोटरी वर्ष में जन्मजात हृदय रोग से पीड़ित 100 विदेशी बच्चों की सर्जरी करने का संकल्प लिया है।

44 सौर लैंप कूमाती आदिवासियों के जीवन में रोशनी लाते है

रोटरी क्लब सेलम सेंट्रल ने एक आदिवासी बस्ती को सौर लैंप और आवश्यक वस्तुएं प्रदान की।

66 अपराध-भावना मुक्त उपहार

इस त्योहारी मौसम में पर्यावरण के अनुकूल उपहारों के साथ खुशियां बिखेरें।

Scan our QR code & visit our Website

कवर पर: पूर्व रोटरी अंतर्राष्ट्रीय निदेशक सुशील गुप्ता।

Scan our QR code & read our Magazine

व्यसन के खतरे पर अच्छा कवरेज

नवंबर अंक की कवर फोटो शानदार है क्योंकि यह एक नज़र में लगभग सभी व्यसन सामग्रियों को प्रदर्शित करती है। इस तरह की अभिनव कवर तस्वीर के लिए संपादक को बधाई।

मुझे PRID सुशील गुप्ता के निधन की सूचना सुनकर वास्तव में बहुत दुख हुआ, वो एक ईमानदार व्यक्ति थे और रोटरी जगत में हमेशा याद किए जाएंगे। रो ई अध्यक्ष मेहता द्वारा TRF की तुलना ताजमहल से किया जाना अनुकरणीय है। संपादक का संदेश बच्चों में अनेक व्यसनों की लत और इस बुराई से निपटने के लिए रोटरी के प्रयासों का विवरण देता है। विस्तृत कवर स्टोरी आंखें खोल देने वाली है।

रो ई निदेशक महेश कोटबागी हमें पोलियो उन्मूलन के लिए रोटरी के प्रयासों का एक अच्छा ब्यौरा देते है।

PRIP राजेंद्र साबू द्वारा लिखित लेख *महामारी के समय एक निष्पक्ष, समावेशी, टिकाऊ समाज का निर्माण पढ़ने* योग्य है। इतने सारे लोगों को श्रवण यंत्र प्रदान करके समाज की सेवा करने के लिए रोटरी क्लब हरिपद को सलाम। रोटरी भारत द्वारा पोलियो दिवस समारोह की तस्वीरें शानदार है।

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि रोटेरियन बेंजामिन लिस्ट को रसायन विज्ञान में नोबेल पुरस्कार मिला। अन्य सभी लेख पढ़ने योग्य है। इतने समर्पण के साथ एक उत्कृष्ट पत्रिका लाने के निरंतर प्रयास करने के लिए संपादकीय टीम बधाई।

फिलिप मुलप्पोन एम टी
रोटरी क्लब त्रिवेंद्रम सबअर्बन - मंडल 3211

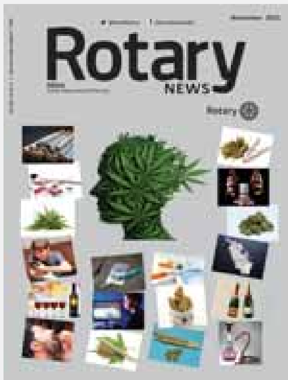

नशीले पदार्थों की लत एक बुरी बीमारी है जो आनुवंशिक प्रवृत्ति, घरेलू हिंसा के इतिहास और तनाव जैसे अनेक कारकों के परिणामस्वरूप लगती है। नवंबर के संपादकीय में युवाओं में प्रचलित विभिन्न प्रकार के व्यसनों को शामिल किया गया। शोधकर्ता उन कारकों की पहचान करने में सक्षम थे जो नशीली दवाओं के दुरुपयोग को जन्म देते है। नशीले पदार्थों की लत लगने का कारण बनने वाले मूल कारकों को समझना ही उनके प्रभावी उपचार और पुनर्वास के सर्वोत्तम तरीकों में से एक है।

के एम के मूर्ति
रोटरी क्लब सिकंदराबाद - मंडल 3150

जैसा कि नवंबर की कवर स्टोरी में बताया गया है, PRIP कल्याण बेनर्जी के नेतृत्व में रोटरी एक्शन ग्रुप फॉर एडिक्शन प्रिवेंशन (RAG-AP) पिछले तीन वर्षों से युवाओं के बीच मादक द्रव्यों के सेवन से लड़ने हेतु कड़ी मेहनत कर रहा है। रोटेरियनों द्वारा की गई कड़ी मेहनत इस RAG को अपने लक्ष्यों में सफल बनाने में मदद करेगी।

संपादक रशीदा भगत का संदेश *रोटरी शैली में व्यसन से मुकाबला* एक बहुत ही सुंदर रचना है। दुख की बात यह है कि हमारे युवा पहले ही 9-14 साल की उम्र में तंबाकू के आदी हो जाते है और फिर विभिन्न प्रकार के नशीले पदार्थों का सेवन करने लगते है। रो ई अध्यक्ष मेहता ने अपने संदेश में कहा कि रोटेरियन मानवता की भलाई के लिए बहुत बड़ी परियोजनाएं पूर्ण करने में सक्षम है। वह चाहते है कि हम अपने सामूहिक उत्साह को जीवन परिवर्तक परियोजनाओं में बदलें।

पीपल ऑफ एक्शन: चैंपियंस ऑफ गर्ल्स एम्पावरमेंट अवार्ड के छह प्राप्तकर्ताओं को हमारी बधाई। यह जानकर खुशी हुई कि मार्च में रोटरी दिवस पर यूनिसेफ में उन्हें सम्मानित किया जाएगा।

एस मुनियांदी, रोटरी क्लब डिंडीगुल फोर्ट - मंडल 3000

संपादकीय *रोटरी शैली में व्यसन से मुकाबला* लोगों की आंखें खोलने वाली है; जबकि टीम रोटरी न्यूज़ द्वारा लिखित लेख *रोटरी क्लब चेन्नई भारती का लक्ष्य है 1,000 लड़कियों को सशक्त बनाना* शानदार है। रशीदा भगत द्वारा लिखी गई रिपोर्ट *रोटरी क्लब हरिपद ने श्रवण यंत्रों के माध्यम से खुशियां बिखेरी* बढ़िया थी विशेष रूप से स्थानीय विधायक रमेश चेन्निथ अला की तस्वीर जिसमें वो एक लाभार्थी को श्रवण यंत्र फिट कर रहे है। किरण की रिपोर्ट *लड़कियों और महिलाओं का समर्थन* दिलचस्प है क्योंकि

एक प्रेरक लेख

लेख 'भविष्य का कथन' (अक्टूबर अंक) वास्तव में एक प्रेरक रचना है क्योंकि मैं हमेशा से साक्षरता के प्रति जुनूनी रहा हूँ। यह एक ऐसी परियोजना है जिसके परिणामों के प्रभाव से बेहतर इंसान और बेहतर नेतृत्वकर्ता भी तैयार होंगे। रोटरी के साथ भारत सरकार की साझेदारी अनेक सार्थक परियोजनाओं को उचित दृश्यता मिलने का एक शुभ संकेत है। हमारे पास साक्षरता पर करने के लिए बहुत कुछ है।

विवेक खंडेलवाल
रोटरी क्लब देवनार
मंडल 3141

रो ई अध्यक्ष मेहता ने उचित रूप से TRF की तुलना प्रेम के प्रतीक स्मारक ताजमहल से की है। हम एक माँ (रोटरी संस्थान) के अपने बच्चों (मानवता) के प्रति निःस्वार्थ प्रेम से भी इसकी तुलना कर सकते है।

पीयूष दोषी, रोटरी क्लब बेलूर - मंडल 3291

मुझे लेख *हैदराबाद में 14 करोड़ का रोटरी आश्रय* पढ़कर खुशी हुई। रोटरी क्लब बंजारा हिल्स ने 60,000 वर्ग फुट की इमारत का निर्माण करके गंभीर रूप से बीमार रोगियों के लिए एक आश्रय

रोटरी क्लब बॉम्बे सीसाइड स्कूलों और झुग्गी बस्तियों में आत्मरक्षा कार्यशालाएं आयोजित कर रहा है।

अक्टूबर अंक की कवर फोटो हृदय विदारक है जिसमें जन्मजात हृदय रोग से पीड़ित एक बच्चे का इलाज सत्य साईं अस्पताल में किया जा रहा है। लड़कियों के सशक्तिकरण पर संपादक का संदेश पढ़ने में दिलचस्प है। रोटरी क्लब बिलासपुर, छतीसगढ़, को उनकी मानवीय सेवाओं के लिए बधाई। किरण ज़ेहरा का लेख *कोविड राहत कार्य करने वाले रोटेरियनों को सम्मानित किया गया* उत्कृष्ट है। टीम रोटरी न्यूज का लेख *महिलाओं के स्वास्थ्य पर ध्यान* बढ़िया है। यह जानकर अच्छा लगा कि रो ई मंडल 3080 ने स्कूली बच्चों को बैठने की अच्छी सुविधा प्रदान की है।

डेनियल चित्तिलापल्ली
रोटरी क्लब कलूर - मंडल 3201

हरे पदार्थों को धारण करने वाले एक मस्तिष्क की कवर फ़ोटो के लिए संपादक को धन्यवाद। यह तस्वीर हाल ही में ग्लासगो में आयोजित COP26 शिखर सम्मेलन के अनुरूप है जहाँ अन्य संगठनों के सभी वैश्विक नेताओं को आगामी वर्षों में कार्बन उत्सर्जन लक्ष्यों को पूरा करने की उम्मीद है। रोटरी क्लब बड़े पैमाने पर वृक्षारोपण अभियान चला रहा है जो हरियाली के प्रति सजगता फैलनी वाली मानसिकता की दिशा में उठाया गया एक उचित कदम है। रहने लायक एक बेहतर पृथ्वी बनाने की दिशा में कार्य करते हुए एक हरित विचार पेश करने और स्वास्थ्य, भूख एवं मानवता के लिए रोटरी योगदान के इस्तेमाल को प्रदर्शित करने के लिए मैं संपादकीय दल को बधाई देता हूँ।

अभय किशोर संदवार, रोटरी क्लब धनबाद मिडटाउन - मंडल 3250

स्थल की स्थापना की। क्लब के अध्यक्ष विकास रंगा कहते है कि उन्होंने इस बड़ी परियोजना पर चरणबद्ध तरीके से काम किया। यह जानकर खुशी हुई कि इस आश्रय स्थल में लगभग 4,000 मरीज रहते है।

एन जगथीसन
रोटरी क्लब एलुरु
मंडल 3020

क्लिफ डॉक्टरमेन नहीं रहें

अत्यंत दुख के साथ आपको सूचित किया जाता है कि 24 नवंबर को पूर्व रो ई अध्यक्ष क्लिफ डॉक्टरमेन का निधन हो गया। उन्होंने 1992-93 के दौरान रो ई अध्यक्ष और 1997-98 के दौरान TRF अध्यक्ष के रूप में सेवा दी। उन्होंने *द एबीसीस ऑफ रोटरी* नामक किताब लिखी। ''असली खुशी दूसरों की मदद करने में है'' यही उनकी अध्यक्षीय थीम थी।

Now you can scan this QR code to pay your magazine subscription

We welcome your feedback. Write to the Editor: **rotarynews@rosaonline.org; rushbhagat@gmail.com.** Mail your project details, along with hi-res photos, to **rotarynewsmagazine@gmail.com.**

Messages on your club/district projects, information and links on zoom meetings/ webinar should be sent only by e-mail to the Editor at **rushbhagat@gmail.com** or **rotarynewsmagazine@gmail.com.** WHATSAPP MESSAGES WILL NOT BE ENTERTAINED.

Click on **Rotary News Plus** on our website **www.rotarynewsonline.org** to read about more Rotary projects.

रोटरी के लिए अच्छा स्वास्थ्य एक मानव अधिकार हैं

SERVE TO CHANGE LIVES

रोटरी के प्यारे परिवर्तनकारियों को मेरा नमस्कार,

वैश्विक महामारी के कारण सार्वजनिक स्वास्थ्य पर हर किसी का ध्यान है क्योंकि अभी भी अपनी और अपने प्रियजनों की सुरक्षा का खतरा बना हुआ है। एक तरह से, कोविड-19 ने हम सभी को चिकित्सा पेशेवरों की भूमिकाओं और जिम्मेदारियों के बारे में पहले से अधिक जागरूक बना दिया है कि हमें मास्क पहनना और सामाजिक दूरी बनाए रखना है। इसके अलावा इस महामारी का सामना करते हुए हमने यह भी जाना कि हम दूसरों को सुरक्षित रखने में क्या भूमिका निभा सकते है।

रोटरी में दिसंबर रोग निवारण और उपचार का महीना होता है। दुर्भाग्य से इस महामारी ने अधिकांश लोगों को उस पड़ाव पर यह सीख दी है कि एक बीमारी हमारे समुदायों में कितनी तबाही मचा सकती है। लेकिन दुनिया भर के रोटेरियन दशकों से बीमारियों से लड़ते आ रहे है। वास्तव में, यह रोटरी के सात ध्यानाकर्षण क्षेत्रों में से एक है।

एक रोटेरियन के रूप में हम मानते है कि अच्छा स्वास्थ्य और तंदरुस्ती एक मानव अधिकार है - भले ही दुनिया भर में 400 मिलियन लोगों की आवश्यक स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच नहीं है। क्लीनिकों, नेत्र अस्पतालों और ब्लड बैंकों की स्थापना के साथ-साथ वंचित समुदायों में चिकित्सा सुविधाओं के लिए बुनियादी ढांचे के निर्माण हेतु जो काम हम करते है वे सभी इस एक विश्वास पर आधारित है कि पहुंच, रोकथाम और शिक्षा भारी नुकसान पहुँचाने वाले घातक प्रकोपों को रोकने की कुंजियाँ है।

स्वास्थ्य कार्यों से मेरा परिचय मेरे रोटरी क्लब कलकत्ता-महानगर से शुरू हुआ। वहाँ अन्य चीजों के अलावा मैंने *सेविंग लिटिल हार्ट्स* नामक एक कार्यक्रम की शुरुआत की जिसने पिछले कुछ वर्षों में भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश, नेपाल और अफ्रीका के बच्चों के लिए 2,500 से अधिक निःशुल्क हृदय शल्य चिकित्सा प्रदान की है। इस कार्यक्रम के अंतर्राष्ट्रीय होने से पहले यह स्थानीय स्तर पर हमारे समुदाय के अंतर्गत केवल छह सर्जरियाँ करने के लक्ष्य के साथ शुरू हुआ था। आज हमारा लक्ष्य अगले पांच वर्षों में 20,000 और सर्जरियों को पूरा करने का है।

इस तरह की चुनौतियों का सामना करने और दूसरों के लिए एक उदाहरण प्रस्तुत करने के लिए दुनिया रोटरी पर निर्भर है। पिछले एक दशक में चिकित्सा पेशेवरों और सरकारी कर्मचारियों ने पारिवारिक स्वास्थ्य दिवसों के मौकों पर 10 देशों के 2.5 मिलियन लोगों को नि:शुल्क स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान की है जिसका आयोजन दुनिया भर के रोटेरियनों द्वारा किया गया था। भारत में आयोजित किए जाने वाले इस तरह के स्वास्थ्य शिविरों से जरूरतमंद लोगों को हजारों सर्जरियाँ उपलब्ध कराई जाती है। प्रत्येक वर्ष भारत से अफ्रीका भेजे जाने वाले चिकित्सा मिशन रोग की रोकथाम और उपचार हेतु व्यावहारिक सेवा का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। रोटरी सदस्य स्थानीय स्तर पर भी अपना योगदान दे सकते है; उदाहरण के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका और मेक्सिको के क्लबों ने मेक्सिको के एक छोटे से शहर, ग्युरेरो, में एक नि:शुल्क स्वास्थ्य क्लिनिक का निधीयन किया।

और निश्चित रूप से पोलियो उन्मूलन के लियर हमारा प्रयास नागरिक-समाज स्वास्थ्य देखभाल में अब तक की सबसे बड़ी उपलब्धि है।

इस माह इस बारे में सोचें कि आपका क्लब बीमारी को रोकने और उससे लड़ने पर कैसे ध्यान केंद्रित कर सकता है। यह क्लब और मंडल परियोजनाओं दोनों के माध्यम से एक बड़ा, बेहतर, साहसिक दृष्टिकोण अपनाने का समय है जो अधिकांश लोगों को प्रभावित कर सकता है। इस बात का पुनर्मूल्यांकन करें कि आप अपने लक्ष्यों को लेकर कहाँ पहुँचें। ऐसी रणनीतियाँ बनाएँ जो महीनों तक नहीं बल्कि वर्षों तक परिवर्तन को बनाए रख सकें।

हर कोई लंबे, स्वस्थ जीवन का हकदार है। जब आप *जीवन परिवर्तित करने के लिए सेवा* करते है, तो आपके द्वारा किए गए कार्य दूसरों के जीवन को बदलने में मदद कर सकते है।

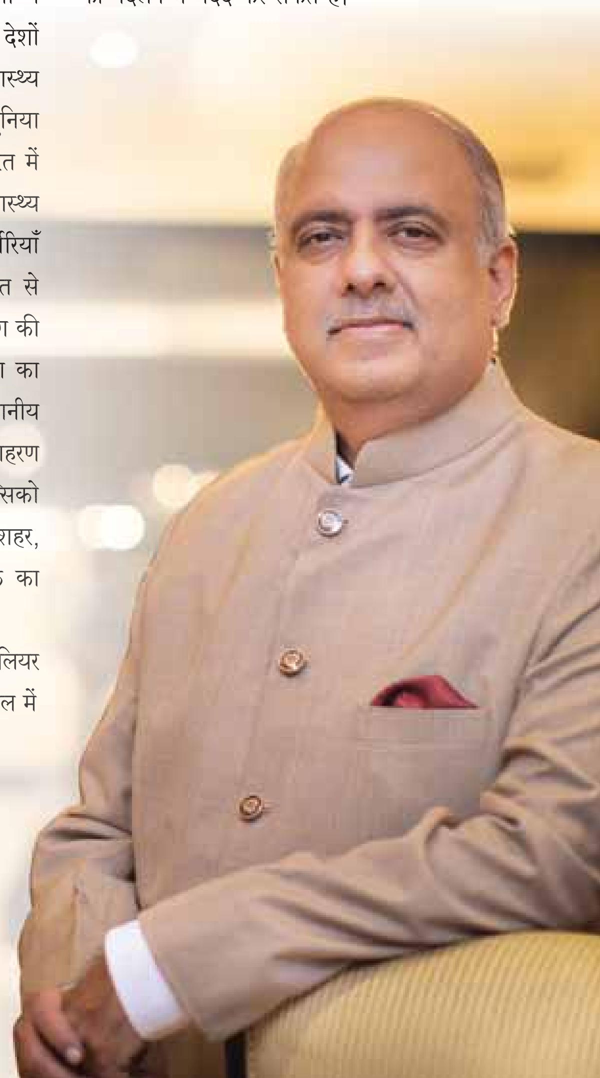

Shekhar Mehta

शेखर मेहता

अध्यक्ष, रोटरी इंटरनेशनल

संपादक
का संदेश

सुशील गुप्ता की कमी खलेगी

अत्यंत भारी मन के साथ हम रोटरी न्यूज़ के इस अंक का प्रकाशन कर रहे हैं, जिसके मुखपृष्ठ पर एक उत्कृष्ट रोटेरियन की तस्वीर है और उससे भी अधिक उत्कृष्ट एक आदर्श पुरुष - पूर्व रो ई निदेशक सुशील गुप्ता, जो हमारे बीच नहीं रहे। वो शख्स जो 2020-21 के लिए रो ई अध्यक्ष के लिए मनोनीत होकर रोटरी इंटरनेशनल के शिखर पर पहुंचे, किन्तु अस्वस्थता के कारण उन्हें पद छोड़ना पड़ा था, एक बहुआयामी और आकर्षक व्यक्तित्व के धनी थे।

उनकी विनम्रता और सादगी देख कर आप सोच भी नहीं सकते थे कि वे भारत के सबसे बड़े होटल व्यवसायियों में से एक थे। उनके राजनीतिक और औद्योगिक संबंध इतने सशक्त थे कि सामुदायिक सेवा परियोजनाऐं करने के लिए रेलवे स्टेशन, सरकारी अस्पताल या किसी भी सरकारी संस्था में सरकार की सहमति या अनुमति लेनी हो, वहां उच्च पदों पर आसीन अतिशक्तिशाली अधिकारियों से, गुप्ता बड़ी आसानी से अनुमति ले लेते थे।

दिल्ली गोल्फ क्लब में गोल्फ खेलना उनका पसंदीदा शौक था। मुझे दिए एक साक्षात्कार में, हंसते हुए उन्होंने कहा था कि उनके साथ खेलने वाले उनके कई गोल्फ मित्र उच्च सरकारी अधिकारी थे और जब भी रोटरी द्वारा समाज की भलाई करने का उद्देश्य उन्हें सही तरीके से समझाया जाता तो तुरंत ''हमारे लिए दरवाजे खोल देते थे।'' एक अत्यंत भद्र पुरुष, उनका सेंस ऑफ ह्यूमर गजब का था। उनकी हंसी दिलकश थी और उनकी मिलनसारिता और उदार आतिथ्य, जब भी वो अपने होटल या घर पर आपको भोजन पर आमंत्रित करते, लाजवाब था। उनके होटल में शेफ जिस तरह आपकी आवभगत करते, आपके आगे पीछे घूमते, लगता आप वहां की रानी हैं !

मेरी सहयोगी जयश्री जानती है कि उनकी याददाश्त कितनी जबरदस्त थी और उसकी कितनी बारीकी से निगरानी की जाती थी। WinS के योद्धा, जल संरक्षण और संवर्धन के प्रति उनका जूनून रोटरी में जग प्रसिद्द था, और इसलिए जब ये कार्यक्रम आरम्भ किया गया था, तो उन्हें WinS का पहला वैश्विक अध्यक्ष चुना गया था। कर्नाटक के एक ग्रामीण स्कूल में रोटरी विन्स परियोजना को कवर करने के बाद, जहां एक चमकती आंखों वाली छात्रा को गांव के हर घर में शौचालय बनाने के लिए, उसे चैंपियन घोषित किया गया था, रोटेरियन जब वहां से विदा ले रहे थे, गुप्ता ने उनसे स्कूल को एक लैपटॉप देने का अनुरोध किया था।

वादा किया गया और इस बारे में *रोटरी न्यूज़* में छपा था। उन्होंने इसे पढ़ा, अपने ज़ेहन में रखा और जयश्री और क्लब के अधिकारियों को अक्सर फोन किया करते थे कि वादे के अनुसार स्कूल में लैपटॉप पहुंचा या नहीं। उनके फ़ोन तब तक आने बंद नहीं हुए जब तक कि लैपटॉप पहुँच नहीं गया!

गुप्ता ने अपनी रोटरी सेवा में ऐसी निष्ठां और हर कार्य में बारीकी का परिचय दिया। कोई भी प्रोजेक्ट उन के लिए बहुत छोटा नहीं था, वो हमेशा लीक से हटकर सोचते थे, बड़े सपने देखते थे और बड़ा ही हासिल करते थे। इससे भी महत्वपूर्ण, उनका मानना था कि अगर कोई वादा किया जाए, भले वो किसी गांव में केवल एक महत्वहीन अनजान स्कूल की छात्रा से ही हो, निश्चित रूप से वादे का सम्मान किया जाना चाहिए। यह आपको आदमी के व्यक्तित्व के बारे में बहुत कुछ कहता है।

सुशील जी, सम्पूर्ण रोटरी विश्व को आपकी कमी खलेगी। आप सत्य में सौ फ़ीसदी रोटेरियन थे जिन्होंने रोटरी के मूल सिद्धांतों को न सिर्फ आत्मसात किया वरन उसकी तुलना में बहुत अधिक किया है।

रशीदा भगत

Governors Council

RID 2981 S Balaji
RID 2982 K Sundharalingam
RID 3000 R Jeyakkan
RID 3011 Anup Mittal
RID 3012 Ashok Aggarwal
RID 3020 Rama Rao M
RID 3030 Ramesh Vishwanath Meher
RID 3040 Col Mahendra Mishra
RID 3053 Sanjay Malviya
RID 3054 Ashok K Mangal
RID 3060 Santosh Pradhan
RID 3070 Dr Upinder Singh Ghai
RID 3080 Ajay Madan
RID 3090 Parveen Jindal
RID 3100 Rajiv Singhal
RID 3110 Mukesh Singhal
RID 3120 Samar Raj Garg
RID 3131 Pankaj Arun Shah
RID 3132 Dr Omprakash B Motipawale
RID 3141 Rajendra Agarwal
RID 3142 Dr Mayuresh Warke
RID 3150 K Prabhakar
RID 3160 Thirupathi Naidu V
RID 3170 Gaurishkumar Manohar Dhond
RID 3181 A R Ravindra Bhat
RID 3182 Ramachandra Murthy M G
RID 3190 Fazal Mahmood
RID 3201 Rajasekhar Srinivasan
RID 3203 Shanmugasundaram K
RID 3204 Dr Rajesh Subash
RID 3211 Srinivasan K
RID 3212 Jacintha Dharma
RID 3231 Nirmal Raghavan W M
RID 3232 Sridhar J
RID 3240 Dr Mohan Shyam Konwar
RID 3250 Pratim Banerjee
RID 3261 Sunil Phatak
RID 3262 Santanu Kumar Pani
RID 3291 Prabir Chatterjee

Printed by PT Prabhakar at Rasi Graphics Pvt Ltd, 40, Peters Road, Royapettah, Chennai - 600 014, India, and published by PT Prabhakar on behalf of Rotary News Trust from Dugar Towers, 3rd Flr, 34, Marshalls Road, Egmore, Chennai 600 008. Editor: Rasheeda Bhagat.

The views expressed by contributors are not necessarily those of the Editor or Trustees of Rotary News Trust (RNT) or Rotary International (RI). No liability can be accepted for any loss arising from editorial or advertisement content. Contributions — original content — is welcome but the Editor reserves the right to edit for clarity or length. Content can be reproduced with permission and attributed to RNT.

जादुई मंडल सम्मेलन का समय

यह वर्ष का वह समय होता है, जब सूर्य को फिर से जन्म लेने के लिए कहा जाता है और आकाश में एक नई यात्रा शुरू होती है। यह अपने साथियों के प्रति खुशी और दया का समय है। क्रिसमस नजदीक है और पूरी दुनिया में लोग अपने प्रियजनों पर उपहारों की बौछार करते हैं। यह प्यार, स्नेह और मिलन का समय है।

यह वह समय भी है, जब हम पिछले जनवरी में किए गए नए साल के संकल्पों के बारे में सोचते हैं, और आश्चर्य करते हैं कि क्या हमने जिन अच्छी आदतों को अपनाने का फैसला किया और जिन बुरी आदतों को छोड़ने का वादा किया था, उन्हें याद रखा या पूरी तरह से भूल गए।

दिसंबर, रोटरी वर्ष की पहली छमाही के अंत का भी प्रतीक है; 6 महीने बीत गए, 6 और बाकी हैं। यह समय रोटेरियन और रोटरी क्लब के रूप में हमारे अपने प्रदर्शन का मूल्यांकन करने का है। क्या हमने अपने रोटरी फाउंडेशन को पर्याप्त दिया है? क्या हम रोटरी में पर्याप्त नए सदस्य लाए हैं? क्या हमने जीवन बदलने वाली सेवायें करने के लिए पर्याप्त किया है?

चूंकि लॉकडाउन प्रतिबंध धीरे-धीरे हटा दिए गए हैं, रोटरी क्लब भी धीरे-धीरे नियमित रूप से शारीरिक बैठकों में वापस आ रहे हैं। जहां हमने पिछले 18 महीनों में वर्चुअल प्लेटफॉर्म का उपयोग करने की पूरी कोशिश की, वहीं पिछले साल की सदस्यता में गिरावट, एक-दूसरे से व्यक्तिगत रूप से मिलने के महत्व पर प्रकाश डालती है।

मंडल गवर्नर अब अपने-अपने मंडल सम्मेलनों की तैयारी करेंगे, जो उनके कार्यकाल का चरम बिंदु है। हर जगह रोटेरियन महान फेलोशिप, विचारों के आदान-प्रदान और जिला सम्मेलन में भाग लेने से आने वाली दुनिया के संपर्क में आने की आशा करते हैं। बहुत सारी योजनाएँ, आयोजन और समस्या-निवारण चल रहा होगा, क्योंकि सम्मेलन टीम आपके लिए अधिकतम पंजीकरण, सर्वश्रेष्ठ वक्ताओं और सर्वोत्तम मनोरंजन की तैयारी में व्यस्त होगी।

मैं सभी नए रोटेरियनों से आग्रह करता हूं कि वे अपने सभी मंडल सम्मेलनों को छूटने न दें। यह वह जगह है, जहां आप क्लब स्तर से परे रोटरी के जादू का अनुभव कर सकते हैं। रोटरी नेतृत्व के विचारों को आपके साथ साझा करने के लिए रो ई अध्यक्ष के प्रतिनिधि वहां मौजूद रहेंगे।

मैं आप में से प्रत्येक से मिलने और हाथ मिलाने के लिए आपके मंडल सम्मेलनों में उपस्थित होना पसंद करूंगा।

मैं आप सभी को शुभकामनाएं देता हूँ! एक शानदार क्रिसमस मनाइए, और आइए 1 जनवरी, 2022 को नए साल का स्वागत करने की तैयारी करें!

महेश कोटबागी
रो ई निदेशक, 2021-23

का संदेश

पृथ्वी ही हमारा एकमात्र घर है

रोटरी हमारी साझा विरासत - पर्यावरण की रक्षा करने में रुचि रखती है। हाल ही में जोड़े गए फोकस के क्षेत्र ने दुनिया भर के कई रोटेरियन और विशेष रूप से युवा पीढ़ी के उत्साह को जगाया है। हमारे क्षेत्र के क्लब सक्रिय रूप से वनीकरण, जल निकायों की सुरक्षा और इसी तरह की अन्य गतिविधियों में लगे हुए हैं। जीवाश्म ईंधन के विवेकपूर्ण उपयोग और गैर-बायोडिग्रेडेबल प्लास्टिक के उपयोग को कम करने के लिए व्यापक और बड़े पैमाने पर बढ़ावा देना होगा।

हमें इस तथ्य के प्रति सचेत रहने की आवश्यकता है कि हम अन्य प्रजातियों के साथ सह-अस्तित्व में हैं और वनस्पतियों और जीवों की विभिन्न प्रजातियों के बीच इस नाजुक संतुलन को बनाए रखना एजेंडा में सबसे ऊपर होना चाहिए। हालांकि यह युवा पीढ़ी को अधिक रूचि दे सकता है, क्योंकि वे अपनी हिस्सेदारी को अधिक मानते हैं, सभी को यह महसूस करना चाहिए कि इस ग्रह को संरक्षित करने में सभी हितधारक हैं।

इस अभियान में रोटेरियन्स को सबसे आगे रहना होगा। हमें न केवल बात करनी चाहिए बल्कि अपने बात पर चलना भी चाहिए। हम में से प्रत्येक के द्वारा बहुत कुछ किया जा सकता है - हमारे दैनिक व्यक्तिगत जीवन में और व्यावसायिक गतिविधियों में भी। वैश्विक अनुदानों की उपलब्धता के साथ-साथ कई कॉरपोरेट्स ने इस अभियान का समर्थन करने में रुचि दिखाई है, यह शुभ संकेत है। हालाँकि, हमें तत्परता से कार्य करने की आवश्यकता है। मैं क्लबों और रोटेरियन से पर्यावरण की रक्षा के लिए सोचने, योजना बनाने और परियोजनाओं को लागू करने का आग्रह करता हूं। हमारे क्षेत्रों में संसाधन व्यक्तियों के रूप में कई विशेषज्ञ उपलब्ध हैं। यह ग्रह हमारा घर है और इसे व्यवस्थित रखना तथा इसे भावी पीढ़ी के लिए संरक्षित करना हमारा काम है।

हमारी पेशेवर गतिविधियों में, हम में से कई लोगों के पास अगर पहली योजना विफल हो जाती है तो 'प्लान-बी' होता है। लेकिन हमें याद रखना चाहिए कि इस मामले में, हमारे पास 'ग्रह-बी' की विलासिता नहीं है। हम असफल होने का जोखिम नहीं उठा सकते हैं और अब हमें बस इस पर कार्य करना ही होगा!

ए एस वेंकटेश
रो ई निदेशक, 2021-23

Board of Trustees

Shekhar Mehta — RID 3291
RI President

Dr Mahesh Kotbagi — RID 3131
RI Director & Chairman, Rotary News Trust

A S Venkatesh — RID 3232
RI Director

Gulam A Vahanvaty — RID 3141
TRF Trustee

Rajendra K Saboo — RID 3080
Kalyan Banerjee — RID 3060
Panduranga Setty — RID 3190
Ashok Mahajan — RID 3141
P T Prabhakar — RID 3232
Dr Manoj D Desai — RID 3060
C Basker — RID 3000
Dr Bharat Pandya — RID 3141
Kamal Sanghvi — RID 3250

Executive Committee Members (2021–22)

Gaurish Dhond — RID 3170
Chairman Governors Council

Anup Mittal — RID 3011
Secretary Governors Council

Ramesh Meher — RID 3030
Secretary Executive Committee

V Thirupathi Naidu — RID 3160
Treasurer Executive Committee

Jacintha Dharma — RID 3212
Member Advisory Committee

Editor
Rasheeda Bhagat

Deputy Editor
Jaishree Padmanabhan

Rotary News Trust
3rd Floor, Dugar Towers,
34 Marshalls Road, Egmore
Chennai 600 008, India.
Phone: 044 42145666
rotarynews@rosaonline.org
www.rotarynewsonline.org

Now share articles from
rotarynewsonline.org
on WhatsApp.

एक साथ मिलकर, हम अपने लक्ष्यों को हासिल कर सकते है

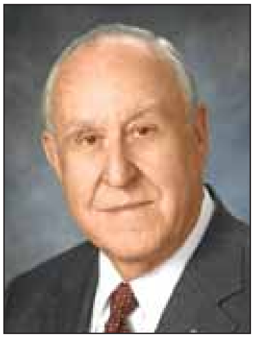

दिसंबर छुट्टियाँ बिताने और परिवार से दोबारा मिलने (अगर कोविड-19 अनुमति दें तो) का एक विशेष समय है। यह रोटरी वर्ष के बीच का समय भी होता है जब हम अपने लक्ष्यों की ओर पीछे मुड़कर देखते है और उसके अनुसार अपने कार्यों का आँकलन करते है।

इस साल, अपने लक्ष्य प्राप्ति के मार्ग पर डटे रहने के लिए, हमें पोलियोप्लस हेतु 50 मिलियन डॉलर जुटाने की आवश्यकता है ताकि बिल एंड मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन द्वारा 2 के लिए 1 मिलान के माध्यम से कुल मिलाकर 150 मिलियन डॉलर एकत्रित किए जा सकें। अपने रोटरी संस्थान कार्यक्रमों को मजबूती प्रदान करने के लिए, हमने वार्षिक कोष को 125 मिलियन डॉलर से बढ़ाने का लक्ष्य निर्धारित किया है। हमारा लक्ष्य एकमुश्त उपहारों और नई प्रतिबद्धताओं के रूप में अक्षय निधि के लिए 95 मिलियन डॉलर और अन्य एकमुश्त उपहारों के लिए 40 मिलियन डॉलर एकत्रित करने का है।

तो हम अपने कुल 410 मिलियन डॉलर के लक्ष्य तक कैसे पहुँच सकते है? हमें यह याद रखना चाहिए कि रोटरी सहित सभी महान प्रयासों में, एक साथ एक TEAM के रूप में कार्य करके हम बहुत कुछ हासिल कर सकते है।

महान लोगों (PEOPLE) के बिना आप एक महान टीम नहीं बना सकते। P हमारे संगठन, हमारी उपलब्धियों और हमारी क्षमता पर गर्व (प्राइड) का प्रतीक है। E दूसरों के लिए हमारी सहानुभूति (एम्पथी) का प्रतीक है। O के दो भाग है: रोटरी ने हमें जो अवसर (आपर्टूनटीज़) प्रदान किए है उससे बड़े बदलाव लाना और दूसरों को ऊपर उठाने एवं अपने पद को बढ़ाने का दायित्व (ऑबलीगेशन)। हमारा दूसरा P दृढ़ता (पर्सवीरन्स) का प्रतीक है। L नेतृत्व (लीडरशिप) का और E उत्साह (एन्थूज़ीऐज़्म) का प्रतीक है - जो रोटरी का ईंधन है।

आप रोटरी संस्थान अनुदान का समर्थन करके गर्भवती माताओं और उनके बच्चों को जीवित रहने और फलने-फूलने में मदद क्यों नहीं करेंगे? और आप हमारे प्यारे घर, पर्यावरण, को संरक्षित करने हेतु कोई कार्यक्रम शुरू क्यों नहीं करेंगे? इस महामारी ने केवल मेरी इस धारणा को नवीनीकृत किया है कि जीवन अनमोल है, इसलिए हमें दूसरों के जीवन में सुधार लाने हेतु प्रत्येक अवसर का फायदा उठाना चाहिए।

आप हमारी TEAM के उन PEOPLE में से एक है। यह दान करने का मौसम है और प्रत्येक दान मायने रखता है। कृपया 31 दिसंबर तक कितनी भी राशि का योगदान करें जो आपको उचित लगती हो और आपका दान 2022 में एवं आने वाले वर्षों तक काम आता रहेगा।

जूडी और मैं आपको इन छुट्टियों की शुभकामनाएं देते है।

जॉन एफ जर्म

ट्रस्टी अध्यक्ष, द रोटरी फौउंडेशन

बूंद बूंद से सागर बनता हैं

एक सदी से भी अधिक समय से एक सेवा संगठन के रूप में रोटरी का विकास और पहचान रोटरी संस्थान से करीब से जुड़ा हुआ है। दुनिया में अच्छा करने का फल अवश्य मिलता है; TRF रोटेरियनों एवं अन्य लोगों से प्राप्त योगदान को जीवन परिवर्तक सेवा परियोजनाओं के लिए उपयोग में लाता है।

पॉल हैरिस ने कहा, ''हमारे लिए रोटरी के जो भी मायने हो, दुनिया इसे इसकी उपलब्धियों से जानेगी।'' निःसंदेह संस्थान का एकमात्र कार्यक्रम जिसने दुनिया का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया वह पोलियो उन्मूलन अभियान था।

1979 में, रोटरी ने फिलीपींस में 6 मिलियन बच्चों के टीकाकरण के लिए एक परियोजना शुरू की। इस सफलता के कारण 1985 में पोलियो प्लस को वैश्विक स्तर पर शुरू किया गया। विभिन्न क्षेत्रों में TRF के काम के बारे में अनेक कहानियां है लेकिन नीचे दिए गए एक कार्य ने मिसाल कायम की है। उत्तरी श्रीलंका में विद्रोह के दौरान 4 दिनों के युद्धविराम की घोषणा की गई ताकि रो ई बच्चों का मौखिक पोलियो टीकाकरण कर सके।

मैं TRF के लिए योगदान लाने वाले रोटरी के उन सभी दिग्गजों से आग्रह करता हूँ कि वे ऐसी कहानियां साझा करें क्योंकि हर कोई परिवर्तन लाने वाली कहानियों से प्रभावित होता है।

पानी की छोटी-छोटी बूंदें, धूल के छोटे-छोटे कण मिलकर ही एक विशाल महासागर और सुखद भूमि का निर्माण करते है। इसलिए योगदान भले ही कितना भी छोटा हो, वह एक शक्तिशाली युग का निर्माण करने में अहम भूमिका निभाता है।

मुझसे अक्सर पूछा जाता है कि कैसे एक मामूली व्यक्तिगत योगदान TRF के कोई भी काम आ सकता है। मैं बताना चाहता हूँ कि महज ₹42 के एक छोटे से योगदान से एक बच्चे को पोलियो से बचाया जा सकता है। ₹3500 का योगदान पानी से होने वाली बीमारियों को रोकने के लिए स्वच्छ जल उपलब्ध कराने में मदद कर सकता है।

रोटेरियन आर्थर शेल्डन, जो 1908 में शिकागो के रोटरी क्लब से जुड़े और जिन्होंने रोटरी का आदर्श वाक्य दिया, ने 1922 में कहा था: लेने से पहले देना पड़ता है ठीक वैसे ही जैसे फसल काटने से पहले बीज बोना पड़ता है।

साथियों, हमारे संस्थान में देने को अपना कर्तव्य नहीं बल्कि अपना सौभाग्य समझिए।

गुलाम ए वाहनवती

ट्रस्टी, द रोटरी फौउंडेशन

Advertise in Rotary News

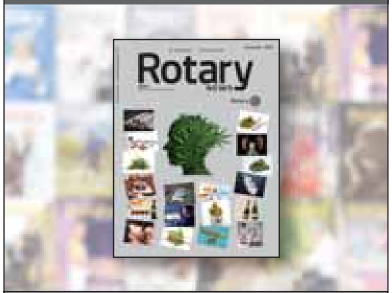

Tariff	
Back cover	₹1,00,000
Inner Front Cover	₹60,000
Inner Back Cover	₹60,000
Inside Full Page	₹30,000
Half Page	₹20,000
Specifications	
17 x 25 cm	Full page
17 x 12 cm	Half page

Advertisements in colour only

Phone: 044 42145666
e-mail: rotarynews@rosaonline.org

Rotarians!

Visiting Chennai for business?

Looking for a compact meeting hall?

Use our air-conditioned Board Room with a seating capacity of 16 persons at the office of the Rotary News Trust.

Tariff:

₹2,500 for 2 hours
₹5,000 for 4 hours
₹1,000 for every additional hour

Phone: 044 42145666
e-mail: rotarynews@rosaonline.org

District Wise TRF Contributions as on October 2021

(in US Dollars)

District Number	Annual Fund	PolioPlus Fund	Endowment Fund	Other Funds	Total Contributions
India					
2981	51,542	1,112	0	151,814	204,468
2982	27,046	5,633	0	2,449	35,128
3000	3,630	11	0	1,500	5,140
3011	6,322	3,572	0	81,879	91,774
3012	19,993	3,811	25,041	228,613	277,458
3020	31,924	5,828	19,596	4,620	61,968
3030	13,187	267	18,027	0	31,481
3040	18,924	250	0	20,328	39,502
3053	3,052	211	27	0	3,290
3054	2,902	766	0	166,680	170,348
3060	32,014	176	0	64,607	96,797
3070	8,395	0	0	27,600	35,995
3080	7,033	4,086	0	1,404	12,523
3090	13,498	0	28,000	0	41,498
3100	16,170	0	0	2,137	18,307
3110	5,120	0	0	0	5,120
3120	21,030	1,000	0	0	22,030
3131	167,336	26,206	0	187,001	380,543
3132	18,860	1,139	5,000	3,507	28,506
3141	224,282	1,876	64,865	181,499	472,521
3142	132,508	1,554	8,145	24	142,231
3150	12,721	6,087	0	18,120	36,928
3160	4,449	2,387	17,264	0	24,100
3170	26,454	8,504	1,710	29,297	65,964
3181	5,411	1,999	0	0	7,410
3182	8,762	5,225	0	0	13,986
3190	81,600	6,437	30,411	0	118,448
3201	37,266	51,967	0	203,255	292,488
3203	14,149	13,706	6,086	145,938	179,878
3204	1,091	412	0	1,036	2,539
3211	13,655	280	0	13,200	27,135
3212	9,268	1,099	1,036	588	11,991
3231	7,278	5,203	0	2,851	15,332
3232	32,932	47,321	16,601	208,433	305,287
3240	18,615	9,686	0	34,070	62,371
3250	4,098	2,335	1,036	12,746	20,215
3261	3,645	304	0	28,489	32,438
3262	1,670	277	0	250	2,197
3291	45,042	1,651	11,171	10,166	68,029
India Total	**1,152,875**	**222,375**	**254,014**	**1,834,100**	**3,463,364**
3220 Sri Lanka	34,232	6,383	1,510	1,000	43,125
3271 Pakistan	308	316	0	5,240	5,865
3272 Pakistan	12,595	10,623	0	0	23,217
3281 Bangladesh	12,173	4,121	13,000	16,399	45,693
3282 Bangladesh	9,881	1,182	1,000	500	12,563
3292 Nepal	29,440	4,898	0	62,704	97,041
South Asia Total	**1,251,504**	**249,897**	**269,524**	**1,919,943**	**3,690,869**

Annual Fund (AF) includes SHARE, Areas of Focus, World Fund and Disaster Response.
Source: RI South Asia Office.

सुशील गुप्ता, एक रोटरी योद्धा, हमारे दिलों में हमेशा ज़िंदा रहेंगे

कल्याण बेनर्जी

यदि कभी मुझे *रीडर्स डाइजेस्ट* पत्रिका में उस व्यक्ति के बारे में लिखने का मौका मिला, जिनसे अपनी मुलाक़ात मैं कभी नहीं भूलूंगा, तो मैं जिनके बारे मे लिखूंगा वो शख्स यकीनन रोटेरियन सुशील गुप्ता ही होंगे। अविस्मरणीय, क्योंकि सुशील बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे और जैसे जैसे आप उनके व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं से परिचित होते जाते आपके दिल में उनके लिए प्यार, श्रद्धा और सम्मान और बढ़ता जाता।

सुशील से मेरी पहली मुलाकात 1980 के दशक के मध्य में हुई थी जब वे तत्कालीन रो ई मंडल 301 दिल्ली के मंडल अध्यक्ष थे। मैं उनसे दिल्ली में संसद भवन में पूर्व रो ई निदेशक सुदर्शन अग्रवाल के कार्यालय में मिला था और सुशील ने अपनी निश्छल हंसी, अपने विचारों और

सुशील ने अपनी निश्छल हंसी, अपने विचारों और ज़िंदादिली से मुझ पर एक अलग ही शख्सियत के रूप में अपनी छाप छोड़ी थी।

ज़िंदादिली से मुझ पर एक अलग ही शख़्सियत के रूप में अपनी छाप छोड़ी थी। और दोस्तों के रूप में बिताए इन चालीस वर्षों में मेरे मन में उनके लिए इज़्ज़त और भी बढ़ी है ।

वास्तव में सुशील के व्यक्तित्व के कई हिस्से थे, और उन्होंने सभी हिस्सों को बड़े सलीके से संजो कर रखा था। उदाहरण के लिए, एक आध्यात्मिक व्यक्ति होने के अलावा, सुशील के गुरु मनीला के एक प्राणिक उपचारक थे, जिनसे वे बहुत प्रभावित थे।

उनका इसमें अटूट विश्वास था और फिर हथेलियों को घुमाते हुए कई प्रकार के मंत्रों को कंठस्थ कर निरंतर अभ्यास, उनका जाप करते हुए स्वयं ही प्राणिक उपचार की कला सीखी थी। अगर किसी की पीठ में या सिर में दर्द होता, तो सुशील तुरंत अपनी प्राणिक पद्धति से उपचार शुरू कर देते फिर पूछते, कैसा महसूस हो रहा है? अब अच्छा लग रहा है? और, अक्सर लगता था मानो बीमारी ख़त्म हो गई ।

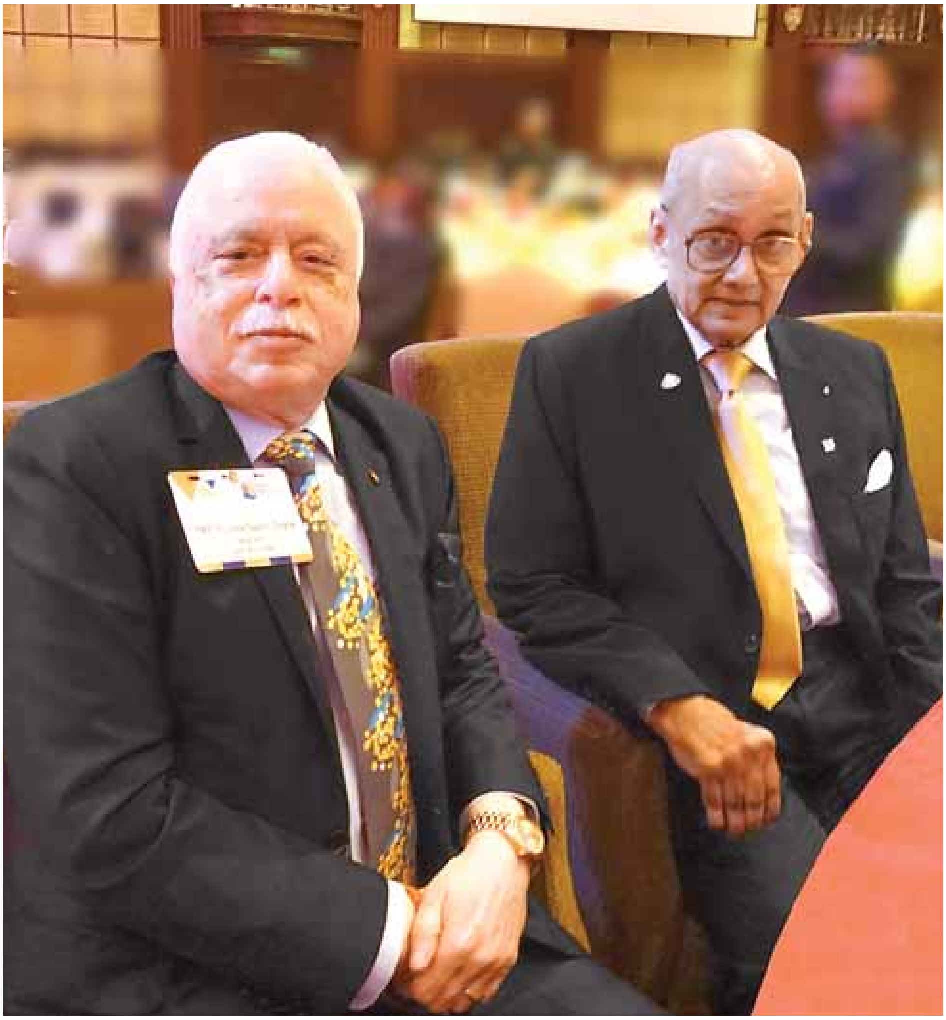

PRID सुशील गुप्ता और PRIP कल्याण बेनर्जी।

सुशील एक जिज्ञासु और नियमित गोल्फर भी थे और दिल्ली गोल्फ क्लब का प्रत्येक व्यक्ति उनको जानता था चाहे वो बड़ा आदमी हो या फिर साधारण व्यक्ति, छोटे बड़े सभी परिचित थे।

यात्रा उनका पसंदीदा शौक था और वो हिमालय के दुर्गम मार्गों पर ट्रैकिंग करना पसंद करते थे। मुझे याद है एक बार वो मानसरोवर और तिब्बत की यात्रा पर गए थे, चीन के परमिट के साथ, जिसमें उनकी बेटी गुंजन और मेरी बेटी रुमा के साथ वे सब तिब्बत की सीमा पर टेंट में रहे थे।

सुशील दोस्त बनाने की कला में यकीकन माहिर थे और दिल्ली, कोलकाता और मुंबई में हयात रीजेंसी होटल चलाने की वजह से उनके संपर्क कई गुना बढ़ गए थे। जिस बात पर मुझे हमेशा आश्चर्य होता था वो यह कि वह एक ऐसी व्यापारिक शख़्सियत थे जो किसी भी सरकारी संपर्कों और सिफारिशों से फायदा नहीं उठाते थे, हमेशा कानून का पालन करते थे फिर भी दिल्ली की पूरी नौकरशाही उनका बहुत सम्मान करती थी। हाल के वर्षों में, उन्होंने दिल्ली में अपना 500 कमरों वाला जेडब्ल्यू मैरियट होटल बनाया था, जो एक शीर्ष श्रेणी, छह-सितारा होटल है, सुशील ने इसे तैयार करने में, प्रबंधन की समस्याओं को हल करने के लिए आग, सुरक्षा, सुविधाओं को स्थापित करने या गुणवत्तापूर्ण भोजन, फर्नीचर या सुरक्षा प्रणालियों के आयात के लिए विभिन्न सरकारी विभागों से परमिट लाने के लिए स्वयं कड़ी मेहनत की थी। और वह गर्व से मुझसे कहते, ''कल्याण, मैंने कभी किसी भी चीज़ पर ज़रुरत से ज़्यादा खर्च नहीं किया है, सिर्फ उतना ही किया जो कानूनी रूप से ज़रूरी था।''

और सुशील ने अपने साथी और अपने बेटे संदीप की मदद से अपने सभी होटलों को जिस प्यार और देखभाल के साथ चलाया, वो केवल एक निर्माता और जनक ही दे सकता है, और इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं थी कि वह हमेशा प्रधानमंत्रियों और राजाओं के पसंदीदा मेजबान रहे, या इन्हें सरकार की ओर से पदम श्री पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

वास्तव में सुशील के व्यक्तित्व के कई हिस्से थे, और उन्होंने सभी हिस्सों को बड़े सलीके से संजो कर रखा था।

रोटरी संगठन से उन्हें हमेशा प्यार था और ऐसे रोटेरियन मैंने ज़्यादा नहीं देखे हैं जो अपने उद्देश्यों के प्रति पूर्ण प्रतिबद्धता के साथ जुट जाते थे।

रोटरी में जल प्रबंधन की शुरुआत उन्होंने ही की थी, भारत के असंख्य सूखे और बाढ़ को बैराज और चेक डैम बना कर नियंत्रित किया और जहां पानी उपलब्ध नहीं था या जहां वर्षा जल का संग्रहण किया था वहां जिससे भूजल स्तर ऊपर आया। वह राजस्थान के सबसे शुष्क क्षेत्रों में जाते और जल संसाधनों के प्रबंधन और संवर्धन के लिए दिशा-निर्देश देते और धन जुटाने में मदद करते।

प्रदूषण नियंत्रित करना हो या जनता के लिए नए शौचालयों का निर्माण या इस क्षेत्र के दिग्गज सुनीता नारायण या राजेंद्र सिंह या डॉ बिंदेश्वर प्रसाद जैसे बड़े नामों के साथ काम करना या कच्छ में आये विनाशकारी भूकंप के बाद स्कूलों और गृह निर्माण में मदद करना, चक्रवात और सुनामी के आने के बाद राहत कार्य शुरू करने के लिए ओडिशा या चेन्नई के तटों पर पहुँच जाना - उन्हें ये सब बहुत पसंद था। मैं उनकी शख़्सियत के अलग अलग पहलुओं पर अक्सर ताज्जुब करता हूं - एक उत्कृष्ट होटल व्यवसायी, समर्पित सामाजिक कार्यकर्ता, महान गोल्फर, अथक पर्वतारोही, समर्पित रोटेरियन, और अपने परिवार से बेहद प्यार करने वाला व्यक्ति और सबसे बढ़कर, एक अविस्मरणीय मित्र।

निदेशक और टीआरएफ ट्रस्टी दोनों पदों पर रोटरी में सेवाएं दे चुके सुशील से, 2015-16 में उनके मित्रों और रोटरियनों ने आग्रह किया कि वे रोटरी में केवल स्थानीय स्तर ही नहीं बल्कि वैश्विक स्तर पर भी अपनी सेवाएं दें। उस समय, दिल्ली हवाई अड्डे के पास उनका नया होटल जेडब्ल्यू मैरियट बन रहा था और सुशील के पास समय भी था। उन्होंने अपनी पत्नी विनीता को अपने रोटरी के रोमांचक कार्यों को जारी रखने के लिए राजी किया और रोटेरियनों और मित्रों की जबरदस्त भीड़ ने उन्हें नामांकन भरने के लिए राजी कर लिया और कमाल देखिये कि इस शीर्ष पद के लिए किये गए अपने पहले प्रयास में, वे वर्ष 2020-21 के लिए सर्वसम्मति से रो ई अध्यक्ष के लिए नामांकन समिति की पसंद बन कर उभरे थे, हमारे संगठन का नेतृत्व करने के लिए चयनित चतुर्थ भारतीय।

3 महीने की वैधानिक प्रतीक्षा के बाद फिर शुरू हुआ उल्लास और जोश से भरपूर सुशील ने विनीता के साथ क्लबों का भ्रमण और मंडलों में लोगों से मिलना जुलना शुरू कर दिया, पूर्व रो ई अध्यक्ष राजा साबू के साथ मिल कर अपने कार्यकाल की थीम पर काम शुरू कर दिया और अपने कार्यकाल की तैयारी भी शुरू कर दी।

अपनी व्यस्त यात्राओं के दौरान, सुशील ने महसूस किया कि कभी-कभी उन्हें बोलने में

2012 में दिल्ली में पोलियो शिखर सम्मेलन में PRID गुप्ता, PRIP बेनर्जी और PRID जैक्सन से।

कठिनाई होती थी, विशेष रूप से भाषण के अंत में थोड़ा असंयत हो जाते और अक्सर हकलाते थे, कभी-कभी थक भी जाते थे। उन्होंने रोटरी में अपने चिकित्सा क्षेत्र के मित्र और मंडल 3011 से आगामी गवर्नर डॉ सुब्रमण्यम सहित अपने डॉक्टरों से परामर्श करना शुरू कर दिया । ऐसा लग रहा था कि उनके भीतर किसी प्रकार का तंत्रिका विकार विकसित हो रहा था और डॉक्टरों ने फैसला किया कि अधिक विस्तृत और उच्च कोटि की पेशेवर जांच की आवश्यकता है। सुशील और विनीता विस्तृत नैदानिक जांच के लिए अमेरिका के ह्यूस्टन गए और जिसके बाद सुशील को एक अति दुर्लभ तंत्रिका संबंधी रोग का होने का पता चला। इस बीमारी का कोई ज्ञात इलाज नहीं है, हालांकि लगभग 15 प्रतिशत मामलों में इसके कारण वंशानुगत हो सकते हैं, लेकिन हाँ दवा और उपचार इसकी प्रगति को धीमा कर सकते हैं।

भारत लौटने के तुरंत बाद, सुशील ने अत्यंत वेदना के साथ घोषणा की कि वह रोटरी के लिए अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन करने में असमर्थ होंगे, इसलिए वे रोटरी अध्यक्ष, मनोनीत के पद से इस्तीफा दे रहे थे।

सुशील पहले तो घर पर ही रहे और शुरूआती दौर में तो चल फिर भी सकते थे । फिर वह व्हीलचेयर में इधर-उधर घूमते थे और अंत में बिस्तर तक सिमट गए।

वह अपनी बीमारी और उसके परिणाम के बारे में पूर्ण रूप से अवगत थे और उन्होंने इसे स्वीकार कर इससे लड़ने में जबरदस्त हिम्मत दिखाई। उनका संज्ञानात्मक कार्य, उनकी स्मृति और बात चीत करने की इच्छा अंत तक बरकरार रही। उन्होंने आई-पैड से लिख कर और और अंततः आंखों के इशारों से और पैर हिला कर संवाद जारी रखा जबकि उन्होंने और परिवार ने इस बीमारी से अत्यंत साहसपूर्वक लड़ाई लड़ी। परिवार के सभी सदस्यों और उनके परिचारकों ने अनुकरणीय चिकित्सा देखभाल की और उन्हें भावनात्मक सम्बल दिया। विनीता चौबीस घंटे उनके साथ रहती थी और कभी कभार आगंतुक भी मिलने आ जाते थे। लेकिन धीरे-धीरे, लोगों का आना भी कम होता गया।

सुशील सदैव एक योद्धा रहे थे और विनीता उनकी फ्लोरेंस नाइटिंगेल। ये लड़ाई उन्होंने बहादुरी से लड़ी और कभी हार नहीं मानी।

तो ऐसे शख्स के बारे में कोई क्या कहेगा ? और उसकी नियति?

द्वितीय विश्व युद्ध समाप्त होने के बाद, प्रशांत क्षेत्र में यूएस कमांडर इन चीफ रहे, जनरल डगलस मैकआर्थर ने कहा था: 'पूर्व योद्धा कभी नहीं मरते। वे सिर्फ ओझल हो जाते हैं, क्षितिज में दूर चले जाते हैं

लेकिन रोटरी के योद्धा सुशील कभी विलुप्त नहीं होंगे। क्योंकि जिन लोगों को वो अपने पीछे छोड़ गए हैं उनकी स्मृतियों में, उनके दिलों में वो हमेशा ज़िंदा रहेंगे।

सुशील गुप्ता, मेरे दोस्त, ईश्वर आपकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

लेखक पूर्व रो ई अध्यक्ष है

चित्र: रशीदा भगत
और सुशील गुप्तो के अभिलेखागार से।

एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा

सुशील गुप्ता... कुछ मीठी यादें

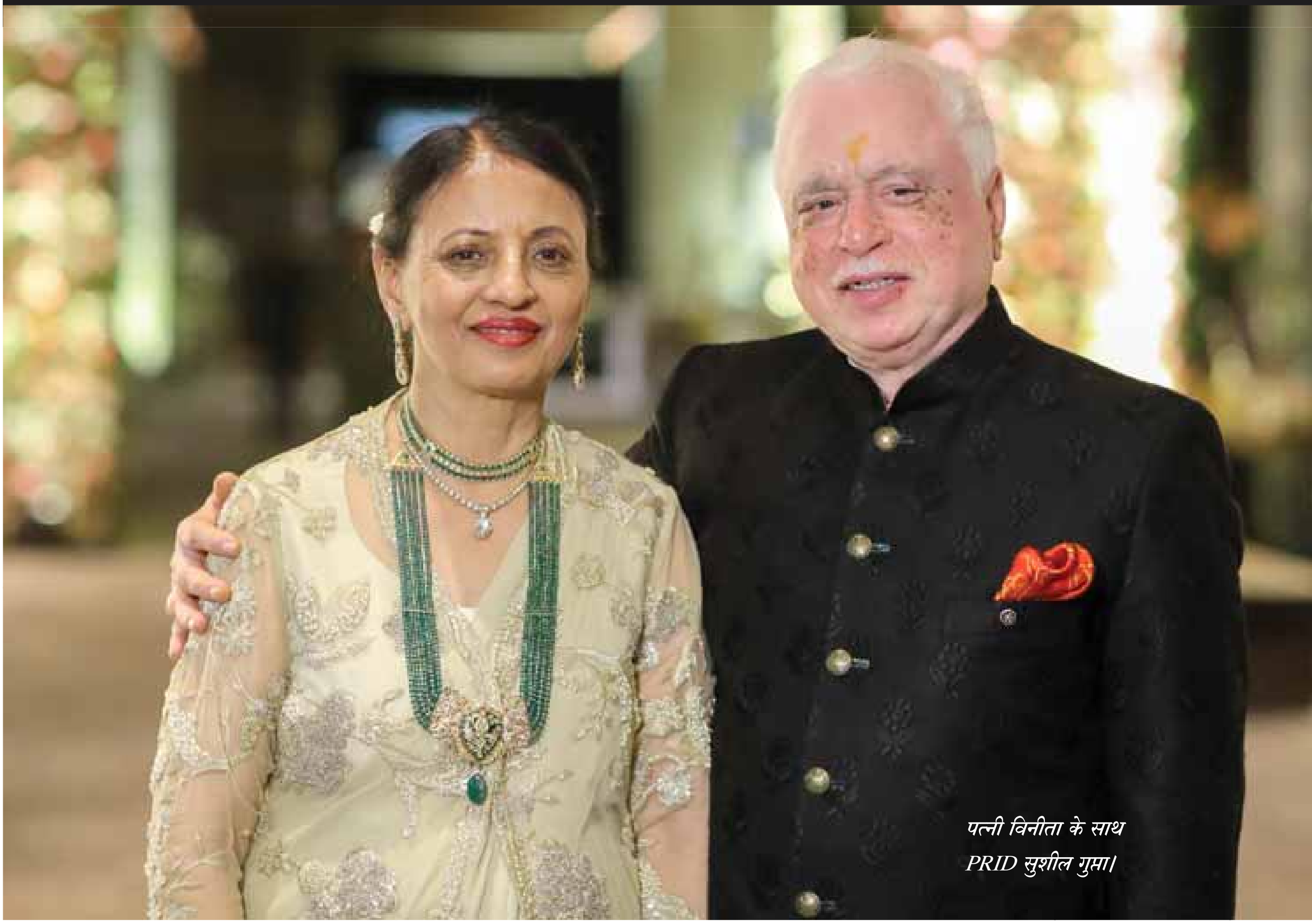

पत्नी विनीता के साथ
PRID सुशील गुप्ता।

PRID भरत पांड्या के साथ।

PRID गुप्ता और विनीता,
PRIP गैरी हुआंग और
कोरिन्ना के साथ।

PRIP कल्याण बेनर्जी के साथ।

PRIP के आर रवींद्रन और वानती के साथ।

PRID गुप्ता और PRIP राजेंद्र साबू 2015 इंटरनेशनल असेंबली में कठपुतली का अभिवादन करते हुए।

PRID पी टी प्रभाकर के साथ।

2019 इंटरनेशनल असेंबली में सोनल संघवी के साथ PRID गुप्ता।

दक्षिणावर्तः PRID गुप्ता, PRIP बेनर्जी और PDG अशोक गुप्ता राजस्थान में एक चेक डैम का उद्घाटन करते हुए। • दाएं सेः PRIP साबू, PRIP बेनर्जी, टीआरएफ ट्रस्टी गुलाम वाहनवती, PRID मनोज देसाई और PRID सी भास्कर ने रो ई अध्यक्ष नामित के रूप में उनकी नियुक्ति पर दिल्ली में PRID गुप्ता और विनीता को सम्मानित किया। • बाएं सेः INPPC के अध्यक्ष दीपक कपूर, PRIP बेनर्जी, पाकिस्तान पोलियोप्लस समिति के अध्यक्ष अज़ीज़ मेमन, PRID गुप्ता और PRIP साबू। • PRID गुप्ता, PRID पांड्या, PRID सी भास्कर, TRF ट्रस्टी वाहनती और PRID कमल सांघवी। • बाएं सेः दुबई जोन इंस्टीट्यूट में PRID देसाई, PRIP जॉन जर्म, रो ई अध्यक्ष शेखर मेहता, PRIDगण गुप्ता और दास।

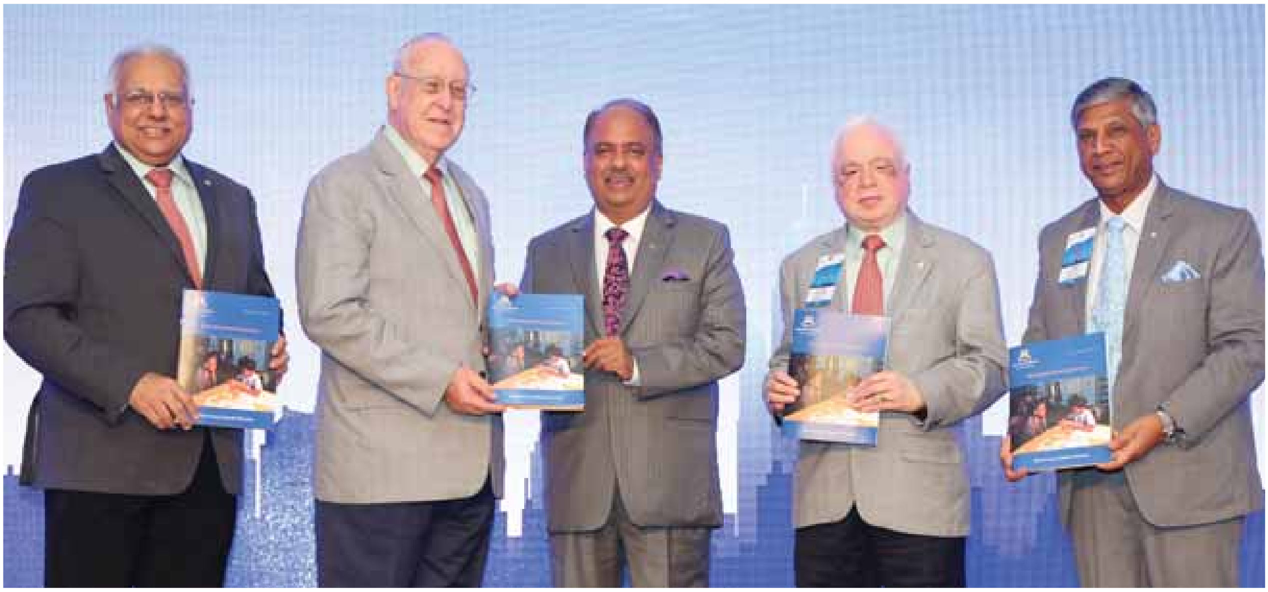

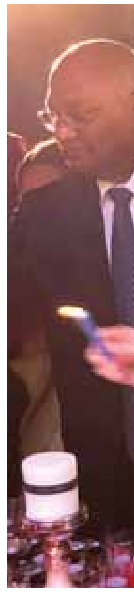

ऊपरः PRIDs गुप्ता, वाई पी दास, अशोक महाजन और PRIP कल्याण बेनर्जी और बिनोता दिल्ली की तत्कालीन CM शीला दीक्षित के साथ चर्चा में।

चित्र: रशीदा भगत और विशेष व्यवस्था द्वारा।

एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा

भारत के मिल्क मैन का स्मरण: वर्गीज़ कुरियन

रशीदा भगत

आज जब हम 26 नवंबर, 1921 को जन्मे भारत के प्रसिद्ध मिल्कमैन वर्गीज़ कुरियन का जन्म शताब्दी समारोह मना रहे हैं तो मेरा मन दो सुखद और लंबे साक्षात्कारों की ओर चला जाता है, जो 1998 और 1999 में गुजरात के आणंद में अमूल मुख्यालय में मैंने उनके कार्यालय में लिए थे। तब मैं *द हिंदू बिजनेसलाइन* में काम करती थी। मैं उनकी विलक्षण बुद्धि और हास्य विनोद, उनके जुनून और जोश और भारत के निर्विवाद मिल्कमैन के रूप में उनकी ताक़त देख कर मैं चकित रह गई थी, जिन्होंने पहले पारसी पोल्सन को आड़े हाथों लिया फिर नेस्ले जैसी बहुराष्ट्रीय कंपनियों को टक्कर दी।

लेकिन वह शख्स जो राजनेताओं और नौकरशाहों के प्रति बेहद कठोर हो सकता था - उनको आईएएस अधिकारी वर्ग से चिढ थी, और उन्होंने किसी आईएएस अधिकारी को एनडीडीबी (राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड) का अध्यक्ष बनने से रोकने के लिए लंबे समय तक जी जान से लड़ाई लड़ी थी - हाँ, वे किसानों के लिए सहज सुलभ, मित्रवत और बेहद विनम्र थे।

मेरा साक्षात्कार 1998 में अमूल में उनके उत्तराधिकारी के लिए भारत सरकार के साथ लंबे समय से चली आ रही उनकी लड़ाई जीतने के ठीक बाद में लिया गया था... पर इसके बारे में चर्चा बाद में। बातचीत के दौरान अपने कमरे में किसानों के एक बड़े समूह को आने की अनुमति देते हुए उन्होंने विनम्रतापूर्वक मुझसे कहा, ''मुझे आशा है आप बुरा नहीं मानेंगे; ये लोग बहुत दूर से मेरा अभिवादन करने आए हैं और उन्हें आज ही वापस अपने गांव लौटेंगे।'' एक दुग्ध सहकारी समिति के इन किसानों के लिए वह भगवान से कम नहीं थे; उनके चरण स्पर्श करने के बाद, उन्हें एक रंगीन टोपी पहनाई, उन्हें एक नक्काशीदार तलवार भेंट की और मेरी झोली में आ गिरा फोटो खींचने का सुनहरा अवसर।

पूरी श्रद्धा मिश्रित प्रशंसा के साथ, मैं उन्हें लगभग 10 मिनट तक उनके साथ हंसी मजाक करते हुए देखती रही, और उसके बाद जब वे साक्षात्कार की ओर लौटे तो सहजता से ठीक वहीं से शुरू कर दिया जहां वे छोड़ कर गए थे। और उस वक़्त वे 76 वर्ष के थे! उनकी छवि में मैंने उनके कोमल, उदार हृदय के साथ एक तेज तर्रार दिमाग भी जोड़ दिया। जो लोग उन्हें जानते थे या उनके साथ काम करते थे, वे तो निश्चित रूप से उनकी प्रखर बुद्धि और चुटीले व्यंग्य को याद करेंगे ही, लेकिन साथ ही उनकी उदारता और निष्कलंक सत्यनिष्ठा को भी याद करेंगे।

उन्हें अपने जीवन के किस्से सुनाना बहुत पसंद था और मेरी मुलाक़ात उनसे तब हुई थी जब उन्होंने ताज़ा ताज़ा अपनी नौकरी खोई थी! उन्होंने बताया कि किस प्रकार उन्हें TISCO (अब टाटा स्टील) में नौकरी मिली थी - जहाँ मैं कई वर्षों के बाद टाटा का सर्वश्रेष्ठ प्रशिक्षु घोषित किया गया था - लेकिन वहां मेरा दम घुटने लगा था ''जब उन्हें पता चला कि मेरे चाचा (जॉन मथाई) वहां के बड़े अफसर हैं। मैंने अपने अंकल से कहा कि मैं टिस्को छोडूंगा; अगर मैं क्लब जाता हूं तो सुंदर लड़कियां

रशीदा भगत

भारत के प्रसिद्ध मिल्कमैन वर्गीज़ कुरियन।

मुझे घेर लेती हैं । मेरा सुपरवाइज़र मुझसे अक्सर पूछता है कि क्या मैं रात के खाने पर उनके साथ चल सकता हूँ!''

इसलिए भारत सरकार की छात्रवृत्ति पर पिट्सबर्ग में डेयरी इंजीनियरिंग का अध्ययन करने के लिए उन्होंने नौकरी छोड़ दी। क्या छात्रवृत्ति आसानी से मिल गई थी, मैंने उससे पूछा। उनके जवाब से अनायास ही मेरी हंसी फूट पडी!

''अरे हां; चयन समिति के अध्यक्ष भारत के मुख्य न्यायाधीश थे, और उन्होंने मुझसे पूछा, 'पाश्चुरीकरण क्या है?' मैंने कहा 'दूध के साथ कुछ करना।' उन्होंने कहा: 'ठीक है, आप चुन लिए गए हैं।' ये इसलिए संभव हुआ क्योंकि कोई अन्य इंजीनियर ये भी नहीं जानता था कि पाश्चुरीकरण क्या है और उस समय भारत में कोई पास्चराइजेशन प्लांट नहीं था। मैंने कहा: 'कृपया, क्या आप मुझे धातु विज्ञान जैसा कुछ नहीं दे सकते?' लेकिन उन्होंने कहा, ' सिर्फ यही या कुछ नहीं।'

लेकिन कुरियन ने ''अपना बदला ले लिया, और धातु विज्ञान और परमाणु भौतिकी में मास्टर्स करके भारत सरकार को छला। उस समय तक, विश्व में एक भूमिगत विस्फोट हो चुका था और मैं परमाणु इंजीनियर बनना चाहता था।''

लेकिन भाग्य ने उनके लिए अन्य योजनाएँ बुन रखी थीं सौभाग्य से उप सचिव, ''डॉ अब्दुल कलाम को मेरी हरी टोपी और पीली पतलून पसंद नहीं आई और मुझे ₹350 के वेतन पर प्रथम श्रेणी के राजपत्रित अधिकारी के रूप में बॉम्बे के पास आनंद नामक शहर में पटक दिया, गायों की देखभाल के लिए!'' उन्होंने विरोध किया कि TISCO में उन्हें दोगुना वेतन मिलता था लेकिन उनकी एक नहीं सुनी गई उनका ये विरोध विफल रहा; उनके हाथ अनुबंध के तहत बंधे हुए थे।

यहाँ कुछ तथ्य प्रस्तुत हैं - कुरियन के चातुर्य और फब्तियों से हट कर। अमेरिका में पढ़े-लिखे इस इंजीनियर ने गांधीवादी त्रिभुवनदास पटेल को एक स्थापित बहुराष्ट्रीय कंपनी के खिलाफ अपनी पुरानी डेयरी चलाने के लिए संघर्ष करते हुए देखा। इस चुनौती के सामने वो अपनेआप को रोक नहीं पाए, कुरियन ने उस डेयरी को चलाने में पटेल की मदद की, धीरे-धीरे प्रसंस्कृत दूध सहकारी समितियों का सृजन किया और कम दूध उत्पादन करने वाले किसानों को सशक्त बनाया।

अमूल मॉडल से प्रभावित होकर प्रधान मंत्री लाल बहादुर शास्त्री ने इसे सम्पूर्ण भारत में इसे दोहराने का उनसे अनुरोध किया। पीएम के साथ युवा कुरियन ने अपनी शर्तें तय कीं - डेयरी बोर्ड का प्रस्तावित मुख्यालय आणंद में होगा, दिल्ली की

उन्हें सबसे ज्यादा इस बात का डर था कि बाबू लोग बस एनडीडीबी पर नियंत्रण पाने के लिए ताक लगाए बैठे थे, जो साफ़ तौर पर नोटों के ढेर पर बैठी थी। पैसा तब उनके द्वारा दिया गया ये आंकड़ा ₹300 करोड़ रुपये था।

भैंस को हवाई जहाज से थाईलैंड भेजना

कुरियन में कहानी सुनाने की जबरदस्त कला थी। और कहानियों के उत्तेजक पहलू भी बिना किसी हाव भाव और अभिव्यक्ति के सपाट चेहरे से कहानी सुनाते थे। जब मैं उनसे मिली, तब एनडीडीबी द्वारा थाईलैंड के राजा के शासनकाल के 50 साल पूर्ण होने के उपलक्ष्य में 50 भैंसें उपहार में देने की काफी चर्चा चल रही थी। स्वाभाविक रूप से समाचार पत्र ऐसी अटकलों से भरे हुए थे कि उन्हें थाईलैंड कैसे ले जाया जाएगा। क्या कुरियन की उत्तराधिकारी अमृता पटेल, वास्तव में भरवाड़ (चरवाहा) की रंगीन वेशभूषा में भैंसों के साथ जाएंगी, जैसा कि लिखा जा रहा था, तो मैंने भी उनसे पूछ ही लिया। अमृता ने साफ़ मुकर गई और बोली : हां, डॉ कुरियन ने कहा था कि वह मुझे पहनने के लिए बहुत सारे चांदी के आभूषण देंगे जो मैं अपने पास रख सकती थी। सो मैं राजी हो गई ।

परिवहन के साधन पर, उसने पहले तो उन्हें जहाज से भेजने करने का फैसला किया था, लेकिन जहाज उपलब्ध नहीं हुआ। इसलिए जब उसने एयर इंडिया के एमडी को एक फ्लाइट चार्टर करने के लिए बुलाया और उन्होंने कहा: हे भगवान, आप हवाई जहाज से भैंसों को ले जाएंगे! इसकी बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ेगी। लेकिन चूँकि कुरियन ने प्रतिबद्धता जताई थी, कोई दूसरा विकल्प नहीं था।

सपाट चेहरे के साथ कुरियन ने जोड़ा: मेरे विचार से आपको तो ज्ञात होगा कि वे केवल प्रथम श्रेणी में यात्रा करती हैं? एयर इंडिया विमान में उनकी गंध को लेकर चिंतित है, लेकिन वे नहीं जानते कि न तो हम उन्हें ज्यादा खिलाएंगे और न ही पीने के लिए कुछ देंगे और उन्हें शांत रखेंगे । अन्यथा अगर उनमें से सिर्फ दो भी लड़ने लगीं तो वे विमान को नष्ट कर सकती हैं।

जब मैंने लागत पर टिप्पणी की, तो वो बोले: मुझे यकीन है कि आप बोर्ड की कमाई से भली भांति परिचित हैं। ₹50 करोड़ छुपाने के बाद इसकी कमाई ₹117 करोड़ रुपये है और मैं कोई टैक्स नहीं देता। यह बोर्ड के एक्ट के तहत है। और हाँ, ये अलग बात है कि एक्ट मैंने ही बनाया है।

कुरियन के उद्धरण

थाईलैंड के राजा से मुलाकात: जब राजा ने कहा कि वह मुझसे मिलना चाहता है, तो थाईलैंड में भारतीय राजदूत ने पूछा , यहां आने वाले हमारे कई मंत्री राजा से मिलने का समय मांगते हैं और मैं कभी भी सफल नहीं हुआ। फिर आप में ऐसा क्या खास है? तो मैंने कहा: गायें! और क्या ?

श्रीलंका के साथ एनडीडीबी के संयुक्त उपक्रम पर एक बहुराष्ट्रीय कंपनी प्रमुख की आलोचना: मैंने उनसे कहा कि मैं किसी बहुराष्ट्रीय कंपनी के प्रमुख से मिलने के लिए दिल्ली नहीं जाता; मैं अपना काम करने जाता हूं। तो वह यहां आया और बोला, हमारा क्या होगा? मैंने कहा कि इससे मुझे कोई मतलब नहीं है। समय आ गया है कि अब श्वेत लोग यह समझ लें कि सभी भारतीय बिकाऊ नहीं हैं। कुछ ऐसे भी होंगे जिन्हें खरीदा नहीं जा सकता और वे भारत के व्यावसायिक हितों की रक्षा करेंगे।

दुग्ध उत्पादन में वृद्धि के लिए पाकिस्तान की मदद: वे आत्मनिर्भर बनना चाहते थे। मैंने कहा, आपने उदारीकरण किया है, भूमंडलीकरण किया है और अपनी सभी गायों को खा डाला । आपके पास दिमाग नहीं है क्या। मैं एक ईसाई हूं और गाय के प्रति मेरे मन में भी कोई भावना नहीं है, लेकिन मैं अच्छी गायों को हजम करने के पक्ष में नहीं हूं।

एनडीडीबी अध्यक्ष बनने के लिए अमृता पटेल की सर्वोत्तम योग्यता: मैडम, सबसे अच्छी योग्यता है, डॉ. कुरियन के सानिध्य में प्रशिक्षण।

किसान: किसान के पास सौदेबाजी करने की ताक़त नहीं होती है; उसे हर कीमत पर दूध बेचना पड़ता है। इसलिए सहकारी मॉडलउसके उत्पाद की खरीद, प्रसंस्करण और विपणन पर नियंत्रण ही इसका एकमात्र उपाय है। डेयरी उसी की होनी चाहिए। इसीलिए सरदार पटेल ने कहा: 'पोलसन को बाहर फेंको '

पाकिस्तान को दूध निर्यात: क्यों नहीं? अगर मैं दूध को दिल्ली से कलकत्ता भेज सकता हूं, तो क्या दिल्ली से लाहौर नहीं भेज सकता। सिर्फ एक गार्ड को रिश्वत देने की आवश्यकता है!

नौकरशाही के हस्तक्षेप से दूर। उनकी शर्तें मान ली गईं! शेष इतिहास है!

बाबुओं की अवमानना

कुरियन ने भारत सरकार के साथ एक लंबी और कठिन लड़ाई लड़ी थी यह सुनिश्चित करने के लिए कि एनडीडीबी में उनका उत्तराधिकारी कोई आईएएस अधिकारी नहीं होगा क्योंकि उन्हें सबसे ज्यादा इस बात का डर था कि बाबू लोग बस एनडीडीबी पर नियंत्रण पाने के लिए ताक लगाए बैठे थे, जो साफ़ तौर पर नोटों के ढेर पर बैठी थी। पैसा तब उनके द्वारा दिया गया ये आंकड़ा ₹300 करोड़ रुपये था। जब मैं उनसे मिली, तो उनकी शिष्या अमृता पटेल को उनका उत्तराधिकारी मनोनीत किया गया था, और वे बेहद खुश थे।

अन्यथा होता क्या, उन्होंने कहा, ''मान लीजिए, मैं आपसे बात कर रहा हूं और मेरी मृत्यु हो जाती है, सचिव (विभाग के) मंत्री के पास जाएंगे और कहेंगे: 'मेरे पास बुरी खबर है, कुरियन मर चुका है। मैंने एक टेलीग्राम का मसौदा तैयार किया है, लेकिन इस बीच, अतिरिक्त प्रभार मैं संभाल लूंगा।' वह इसके पटाक्षेप का आरम्भ होगा; आईएएस का धावा।''

प्रत्युत्तर में बाबुओं ने उनकी तारीफ ऐसे लौटाई, उउनकी निर्भीकता से वो लोग ईर्ष्या करते थे और उन्होने उनके खिलाफ अजीबोगरीब कहानियां गढ़ीं कि किस तरह कुरियन ने भारत सरकार को फिरौती की नोंक पर रखा था। एक पूर्व वाणिज्य सचिव ने तो मुझे ये किस्सा सुनाया कि

भारत में दूध की खरीद और विपणन के तरीके में क्रांति का प्रादुर्भाव, इस अमूल्य वस्तु का उत्पादन करने वालों को उनका जायज हक दिलाना और सभी बाधाओं को सफलतापूर्वक पार करना हमेशा कुरियन की विरासत रहेगी।

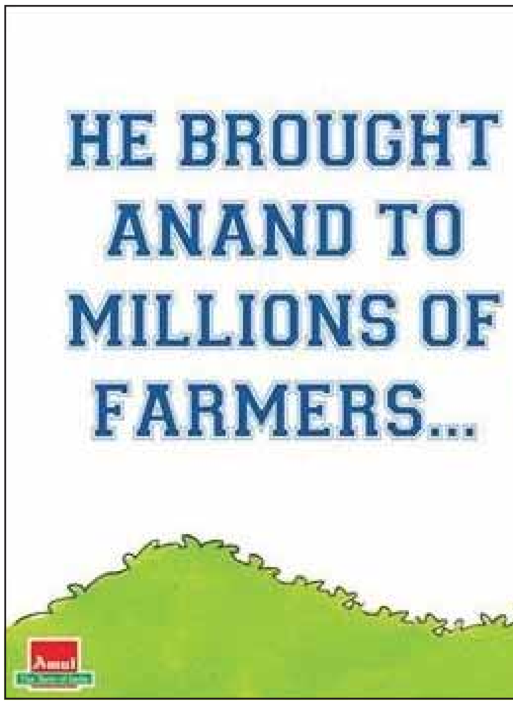

कैसे नेपाल के राजा बीरेंद्र ने भारत सरकार से कुछ टन घी के लिए अनुरोध किया था। ''भले ही यह सरकार-से-सरकार का अनुरोध था, फिर भी यह खेप भेजने के लिए भारत के घी सम्राट की अनुमति लेने के लिए दिल्ली के नौकरशाहों को जमीन आसमान एक करना पड़ा था'', उन्होंने कहा!

कुरियन का विचार यह था कि उन्होंने बड़ी सरगर्मी से बाबुओं द्वारा सहकारी आंदोलन और दुग्ध निकाय हड़प लिए जाने से रक्षा की थी, जो कि सही मायने में भारतीय डेयरी किसानों की संपत्ति है। इस बिरादरी से वो इतने चिढ़ते थे कि उन्होंने एनडीडीबी से केरल दुग्ध संघ को धन भेजने तक से इनकार कर दिया था ''क्योंकि यह एक आईएएस अधिकारी के नेतृत्व में संचालित था।''

अमृता पटेल के उत्तराधिकारी बनने के बाद दिसंबर के पहले सप्ताह में मैंने उनका साक्षात्कार लिया था; वह 33 वर्षों तक एनडीडीबी के अध्यक्ष रहे। उन्होंने खुशी-खुशी मेरा स्वागत किया और बोले : ''अब मेरे पास समय ही समय है; आप देखिए अभी-अभी मेरी नौकरी छिन गई है।'' अगली सांस में, उन्होंने कहा: ''हर बार मैं जब भी मैं अपना मुंह खोलता हूं, तो मुसीबत में पड़ जाता हूं, लेकिन यह ठीक है!''

मेरा पहला सवाल उस लड़ाई पर था जो उन्होंने हाल ही में जीती थी; कुरियन ने जवाब दिया, ''यदि भारत सरकार ने, अपने विवेक से मेरे उत्तराधिकारी के लिए एक आईएएस अधिकारी को चुना होता, तो क्या आपको लगता है कि वो अमूल परिसर में कदम रख पाता? पटेलों बिरादरी बोलती कि हमारे पास एक पटेल (पूर्व वित्त मंत्री एच एम पटेल की बेटी अमृता) है और हमें पटेल राज चाहिए। अमूल के चेयरमैन मेरे पास आए थे और बोले थे: 'कौन है साला वो आईएएस ऑफिसर? हम उसको देख लेंगे!' मैंने उनसे कहा था कि इस सब की ज़रुरत नहीं है, ये तो आख़री उपाय होगा।''

वह अमृता की प्रबंधन कौशल, क्षमता और ईमानदारी की मुक्त कंठ से प्रशंसा की जो अत्यंत महत्वपूर्ण थी; ''आप देख ही रही हैं कि हमारे पास बहुत पैसा है, और पैसा चोरों को आकर्षित करता है'', उन्होंने कहा।

मैंने बाद में उसका भी साक्षात्कार लिया था, वो अपने मेंटर के बारे में अत्यंत सम्मान से बात कर रही थी, लेकिन अमृता ने एक बात स्पष्ट रूप से कही कि प्रबंधन का उनका तरीका कुरियन से भिन्न था।

डॉ अब्दुल कलाम को मेरी हरी टोपी और पीली पतलून पसंद नहीं आई और मुझे 350 के वेतन पर प्रथम श्रेणी के राजपत्रित अधिकारी के रूप में बॉम्बे के पास आनंद नामक शहर में पटक दिया, गायों की देखभाल के लिए!

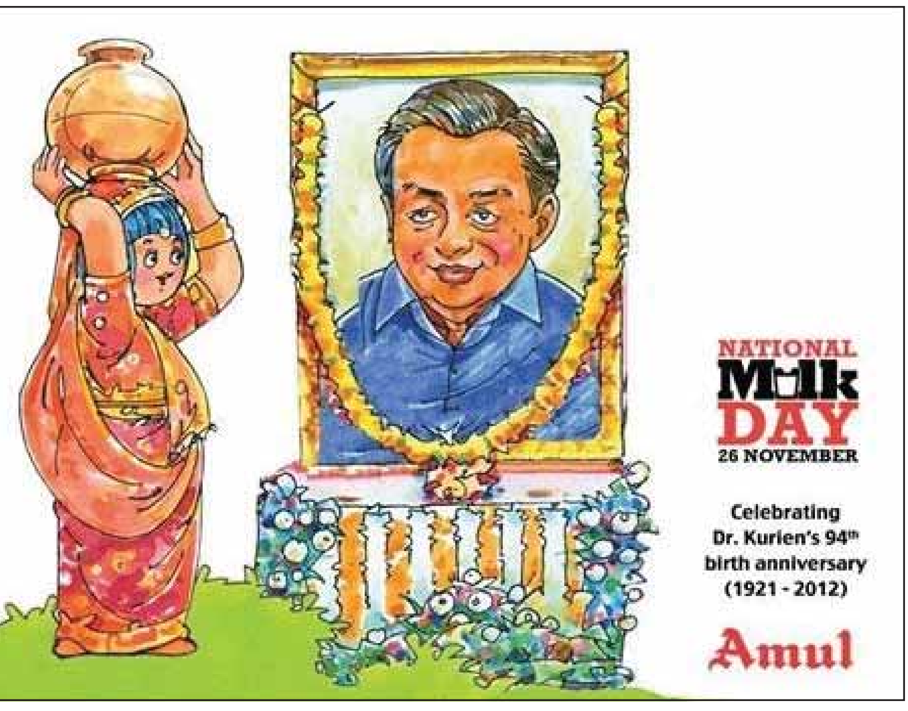

दुर्भाग्यवश कुरियन के बाद के कार्यकाल पर काली छाया पड़ गई थी, हम सभी जानते हैं कि जो लोग किसी संस्था का निर्माण या स्थापना करते हैं वो निर्धारित समय से अधिक ठहर जाते हैं जैसा कि कि कुरियन ने अमूल और एनडीडीबी के साथ किया। जब 2006 में उन्हें अविश्वास प्रस्ताव के आधार पर गुजरात सहकारी दुग्ध विपणन संघ के अध्यक्ष पद को छोड़ने के लिए कहा गया तो उनकी हृदय विदारक टिप्पणी की थी: ''क्या मैं इस तरह के व्यवहार के लायक हूँ।''

लेकिन उन्होंने भारतीय किसान के साथ जो किया वो एक ऐसी चीज है जो उनसे कोई नहीं छीन सकता। अपने सबसे निकृष्ट समय में और जब उन पर हमले हो रहे थे, उन्होंने कहा कि उन्हें ''हमेशा भारतीय किसान से शक्ति और समर्थन मिला था। भारतीय किसान के साथ और उसके लिए काम करना मेरा सौभाग्य रहा है।''

भारत में दूध की खरीद और विपणन के तरीके में क्रांति का प्रादुर्भाव, इस अमूल्य वस्तु का उत्पादन करने वालों को उनका जायज हक दिलाना और सभी बाधाओं को सफलतापूर्वक पार करना हमेशा कुरियन की विरासत रहेगी।

क्या आप विश्वास कर सकते हैं कि 1970 में मुंबई में दूध एक दुर्लभ वस्तु हुआ करती थी? अगली बार जब आप किसी भारतीय सुपरमार्केट में कदम रखें और दूध और विभिन्न प्रकार के दूध उत्पादों पर नज़र डालें, तो स्वर्ग में बैठे इस शतवर्षीय व्यक्ति के लिए एक दिल से एक खुशनुमा 'हैलो' ज़रूर भेजें। वह निश्चित रूप से हाथ हिलायेगा! ■

दादा,
मेरे मतामह

सिद्धार्थ सेठ

मैं एक शरारती बच्चे के रूप में पला बड़ा हूँ। मैंने जितने भी स्कूलों में पढ़ाई की है, उन सभी स्कूलों के मास्टर-इन-चार्ज या प्रिंसिपल के कार्यालय में, मैं अक्सर नज़र आता था फिर चाहे वो पढ़ाई से बचने के लिए कक्षा से भागना हो या छत पर चढ़ना हो या मैं किताबों को खिड़की से बाहर फेंक देता था कि वे कितनी दूर तक उड़ेंगी; शरारतों की फेहरिस्त काफी लम्बी है। मेरी माँ तो नाराज हो जाती थी लेकिन नाना को इसमें बहुत मज़ा आता था।

एक ख़ास अवसर पर मेरे बचाव में जब मेरी माँ के साथ नाना स्कूल आये, तो प्रधानाध्यापक यह जानकर आश्चर्य में पड़ गए कि मैं भारत में दूध सहकारिता आंदोलन के सूत्रधार और उसका नेतृत्व करने वाले विशिष्ट व्यक्ति का दोहिता था जिसने दुनिया में भारत को दूध की मक्का के रूप में स्थापित किया था! नाना अक्सर प्यार से मुझे मलयालम में मैंडनिन नाम से पुकारते थे जिसका अर्थ है मूर्ख दोस्त। उनका दर्शन नितांत सरल था, किसी को भी बच्चे का दिल नहीं दुखाना चाहिए।

जब भी संभव होता मेरे नाना - नानी मुझसे और मेरी मां से मिलने चेन्नई आ जाते थे, और ऐसा अक्सर होता था, आमतौर पर सप्ताहांत में। उनका जाना पहचाना होटल था ताज कोरोमंडल; पूल में तैरने का आनंद उठाने के लिए नाना मुझे अपने दोस्तों को साथ लाने के लिए कहते थे, उसके बाद हम सब नाश्ता करते थे। मेरे दोस्तों को मेरे नाना - नानी के साथ हाई-टी पर गप्पें लड़ाना बहुत पसंद था। दादा पूल के किनारे बैठकर हमें बाज की सी दृष्टि से निहारते रहते, निर्देश देते, इस तरह से नहीं ऐसे पैर चलाओ, आदि, और मेरी नानी हंसती रहती, मुझे विश्वास था की वो मेरे ही गलत तरीके से हाथ पैर चलाने पर हंसती थी। बहुत बाद में उन्होंने बताया था कि नाना को तैरना नहीं आता था और उन्हें पानी में उतरना बिलकुल पसंद नहीं था।

मेरे दोस्त और मैं बहुत दिनों से साइकिल चला रहे थे क्योंकि 8 की उम्र में हमने ये कला नई नई सीखी थी। एक सुबह ट्रैफिक नहीं होने के कारण हम मुख्य सड़क पर निकल लिए और अपने घर के पास होटल पहुँच गए जहाँ नाना-नानी ठहरे हुए थे। दरबान ने मेरे नाना जी को फोन से सूचित किया; कुछ ही क्षणों में लगभग दौड़ते हुए नाना ने नीचे पोर्च में अपने ड्रेसिंग गाउन में आकर सब को आश्चर्य में डाल दिया, हमें लगभग घसीटते हुए सीढ़ियों से कमरे तक ले गए। हमारे साहसिक कार्य के बारे में किसी को पूर्वसूचित न करने के कारण नाना हमसे नाराज़ थे और भविष्य में हमें अपनी साइकिल घर के परिसर से बाहर कभी नहीं निकालने की हिदायत दी। एक बार जब वह शांत हो गए तो उन्होंने हमारे लिए शानदार नाश्ता मंगाया। हालांकि वह हमारे अभियान से प्रभावित ज़रूर थे लेकिन मेरी नानी को दिखाने के लिए अपना चेहरा कठोर बना रखा था।

वर्गीज़ कुरियन और पत्नी मौली के साथ नाती सिद्धार्थ शेठ और बेटी निर्मला कुरियन।

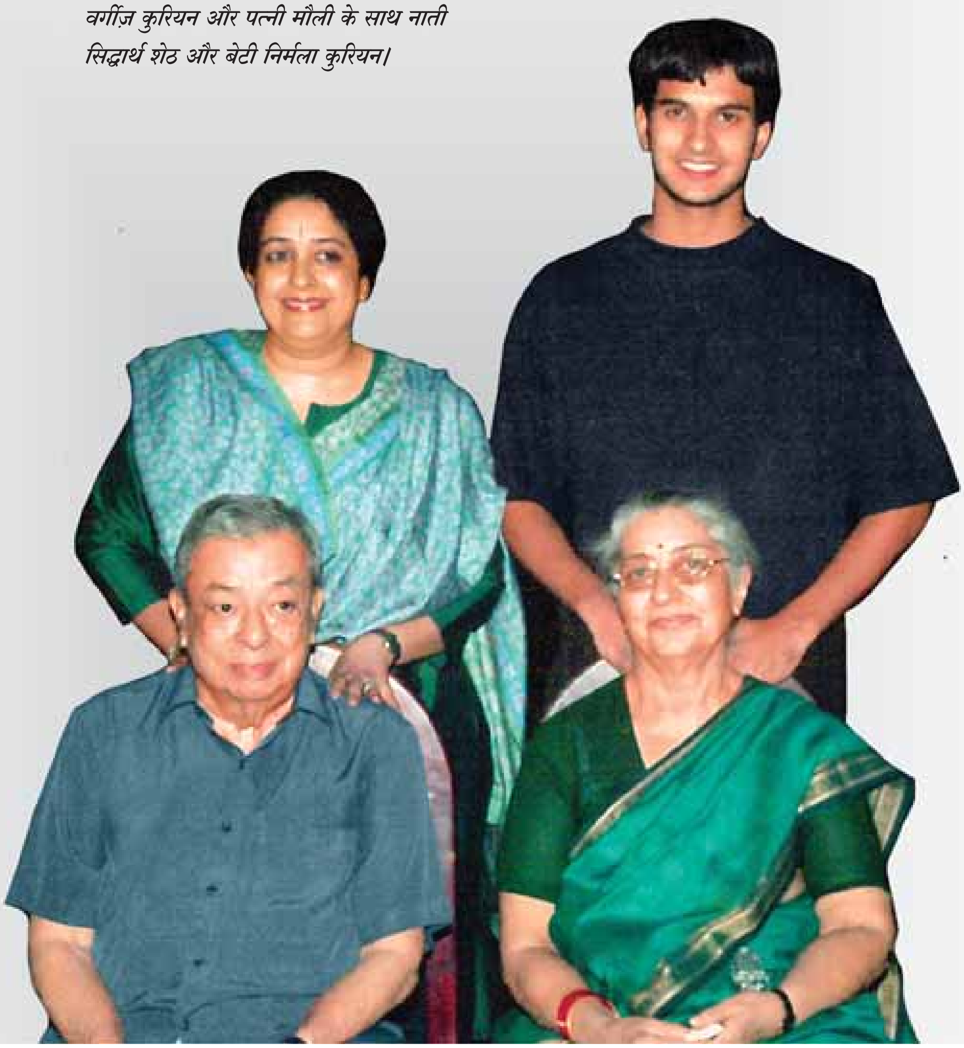

भारत के सर्वोत्कृष्ट मिल्कमैन

निर्मला कुरियन

अमेरिका में एमएससी करने के बाद वर्गीज कुरियन ने भारत को आजादी मिलने के तुरंत बाद अपना कार्य करना शुरू कर दिया। उन दिनों सबसे महान कार्य था अपने सपनों के भारत के निर्माण में योगदान... एक ऐसा राष्ट्र जहां लोग भूख और गरीबी से मुक्त होंगे। एक ऐसा राष्ट्र अंततः जिसकी गिनती अग्रणी राष्ट्रों में होगी। उन्होंने कभी भी देश के किसानों की सेवा करने के बारे में नहीं सोचा था, लेकिन कुछ घटनाक्रमों के चलते उन्हें गुजरात के आनंद में आना पड़ा। धातुकर्म (मैटलरजी) या परमाणु भौतिकी (न्यूक्लियर फिजिक्स) में अपना करियर बनाने के बजाय उन्होंने एक अनुभव विहीन सहकारी संस्था के लिए कार्य करना चुना।

'श्वेत क्रांति' के जनक और भारत में भारत के मिल्कमैन, कुरियन एक सामाजिक उद्यमी थे, जिनके एक अरब-लीटर के विचार, ऑपरेशन फ्लड ने डेयरी को भारत का सबसे बड़ा आत्मनिर्भर उद्योग बना दिया। भारत की कुल ग्रामीण आय में इस सबसे विशाल ग्रामीण रोजगार क्षेत्र का योगदान एक तिहाई है।

1964 में, प्रधान मंत्री लाल बहादुर शास्त्री ने आनंद का दौरा किया था, गाँव में एक रात बिताई और किसानों से उनकी सहकारिता के बारे में चर्चा की। दिल्ली लौटने पर उन्होंने कुरियन से राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड (NDDB) स्थापित करने का अनुरोध किया। कुरियन ने इसका बीड़ा उठाया और देश भर की डेयरी सहकारी समितियों में आनंद के मॉडल के इस प्रतिरुप को देश भर मे परिपालित किया, जहां आने वाले किसी भी किसान के दूध को लौटाया नहीं जाता था। वे किसानों को सशक्त बनाने में विश्वास रखते थे और बाजार उपलब्ध होने की स्थिति में उनके कड़ी मेहनत कर अधिक उत्पादन करने की क्षमता पर कभी संशय नहीं किया। छोटे, मंझोले सीमांत और भूमिहीन किसानों के लिए डेयरी न केवल पोषण का स्रोत है, बल्कि पूरक आय और सुरक्षा का भी स्रोत है। दूध उत्पादन में शामिल अधिकांश कार्य, चाहे वह पशुओं को चारा खिलाना हो, रोज़मर्रा प्रबंधन हो, स्वास्थ्य देखभाल आदि और नियंत्रण पारंपरिक रूप से महिलाओं द्वारा किया जाता था, जो वहां की कुल ग्रामीण जनसँख्या की करीब 50 प्रतिशत थी।

महिला सशक्तिकरण पर भी इसका गहरा प्रभाव पड़ा है। जहां सारी दुनिया कोविड के प्रभाव से जूझ रही थी और नौकरियाँ घट रही थी, वहीं दूध उत्पादन से जुडी विभिन्न गतिविधियों से होने वाली आय कई परिवारों के लिए अचानक महत्वपूर्ण हो गई थी और परिवार में महिलाओं द्वारा निभाई भूमिका से परिवार में उनका दर्जा बढ़ा है।

कुरियन की विरासत में भारत में दूध की ज़्यादा खपत होने की वजह से भारतीयों की औसत लम्बाई में वृद्धि हुई है, मात्र एक पीढ़ी में। हजारों डेयरी सहकारी समितियों और लाखों सदस्यों ने जमीनी स्तर के लोकतंत्र को अनुभव किया है और उन्होंने लाखों ग्रामीण भारतीयों को सशक्त किया है !

एक दिन दोपहर के भोजन के लिए मुझे बाहर जाना था और मेरी माँ बाहर गई हुई थी, तो मैंने नाना से कुछ रुपये मांगे और झट से उन्होंने अपने बटुए से 50 रुपये का नोट दे दिया। मैंने और रुपये मांगे क्योंकि मेरे साथ तीन दोस्त भी थे। उन्होंने अपने बटुए में बनी हुई गुप्त जेब से कड़कड़ाते 100 रुपये के तीन नोट निकाले और बड़ी अनिच्छा पूर्वक मुझे दे दिए। मैं कुछ घंटों बाद लौटा और सारे पैसे लौटा दिए तो उन्होंने पूछा कि खाना खाया या नहीं। मैंने प्रसन्न हो कर उनसे कहा कि मेरी तीन दोस्तों, सभी लड़कियों ने मुझे पार्टी दी थी । वह अचंभित रह गए बोले कि लड़कियों को भुगतान नहीं करने देना चाहिए और हमेशा भोजन का भुगतान मुझे ही करना चाहिए। मैंने उन्हें लैंगिक समानता के बारे में समझाने की भरसक कोशिश की लेकिन वो नहीं समझे , उन्होंने कहा कि मुझे महिलाओं का आदर करना चाहिए, उनके साथ प्यार से पेश आना चाहिए और सम्मानजनक व्यवहार करना चाहिए।

मुझे याद है कि महिला का अभिवादन करने के लिए उनके सम्मान में वह हमेशा खड़े हो जाते थे, भले वो मित्र हो या कोई नज़दीकी रिश्तेदार। वह एक अत्यंत शिष्ट, कुलीन और भद्र पुरुष थे और पुराने जमाने के तौर-तरीकों और तहज़ीब को अंत तक नहीं भूले!

मुझे याद है कि महिला का अभिवादन करने के लिए उनके सम्मान में वह हमेशा खड़े हो जाते थे, भले वो मित्र हो या कोई नज़दीकी रिश्तेदार। वह एक अत्यंत शिष्ट, कुलीन और भद्र पुरुष थे और पुराने जमाने के तौर-तरीकों और तहज़ीब को अंत तक नहीं भूले!

निर्मला वर्गीज़ कुरियन की बेटी हैं और सिद्धार्थ उनके नाती हैं

रोटरी की सामूहिक शक्ति राष्ट्र निर्माण में मदद कर सकती है

जयश्री

आपके पास राष्ट्रीय स्तर पर बड़े बदलाव लाने की सामूहिक शक्ति है। यदि रोटरी मंडल या क्लब एक साथ आ जाए, तो वे ऐसी प्रभावशाली परियोजनाएँ कर सकते है जिससे पूरे देश को लाभ होगा। हमें हर क्षेत्र में सरकार का 10 प्रतिशत काम करना चाहिए क्योंकि हमारी नेटवर्किंग क्षमता ही हमारी शक्ति है'', रो ई अध्यक्ष शेखर मेहता ने रोटरी क्लब होस्पेट, रो ई मंडल 3160, द्वारा आयोजित एक सम्मान समारोह में बोलते हुए कहा। ''अगर दुनिया भर में हम सभी पोलियो के लिए एकजुट नहीं होते, तो हम पोलियो उन्मूलन के अपने प्रयास में यहाँ तक नहीं पहुंच पाते। आज पोलियो उन्मूलन और रोटरी एक दूसरे के पर्याय बन गए है'', उन्होंने आगे कहा।

निदेशक महेश कोटबागी के साथ उन्होंने मेजबान क्लब, ऊऋ वी तिरुपति नायडू के गृह क्लब, की विभिन्न सेवा परियोजनाओं का दौरा किया।

जिस उत्साह के साथ क्लब के सदस्य समुदाय की सेवा कर रहे थे उसके लिए उनकी सराहना करते हुए मेहता ने कहा, ''मैं हमेशा कहता हूं कि आगे बढ़ो और अधिक करो। आप यह पहले ही साबित कर चुके है। आप संस्थान में योगदान, सदस्यता और सेवा परियोजनाओं के मामले में अधिक कर रहे है और आगे बढ़ रहे है।'' उन्होंने एक हीमोफीलिया वैन का उद्घाटन किया और क्लब द्वारा स्थापित किए जाने वाले रोटरी ब्लड बैंक की आधारशिला रखी। एक डायलिसिस केंद्र, एक स्कूल और एक व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्र क्लब की कुछ दीर्घकालिक परियोजनाएं है।

रो ई अध्यक्ष ने छह नए रोटरी क्लबों को अधिकरण प्रमाण पत्र प्रदान किए जिसमें 40 सदस्यों वाला एक अखिल महिला क्लब और एक नई पीढ़ी का क्लब शामिल है जिसके सदस्य रोटेरियनों के बच्चे है। DG नायडू के बेटे चैतन्य इसके चार्टर अध्यक्ष है। उन्होंने मेहता को TRF के लिए 10,000 डॉलर का अपना पहला योगदान दिया। इस कार्यक्रम में नायडू की बेटी सौम्या सहित दस रोटेरियनों में से प्रत्येक ने 10,000 डॉलर का योगदान दिया और वे मुख्य दानकर्ता बने और कई पॉल हैरिस फेलो भी बने जिसमें सबसे कम उम्र के नायडू के पोते थे। मेहता के EOBO (हर एक लाए एक) आह्वान की प्रतिक्रिया में मंडल ने अब तक सदस्यता में अच्छा प्रदर्शन किया है।

''यह मत सोचिए कि आपका क्लब छोटा है; आप एक महान संगठन का हिस्सा है। आपका योगदान मायने रखता है। याद रखें दुनिया भर में 35,000 अध्यक्ष रोटरी के माध्यम से असंभव कार्यों को संभव बना रहे है। अपने संगठन पर गर्व करें'', उन्होंने कहा।

रो ई अध्यक्ष शेखर मेहता ने रोटरेक्ट कमेटी के सह-अध्यक्ष रवि वडलामणि, रो ई निदेशक महेश कोटबागी, अमिता, डीजी वी थिरुपति नायडू और DPPC अश्विनी कोटांबरी की उपस्थिति में ब्लड बैंक की नींव रखी।

बाएं से: रोटरी क्लब होस्पेट के अध्यक्ष के एस राजेश, DLCC श्रीनिवास, DG नायडू, रो ई अध्यक्ष मेहता, रो ई निदेशक कोटबागी, अमिता और निर्मला नायडू प्रोजेक्ट विद्या सेतु के शुभारंभ पर।

बड़ी परियोजनाओं पर अपनी बात जारी रखते हुए, उन्होंने भारत सरकार के लिए RILM द्वारा विकसित ई-लर्निंग कार्यक्रम पर प्रकाश डाला। आज करोड़ों बच्चे पीएम के ई-विद्या चैनलों पर हमारे ऑनलाइन पाठ्यक्रम से सीख रहे है। हर दिन आधे घंटे तक पाठों का प्रसारण किया जाता है। हमने बच्चों के लिए सीखने की प्रणाली को बदलने में देश की मदद की है। इस तरह हम राष्ट्र निर्माण में एक भूमिका निभाते है। मैंने हमारे प्रधान मंत्री से वादा किया है कि 2025 तक हम भारत को पूरी तरह साक्षर बना देंगे। तब तक न तो मैं सोऊँगा और न ही आपको सोने दूँगा। मैं इन्हें परियोजनाओं और कार्यक्रमों के रूप में नहीं लेता; मैं इन्हें अपने देश के काम के रूप में देखता हूँ।''

मैंने हमारे प्रधान मंत्री से वादा किया है कि 2025 तक हम भारत को पूरी तरह साक्षर बना देंगे। तब तक न तो मैं सोऊँगा और न ही आपको सोने दूँगा।

शेखर मेहता
रो ई अध्यक्ष

उनकी कार्यसूची का अगला मुद्दा महिलाओं के पोषण पर ध्यान देना है। ''एक चर्चा के दौरान प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने रोटरी से महिलाओं के पोषण में मदद करने का अनुरोध किया। हम जल्द ही एक बड़ा और व्यापक कार्यक्रम शुरू करने के लिए तैयार है।''

क्लब की डायलिसिस सुविधा की सराहना करते हुए, रो ई निदेशक कोटबागी ने कहा कि इससे हजारों लोगों की जान बचाने में मदद मिलेगी। ''मैं समझता हूँ कि ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में एक स्वास्थ्य सेवा संस्थान का कितना महत्व होगा। बरसों पहले, बेलगाम के पास चिकोडी स्थित एक अस्पताल में वेंटिलेटर के अभाव के कारण मैंने अपने चाचा को खो दिया था। उन्हें दिल का दौरा पड़ा और वो अस्पताल उस समय आपातकालीन स्थिति को संभालने के लिए सुसज्जित नहीं था। अब शहर अच्छी तरह से विकसित हो गया है'', उन्होंने याद किया।

उन्होंने ज़ोन के नेतृत्वकर्ताओं - रोटरी समन्वयक रवि धोत्रे, सहायक RC राजलक्ष्मी वडलामानी, RRFC लक्काराजू सत्यनारायण, DRFC मधुप्रसाद कुरुवाड़ी और ARPIC चिनप्पा रेड्डी को मंडल की समग्र उपलब्धियों के लिए धन्यवाद दिया।

विजयवाणी प्रकाशन के सहयोग से मंडल ने *विद्या सेतु* नामक परियोजना का शुभारंभ किया जिसके माध्यम से कक्षा 10वीं और 12वीं के ग्रामीण छात्रों को ₹25 लाख की लागत से 50,000 विज्ञान और अंग्रेजी की गाइड वितरित की जाएंगी। नायडू ने कहा, एक ब्लड बैंक और एक ICU एम्बुलेंस की योजना भी तैयार है और आगे कहा कि मंडल ने कॉग्निजेंट टेक्नोलॉजीज के समर्थन से सरकारी सहायता प्राप्त कॉलेजों को 2,500 कंप्यूटर दान करने की योजना बनाई है और इंफोसिस के समर्थन से छात्रों को डिजिटल साक्षरता की सुविधा प्रदान करने के लिए अन्य सभी स्कूलों एवं कॉलेजों को 15,000 कंप्यूटर दान करने की योजना है।

रोटारेक्ट समिति के सह-अध्यक्ष रवि वडलामानी ने प्रत्येक रोटरी क्लब से दो रोटरेक्ट क्लबों को प्रायोजित करने का आग्रह किया। तेलंगाना में हमने सभी कॉलेजों में NCC और NSS की तरह ही रोटरेक्ट क्लबों को बढ़ावा देने के लिए सरकार के साथ एक समझौता ज्ञापन हस्ताक्षरित किया है, उन्होंने कहा। उन्होंने 15 नए रोटारेक्ट क्लबों को शामिल करने के लिए DRR सुमंतिका को बधाई दी।

इस कार्यक्रम में DG गण डॉ ओमप्रकाश बी मोतीपावले (3132), के. प्रभाकर (3150) और एम रामा राव (3020) ने भाग लिया। रोटरी क्लब होस्पेट के अध्यक्ष राजेश ने धन्यवाद ज्ञापन दिया। ■

भारत-पाक शांति पार्क की खोज में रोटेरियन

INDUS PEACE PARK

रशीदा भगत

अक्टूबर माह के चौथे सप्ताह में, भारत और पाकिस्तान के बीच की दीवार भरभरा के ढह गई, जब छह रोटरी क्लबों के सदस्यों ने दोनों पड़ोसियों के बीच शांति के प्रसार के लिए ज़ूम फेलोशिप मीट का आयोजन किया जिसमें भारत के तीन - रोटरी क्लब काशीपुर कॉर्बेट, काशीपुर, और अलीगढ़ - और पाकिस्तान से तीन - रोटरी क्लब लाहौर गैरीसन, कराची गार्डन और भुभर चकवाल ने भाग लिया था।

इस बैठक के समन्वयकों में से एक, रोटरी क्लब काशीपुर कॉर्बेट के अनिल घई ने कहा, ''शांति के प्रयासों को बढ़ावा देने वाली इस बैठक में 170 से अधिक सदस्यों ने हिस्सा लिया था।'' यह बैठक इंडस पीस पार्क सोसाइटी (आईपीपीएस) द्वारा आयोजित की जाने वाली ऐसी कई बैठकों की शृंखला में से एक थी, जिसकी परिकल्पना 2015 में की गई थी और इसमें यूएस, कनाडा, यूके, अफ्रीका, भारत और पाकिस्तान जैसे देशों के 18 निदेशक शामिल हैं। ''हम उन रोटेरियनों को शामिल करते हैं जिनमें शांति बहाल करने का जुनून है, और रोटरी क्लबों के माध्यम से, हमारे साथ जुड़ने के लिए ऐसे और रोटेरियन की तलाश कर रहे हैं'', वे कहते हैं।

इस मंच का नेतृत्व PDG कीज़ वैन डर पोल, रोटरी क्लब नाकुस, RID 5080, कनाडा कर रहे हैं, और इस मंच की परिकल्पना का विचार उन्हें तब आया जब फरवरी 2015 में एक मैत्री विनिमय कार्यक्रम का नेतृत्व करने के लिए उनका पाकिस्तान जाना हुआ था। बैठक को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि वह एक स्कूल के प्रधानाध्यापक थे और उन्होंने पाया कि रोटरी संगठन में मित्रता विकसित कर दुनिया भर में भलाई करने के अनेक अवसर उपलब्ध हैं।

उन्होंने कहा कि ''रोटरी फेलोशिप की वजह से इन 6 वर्षों में मेरे परिवार बढ़ा है जिसमें पाकिस्तान और भारत, दोनों देशों के भाइयों और बहनों को शामिल है। हमें बताया गया है कि दोनों देशों के बीच सीमा पर शांति का नखलिस्तान बनाना कभी भी संभव नहीं होगा और भारत और पाकिस्तान की दोनों सरकारें इस पार्क के लिए जमीन देने के लिए कभी सहमत नहीं होंगी। लेकिन हमें यह भी बोला गया है कि हम जो मुकाम हासिल करने की कोशिश कर रहे हैं वह अविश्वास और शत्रुता से विषाक्त हो चुके क्षेत्र में, ताजी हवा में सांस लेने का प्रयास है। हमें कहा गया कि अब समय आ गया है कि कोई व्यक्ति या कोई समूह इस चुनौती को स्वीकार करे और उन्होंने यह भी कहा कि काश उन्हें ये सपना दशकों पहले देखा होता।''

पीडीजी पोल का कहना था कि वह एक अन्य अंतरराष्ट्रीय शांति पार्क के निदेशक भी थे- अमेरिका और कनाडा की सीमा पर स्थित वाटरटन-ग्लेशियर अंतर्राष्ट्रीय शांति पार्क के, जिसकी स्थापना 1932 में समर्पित रोटेरियनों द्वारा की गई थी, जिन्होंने इस सपने को हकीकत में बदलने के लिए दोनों देशों की सरकारों के साथ लगातार पैरवी की थी। ''यह लगभग 90 साल पहले की बात थी, और तब से हर साल रोटेरियन फेलोशिप असेंबली के माध्यम से इसका उत्सव मनाते हैं। 8900 किलोमीटर लम्बी सीमा पर तीन अन्य सीमा पार पार्क और बने हुए हैं।''

वेबिनार को संबोधित करते हुए, RID 3110 के डीजी मुकेश सिंघल ने ये आशा जताई कि ''यह बैठक हमारे दोनों देशों के बीच पैदा हुई कटुता को कम करने में सहायक होगी।'' निहित स्वार्थ रखने वाले, विशेष रूप से दुनिया भर में हथियार लॉबी और हथियार डीलर, दुनिया में शांति चाहते ही नहीं हैं, क्योंकि उनका मकसद व्यापार और मुनाफा है। लेकिन अगर रोटेरियन चाहें तो दोनों देशों की

PDG कीज़ वैन डर पोल।

बाएं से: IPPS उपाध्यक्ष मोहम्मद अय्याज़, DGE पवन अग्रवाल (RID 3110), PDG टोनी शर्मा (RID 1130, यू के) और IPPS निदेशक राजीव सभरवाल।

सरकारों को यह समझाने की दिशा में काम कर सकते हैं कि विकास और रोजी-रोटी के मुद्दों को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। उन्होंने कहा, ''आइए हम लोगों के चेहरों पर मुस्कान लाएं। रोटेरियनों को यह सुनिश्चित करने करने का अवसर दें कि राजनीति नहीं, केवल सेवा ही मायने रखती है।''

''इसके पश्चात यह चर्चा सामान्य सांस्कृतिक डीएनए विरासत पर केंद्रित हो गई जिसे दोनों राष्ट्र के निवासी साझा करते हैं, और जिसमें महान सिंधु सभ्यता की झंकार सुनाई देती है, जो बिना किसी तारतम्य के शांतिप्रिय समाज का प्रतीक रही है, यहां लोगों ने जल प्रबंधन की व्यवस्था में अपना अद्भुत कौशल दिखाया है और जहां के लोग कीमती पत्थरों, नगीनों और धातुओं से अलंकृत छोटे खिलौनों के निर्माण की जटिल शिल्प कला में माहिर हैं'', घई ने कहा।

बैठक में भाग लेने वाले रोटेरियन में से एक ने आशा व्यक्त की कि रोटरी शांति का पथ प्रशस्त कर लोगों को उसी प्रकार एक साथ ला सकती है जिस तरह संयुक्त राष्ट्र के गठन में सहायक हुई थी। उन्होंने कहा कि दुनिया के सामने रोटरी ने मुख्यतः जिस शक्ति का प्रदर्शन किया, वह थी ''पोलियो उन्मूलन की लड़ाई में दर्शाई गई दृढ़ता और प्रतिबद्धता'', उन्होंने कहा।

एक अन्य प्रतिभागी ने कहा: ''जिस तरह हमारा उद्देश्य स्वयं से ऊपर सेवा है और हमारा मुख्य उपकरण है फोर - वे टेस्ट, हम बिना किसी भय या पक्षपात के भारत पाक संबंधों में 70 वर्षो से चली आ रही जड़ता और उससे पैदा हुए अवरोध को समाप्त करने का प्रयास करेंगे और सीमा पर ' ओएसिस ऑफ़ पीस ' का निर्माण कर बंटवारे के घावों पर मलहम लगाने की कोशिश करेंगे, जिसका नाम होगा इंडस पीस पार्क।''

रोटरी क्लब लाहौर गैरीसन, RID 3272 से पीडीजी शहजाद अहमद ने इस शांति पार्क परियोजना की पृष्ठभूमि और परिदृश्यके सम्बन्ध में एक प्रस्तुति दी, जिसे ये भावुक और जोशीले रोटेरियन दुनिया का ''आठवाँ आश्चर्य'' कहते हैं।

''हमारा सपना है कि दो प्रतिष्ठित इको पार्क एक-दूसरे के सामने स्थित हों, - एक भारत में और दूसरा पाकिस्तान में। इसका उद्देश्य विभाजन के दौरान खोया हुआ विश्वास और सद्भाव फिर से बहाल करना है। हमारी ये कहानी तब शुरू हुई जब पीडीजी कीस वान डेर पॉल, आरसी नकुस्प, ठ्खऊ 5080, कनाडा, जो उस समय डीजीएन थे और वर्तमान में पीस सोसाइटी के अध्यक्ष हैं, 2015 में पाकिस्तान आये थे। वह वाघा/अटारी सीमा पर चेंज ऑफ गार्ड समारोह देखना चाहते थे, लेकिन तत्कालीन विषम परिस्थितियों और सुरक्षा कारणों से वो संभव नहीं हो सका था।''

लेकिन वे लौटे नहीं बल्कि पाकिस्तान में ही रुक गए और उन्होंने कई पोलियो टीकाकरण शिविरों का भ्रमण किया। उन्होंने ही सबसे पहले ये विचार रखा था कि अमेरिका और कनाडा सीमा के बीच वाटरटन-ग्लेशियर अंतर्राष्ट्रीय शांति पार्क की तरह ही, जिसे 1932 में अमेरिका और कनाडा में समर्पित रोटेरियन द्वारा स्थापित किया गया था, जो उन दोनों देशों के बीच लंबे समय से कायम शांति का प्रतीक है, ''हम ऐसा ही एक शांति पार्क भारत और पाकिस्तान की सीमा पर बना सकते हैं। आदर्श रूप

से इसका विस्तार 500 एकड़ से अधिक होना चाहिए ताकि वहां एक स्मारक, शांति केंद्र, पर्यावरण के अनुकूल सुविधाएं, इत्यादि का निर्माण हो सकें।''

अहमद ने आगे जोड़ा कि इस पार्क के लिए आदर्श स्थान अमृतसर-लाहौर की सीमा होती, लेकिन घनी आबादी वाला और अति व्यावसायिक क्षेत्र होने के कारण वहां इतनी बड़ी जमीन मिलना बहुत मुश्किल होगा। दूसरी संभावना करतारपुर कॉरिडोर की है जो ज़्यादा आबादी वाला शहर नहीं है। ''हमने एक ऐसे शांति पार्क का सपना देखा है, जहां न केवल हमारे दो देशों से बल्कि पूरी दुनिया के लोग स्वतंत्र रूप से विचरण सकें, बच्चे खेल सकें और जहां लोग स्वच्छंद रूप से बातचीत कर सकें।''

RID 3110 के डीजीई पवन अग्रवाल और फोरम के उपाध्यक्ष मोहम्मद अयाज, रोटरी क्लब लंदन से, पीडीजी अख्तर अलवी और पाकिस्तान से पीडीजी फैजा कमर ने भी इस वेबिनार को संबोधित किया।

एक पैनल चर्चा में भाग लेते हुए पीडीजी अलवी ने कहा कि अपनी 40 वर्षों से अधिक की रोटरी यात्रा के दौरान कई बार भारत जाना हुआ है, जहां उनके ''बहुत सारे दोस्त'' थे, और उन्हें भारत के दोनों पूर्व रो इ अध्यक्षों राजेंद्र साबू और कल्याण बनर्जी से घनिष्ठता बढ़ाने का सौभाग्य भी मिला। ''यह एक उत्कृष्ट परियोजना है और जैसा कि नेल्सन मंडेला ने कहा है, असंभव कुछ भी नहीं है, और जहां चाह, वहां राह है और यदि हमारे पास दृढ़ इच्छा शक्ति है, तो हम इसे अवश्य परिणीत कर सकते हैं।''

आईपीपीएस के निदेशक घई कहते हैं कि रोटेरियनों को उम्मीद है कि दोनों राष्ट्रों की सरकारें जमीन दान करेंगी ताकि शांति पार्क का सपना शीघ्र ही साकार हो सके।

भारत-पाक शांति को बढ़ावा देने का उनके पास एक व्यक्तिगत कारण भी है; विभाजन के दौरान उनके पिता इस्लामाबाद से करीब 72 किलोमीटर दूर स्थित चकवाल से भारत आए थे, जो पूर्व भारतीय प्रधान मंत्री मनमोहन सिंह का गृह नगर भी है। ''मेरी पत्नी का परिवार भी मुल्तान से है और हम 1996 में पाकिस्तान गए थे और हमारा दृढ़ विश्वास है कि दोनों देशों के बीच शांति स्थापित होनी ही चाहिए'', वे मुस्कुराते हुए कहते हैं। ■

कैसा होगा पीस पार्क

- शांति का एक ऐसा रमणीय मरु उद्यान जहां लोग मानवता का उत्सव मना सकते हैं
- एक ऐसा स्थान जहां लोग संस्कृति, भोजन, संगीत, नृत्य, कला, वास्तुकला, परंपरा और खेल को आपस में साझा करने के लिए स्वतंत्र हैं।
- जहां एक उद्यान की स्थापना के साथ उसी में शैक्षणिक अवसर भी उपलब्ध हों।
- एक ऐसा पार्क जहां दोनों देशों के विद्वान और शांति प्रचारक, अपने दुनिया भर के सहपाठियों के साथ, पूरी दुनिया को शांति और सद्भाव से रहने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए, मिलकर काम कर सकते हैं और सीख सकते हैं।

रोटरी और सहभागी

रोटरी क्लब कलकत्ता युविस ने 1,000 शौचालयों का निर्माण किया

टीम रोटरी न्यूज़

रोटरी मंडल 3291 के अंतर्गत, रोटरी क्लब कलकत्ता युविस ने अपनी प्रमुख परियोजना 'सुचिता' के तहत तीन वर्षों के अंतराल में उत्तर और दक्षिण 24 परगना और हुगली जिलों के गांवों में 1,001 घरों में शौचालयों के निर्माण को प्रायोजित किया है। क्लब के पिछले अध्यक्ष संजय पसारी कहते हैं, ''हमने ₹1 करोड़ रुपये से अधिक खर्च किए और इन तीन वर्षों में परियोजना स्थलों का दौरा करने के लिए कुल 14,000 किमी की यात्रा की।'' आरएसएच ग्लोबल, क्रेडेंट फाउंडेशन और कलकत्ता मेट्रो मैदान के इनर व्हील क्लब ने परियोजना के लिए वित्तीय सहायता प्रदान की। ■

ADVT.

RTN SHEKHAR MEHTA
RI PRESIDENT
RTN A S VENKATESH
RI DIRECTOR
RTN Dr MAHESH KOTBAGI
RI DIRECTOR
RTN GULAM VAHANVANTY
TRF TRUSTEE
Rotary
SERVE TO CHANGE LIVES
RID 2981
ZONE V
RTN PDG. A.MANI
ROTARY DISTRICT TRAINER
New Members!
1000 + NEW MEMBERS INDUCTED
Adopt a Village
132 VILLAGES ADOPTED ONE VILLAGE BY ONE CLUB EACH
elite
DISTRICT 2981
5200 PROJECTS UPLOADED IN ROTARY INDIA APP
CHANGE MAKERS
PROJECT Orange
a ray of sight
AVOIDABLE BLINDNESS 8 VISION CENTRE TO BE STARTED ACROSS THE DISTRICT
MAMMOGRAPHY BUS TO BE DEDICATED TO THE STATE OF TAMILNADU & PONDICHERRY
AKS
2.5 LAKH
DG.S.BALAJI HAS CONTRIBUTED AND BECOME DISTRICT FIRST AKS MEMBER
Rotary
ALABANAI
ஆலாபனை
DISTRICT CONFERENCE 2981
JANUARY 7,8,9 - 2022
CONFLUENCE HALL, MAHABALIPURAM
Rtn.AKS.S.BALAJI
DISTRICT GOVERNOR
Rtn.JEYASHREE BALAJI
DISTRICT FIRST LADY
Mobile : +91 - 98424 32271 | E-mail : dgbalaji2122@gmail.com

रोटरी नेतृत्वकर्ता रो ई मंडल 3170 का दौरा करते हैं

टीम रोटरी न्यूज़

रो ई अध्यक्ष शेखर मेहता और रो ई निदेशक महेश कोटबागी कोल्हापुर और धारवाड़ के दो दिवसीय दौरे पर थे जिससे वहाँ के रोटेरियन बहुत खुश थे। ''यह पहली बार था जब किसी सेवारत रो ई अध्यक्ष ने कोल्हापुर का दौरा किया'', रो ई मंडल 3170 के मंडल सचिव (वार्षिक योगदान) अजय मेनन ने कहा। इन दोनों रोटरी नेतृत्वकर्ताओं का बड़ी धूमधाम से भव्य स्वागत किया गया।

कोल्हापुर में, मेहता और कोटबागी ने मंडल की महत्वपूर्ण रोटरी परियोजनाओं का दौरा किया - सिविल अस्पताल का डायलिसिस केंद्र, रोटरी समाज सेवा केंद्र, शाहू ब्लड बैंक, बोलने और सुनने में अक्षम लोगों के लिए एक पुनर्वास केंद्र, एक मधुमेह देखभाल केंद्र और एक फिजियो एवं हाइड्रोथेरेपी केंद्र - जिन्हें विभिन्न वैश्विक अनुदानों के समर्थन से स्थापित किया गया था।

कोविड महामारी के दौरान राज्य में रोटरी द्वारा प्रदान की गई बहुमूल्य सेवा के सम्मान में मेहता को उप गृह राज्य मंत्री रोटेरियन सतेज पाटिल द्वारा महाराष्ट्र सरकार की ओर से एक स्क्रॉल ऑफ ऑनर और एक प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया। DG गौरीश धोंड ने मंडल के रोटेरियनों द्वारा TRF को दिए गए उदार योगदान को सम्मानित करने के लिए रो ई अध्यक्षीय रात्रि भोज की मेजबानी की। मेहता और कोटबागी ने PDG विनयकुमार पाई रायकर; रोटरी क्लब सांगली के सदस्य किशोर लुल्ला और PDG दिलीप सालगांवकर को उनकी AKS प्रतिबद्धता को पूरा करने के लिए उनका अभिनंदन किया। किशोर के बेटे अमित लुल्ला बेलगाम के रोटरी ई-क्लब के एक

RID 3170 के रोटेरियन और रोटरेक्टर, रो ई अध्यक्ष शेखर मेहता और रो ई निदेशक महेश कोटबागी का स्वागत करते हुए।

रोटेरियन किशोर लुल्ला ने (बाएं से) अमित लुल्ला, पीडीजी विनय रायकर, डीजी गौरीश और प्रतिमा धोंड, और मंडल सचिव अजय मेनन की उपस्थिति में अपनी AKS प्रतिबद्धता को पूरा करने के लिए अध्यक्ष मेहता को एक चेक सौंपा।

सदस्य है और उन्होंने एक AKS सदस्य बनने का संकल्प लिया। DG धोंड और सहायक गवर्नर सचिन जंवर सहित बारह अन्य रोटेरियनों को TRF में उनके विभिन्न स्तरों पर दिए गए प्रमुख दानकर्ता योगदानों के लिए सम्मानित किया गया। इस कार्यक्रम में दोनों नेतृत्वकर्ताओं ने 225 प्रतिनिधियों की एक सभा को संबोधित किया।

अगले दिन वे रोटरी क्लब धारवाड़ के 80वें वर्ष समारोह में शामिल हुए। तीन प्रमुख दानकर्ताओं - तारादेवी वली, पल्लवी देशपांडे और बिनॉय मोमोया - को मेहता और कोटबागी द्वारा सम्मानित किया गया।

DGN नासिर बोरसदवाला रो ई अध्यक्ष के सहयोगी थे। ■

रो ई मंडल 3090 के इंटरेक्टरों के लिए करियर काउंसलिंग शिविर

कैरियर परामर्श शिविर में मंडल इंटरेक्ट अध्यक्ष माणिक राज सिंगला इंटरक्टरों के साथ।

किरण ज़ेहरा

कक्षा 7-12 के इंटरेक्टरों और विद्यार्थियों को हाल ही में उद्यमियों, कलाकारों एवं विभिन्न क्षेत्रों के नेतृत्वकर्ताओं को सुनने, करियर प्रशिक्षकों के साथ बातचीत करने और रोटरी की शांति फैलोशिप, RCC, RYLA, युवा विनिमय और नई पीढ़ी के सेवा विनिमय कार्यक्रमों के बारे में जानने का अवसर मिला। ऐसा उन्होंने रो ई मंडल 3090 डिस्ट्रिक्ट इंटरेक्ट अध्यक्ष माणिक राज सिंगला द्वारा आयोजित करियर काउंसलिंग शिविर में किया। मंडल ने उनके नेतृत्व में 50 नए इंटरेक्ट क्लबों को शामिल किया है और करियर कॉउन्सलिंग पहल हर सप्ताहांत में करीब 200 इंटरेक्टरों को करियर मार्गदर्शन और प्रशिक्षण प्रदान करती है। सिंगला कहते है, ''रोटरी के ज्ञान के अलावा, हम उन्हें उनकी पसंद के करियर, कॉलेज, दूसरे देशों में पेश किए जाने वाले कोर्स, छात्रवृत्ति और प्रतियोगी परीक्षाओं की जानकारी भी देते है।''

इस साल वह अर्ध-ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरेक्ट शुरू करना चाहते है ताकि ''छात्रों की यह समझाने में मदद की जा सके कि कैसे वे रोटरी के माध्यम से एक मजबूत करियर बनाते हुए अपने समुदाय में परिवर्तन ला सकते है।''

पटियाला स्थित वीर हकीकत स्कूल के इंटरेक्ट क्लब के नितिन कुमार भारतीय सेना के एक इन्टेलिजन्स अधिकारी बनना चाहते है। ''मुझसे पूछा गया कि मैं अपने सपने को कैसे हासिल करूंगा लेकिन मुझे जानकारी नहीं थी।'' एक भौतिक सत्र में, उन्हें उन सभी पाठ्यक्रमों के बारे में बताया गया जिससे उस लक्ष्य को हासिल किया जा सकता है। ''मेरे सपने का मजाक उड़ाकर दरकिनार नहीं किया गया, बल्कि मुझे बताया गया कि इसे प्राप्त किया जा सकता है। इससे मेरा आत्मविश्वास बढ़ा और मुझे एक दिशा मिली।''

सप्ताहांत पर इंटरेकटरों को उनके स्कूल में आयोजित साइकोमेट्रिक और एप्टीट्यूड टेस्ट को हल करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। इसके अलावा सिंगला इन इंटरेक्टरों के माता-पिता के लिए परामर्श सत्र आयोजित कर रहे है। उन्होंने जोर देकर कहा कि बातचीत पहल में माता-पिता को शामिल करना महत्वपूर्ण है। केवल माता-पिता ही एक बच्चे को उसकी पूरी क्षमता तक पहुँचने के लिए आवश्यक सहायता प्रदान कर सकते है। हमारे पेरेंट्स गाइडन्स प्रोग्राम के माध्यम से हम उन्हें यह समझने में मदद करते है कि सभी बच्चे शैक्षिक गतिविधियों में अच्छे नहीं होते। माता-पिता को चाहिए कि वे अपने बच्चे को उसकी योग्यता, रुचि और कौशल के अनुसार करियर चुनने में मदद करें।

''हमने आज तक माता-पिता को कभी करियर मार्गदर्शन कार्यक्रम में शामिल नहीं किया। यह एक अच्छा विचार है'', वीर हकीकत स्कूल की प्रधानाध्यापिका सरला भटनागर कहती है। ■

रो ई मंडल 3181 बांस की खेती को प्रोत्साहित करता है

जयश्री

रोटरी का सातवां क्षेत्र अब और भी सुस्पष्ट है क्योंकि ग्लासगो में हाल ही में संपन्न हुए COP26 संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन सम्मेलन में, रो ई अध्यक्ष शेखर मेहता ने पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में रोटरी के प्रयासों पर प्रकाश डाला। उन्होंने मैंग्रोव की बहाली को रोटरी के पर्यावरण ध्यानाकर्षण क्षेत्र का प्रमुख सूत्र बनने का संकेत दिया।

वहाँ घर पर, रो ई मंडल 3181 ने भारत, नेपाल और मालदीव्स के रोटरी क्लबों को 1,275 किलोग्राम बांस के बीज उपलब्ध कराए है। एक किलो में लगभग 80,000 बीज होते है। तो यह 10 करोड़ बीजों के बराबर होते है, ऊऋ ए आर रवींद्र भट कहते है। यह सब तब शुरू हुआ जब पर्यावरण समर्थन की मंडल समिति के अध्यक्ष सी आर हनुमंत ने भारतीय कांटेदार बांस को बढ़ते हुए देखा और कर्नाटक वन विभाग से संपर्क किया ताकि चामराजनगर जिले, जो गहने जंगलों से घिरा हुआ है, में रहने वाली एक आदिवासी आबादी के माध्यम से बड़ी संख्या में बांस के बीज जुटाए जा सकें। बीजों को इकट्ठा करके सुखाया जाता है और एयरटाइट बैग में पैक किया जाता है। मंडल ने इन बोरियों को ₹350 किलो में खरीदा।

DG भट ने अपने क्षेत्रों में बांस के बागानों को प्रोत्साहित करने के लिए मंडल में रोटरी क्लबों को संगठित किया। पूरे मंडल में 865 किलोग्राम से अधिक बीज वितरित किए गए। अध्यक्ष नीता कवरेम्मा के नेतृत्व में, रोटरी क्लब गोनिकोप्पल ने पैसा जुटाकर नागरहोल टाइगर रिजर्व को 250 किलो बीज दिया और हनुमंत के गृह क्लब, रोटरी क्लब मैसूर वेस्ट, ने बंदीपुर टाइगर रिजर्व को 200 किलो बीज दिया।

''यदि हम 10 प्रतिशत की उत्तरजीविता दर को भी पकड़े तो, हमें एक वर्ष में 45-50 लाख पौधे मिलेंगे। यह एक तरीका है जिससे हम हरियाली को बढ़ावा दे सकते है और अपने पर्यावरण की रक्षा कर सकते है'', हनुमंत कहते है। यह एक चमत्कारी घास है जिसके कई फायदे है। यह कार्बन अधिग्रहण में मदद करता है। हाथियों की पसंदीदा खुराक होने की वजह से, बांस की भरपूर आपूर्ति उन्हें कृषि क्षेत्रों में पलायन करने के बजाय जंगलों में रहने के लिए प्रेरित करेगी। टहनियाँ, जिनकी कटाई छठवें वर्ष से की जा सकती है, ग्रामीण परिवारों के लिए आय का वैकल्पिक स्रोत प्रदान करती है।

हनुमंत ने PDG अजय गुप्ता (रो ई मंडल 3141), जो एक NGO फ्रेंड्स ऑफ एनवायरनमेंट से जुड़े हुए है, के मार्गदर्शन में बांस के बीज रोपण पर एक वीडियो बनाया और इसे 450 रोटेरियनों और ESRAG (एनवायरनमेंट सस्टेनेबिलिटी रोटरी एक्शन ग्रुप) के सदस्यों के लिए ऑनलाइन प्रदर्शित किया। जल्द ही हमें देश भर से ऑर्डर मिलने लगे।

उन्हें विश्वास है कि यदि क्लब बांस के रोपण की गति को बनाए रखते है, तो ''अगले चार वर्षों में रोटरी भारत एक प्रभावी जलवायु समाधान देने में अग्रणी भूमिका निभा सकता है।'' ■

DG ए आर रवींद्र भट, सहायक पर्यावरण समिति के मंडल अध्यक्ष सी आर हनुमंत (DG के बाईं ओर), AG एसआर स्वामी और रोटरी क्लब मैसूर वेस्ट के अध्यक्ष डॉ बी चंद्रा की उपस्थिति में बांदीपुर टाइगर रिजर्व में वन रेंजर को बांस के बीज के बैग सौंपते हुए।

अध्यक्ष मेहता मानवतावादी पर रोटरी पिन लगाते हैं

टीम रोटरी न्यूज़

भुवनेश्वर, (रो ई मंडल 3262) की अपनी यात्रा के दौरान, रो ई अध्यक्ष शेखर मेहता का 'कलिंगा इंस्टीट्यूट ऑफ इंडस्ट्रियल टेक्नोलॉजी' के संस्थापक, शिक्षाविद् अच्युत सामंता द्वारा मानद डॉक्टरेट की उपाधि से सम्मानित किया गया। मेहता, दुनिया में शांति और खुशी फैलाने के उद्देश्य से सामंता के नेतृत्व में एक मानवीय आंदोलन 'आर्ट ऑफ गिविंग' के वैश्विक राजदूत होंगे। यह एनजीओ 100 से अधिक देशों में मौजूद है, जो लोगों के बीच शांति और खुशी स्थापित करने के लिए सामुदायिक गतिविधियों में शामिल है।

साथ ही, रो ई मंडल 3262 के तहत आनेवाले, कलिंग इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज़ में किंडरगार्टन से लेकर उच्च शिक्षा तक के लगभग 30,000 गरीब बच्चों को मुफ्त स्कूली शिक्षा, रहने और खाने की सुविधा प्रदान करता है। अपने संबोधन में, मेहता ने 'देने की सुंदरता' के बारे में बात की और शिक्षा से कुल साक्षरता कैसे शुरू होगी, देश में गरीबी और भूख कैसे मिटेगी।

ऊपर: रो ई अध्यक्ष शेखर मेहता ने कलिंगा इंस्टीट्यूट ऑफ इंडस्ट्रियल टेक्नोलॉजी एंड सोशल सइंसेस के संस्थापक अच्युत सामंता को डीजी शांतनु कुमार पाणि (दाएं से तीसरे) की उपस्थिति सम्मानित किया में रोटरी पिन के साथ।

मेहता ने रोटरी लैपल पिन लगाकर सामंता को रोटरी में शामिल कर लिया। प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता, जो एक सांसद भी हैं, ने अपने 'आर्ट ऑफ गिविंग आंदोलन' के माध्यम से मुफ्त शिक्षा द्वारा वैश्विक भूख और गरीबी को मिटाने के उद्देश्य से मिशन के लिए विभिन्न देशों से कई नागरिक सम्मान प्राप्त किए हैं। मेहता ने कहा कि शिक्षाविद के पास एक आदर्श रोटेरियन के सभी गुण हैं और ''रोटरी, सामंता को अपने सदस्य के रूप में पाकर गर्वित महसूस करता है।'' इस कार्यक्रम में दोनों संस्थानों के शिक्षाविदों के अलावा पीडीजी और रो ई मंडल 3262 के वरिष्ठ रोटेरियन ने भाग लिया। (रोटरी न्यूज़ के अक्टूबर 2014 के अंक में सामंता के काम के बारे में पढ़ें – 'उनकी मुस्कान कहानी बताती है' https://rotarynewsonline.org/their-smiles-tell-the-story/) ■

Rotary PEOPLE OF ACTION

दिल्ली की झुग्गी बस्ती में 100 हैंडपंप जीवन को आसान बनाते है

वी मुत्तुकुमारन

पानी खींचने के लिए रोटरी क्लब दिल्ली साउथ सेंट्रल द्वारा लगाए गए हैंडपंप का उपयोग करते हुए ग्रामीण।

पूर्वी दिल्ली की यमुना खद्दर झुग्गी बस्ती में 45 वर्षीय माया देवी, उनकी सहेलियों और उनके परिवारों के जीवन में एक सुखद मोड़ आया जब रोटरी क्लब दिल्ली साउथ सेंट्रल, रो ई मंडल 3011, के क्लब अध्यक्ष रजनीश मित्तल द्वारा क्षेत्र में 100 हैंडपंप लगाने की पहल की गई। अब उन्हें पीने का पानी लाने, कपड़े धोने और खाना पकाने के बर्तन साफ करने के लिए दूर नहीं जाना पड़ेगा। ''मुझे पूर्व महापौर एवं स्थानीय पार्षद बिपिन बिहारी सिंह से यमुना नदी के किनारे 5-6 वर्ग किलोमीटर में फैली इस विशाल झुग्गी बस्ती के लोगों की पीड़ा के बारे में पता चला। उन्होंने मुझसे इन परिवारों की कठिनाइयों को कम करने हेतु कोई कदम उठाने के लिए अनुरोध किया'', मित्तल याद करते है।

अक्षरधाम मंदिर और दिल्ली-नोएडा डायरेक्ट फ्लाईवे के बीच स्थित इस खद्दर बस्ती में लगभग 3,000 परिवार (10,000 लाभार्थी) रहते है मगर उनके पास पीने का पानी, बिजली और ढंग की सड़कों जैसी बुनियादी सुविधाएं नहीं थी। ''वे पूरी तरह से उन पानी के टैंकरों पर निर्भर थे जो कभी-कभार ही उनकी बस्ती में आते थे। स्वच्छता की कमी के कारण बाहरी लोगों के लिए अपनी कार से बाहर निकलना और इस बदबूदार क्षेत्र में घूमना वास्तव में मुश्किल है। हमने यहाँ के निवासियों की पानी की समस्या को दूर करने के लिए हैंडपंप लगाने का फैसला किया।''

लेकिन उन्हें तब निराशा हाथ लगी जब 30 फीट की खुदाई के बाद भी पानी मैला था और वह पीने योग्य नहीं था। ''इसलिए हमें पीने और अन्य जरूरतों को पूरा करने हेतु सुरक्षित एवं स्वच्छ जल प्राप्त करने के लिए 50 फीट खुदाई करनी पड़ी, मित्तल कहते है। लगभग ₹12,000-₹15,000 की लागत

वे पूरी तरह से उन पानी के टैंकरों पर निर्भर थे जो कभी-कभार ही उनकी बस्ती में आते थे।

क्लब के अध्यक्ष रजनीश मित्तल (बाएं से चौथे), डीजी गण अनूप मित्तल और अजय मदान (RID 3080), मंडल सचिव विवेक जैन, AKS सदस्य मुकेश अग्रवाल प्रोजेक्ट जल के शुभारंभ के अवसर पर।

वाले प्रत्येक हैंडपंप के साथ ₹13 लाख (लगभग) की लागत वाली यह जल परियोजना सदस्यों से प्राप्त योगदान के माध्यम से वित्त पोषित की गई थी। दिहाड़ी मजदूर राम प्रसाद (35) खुशी से झूम उठे क्योंकि अब वह दिन भर की कड़ी मेहनत के बाद हैंडपंप के नीचे नहाने का आनंद ले सकते है।

अब परिवार के सदस्यों के लिए अपनी पीने और घरेलू आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु पानी लाने के लिए हाथ से चलने वाले पंपों के सामने कतार में लगना आम हो गया है। ''हमने पंपों के आसपास कपड़े धोने और बर्तन साफ करने के लिए एक पत्थर का मंच बनाया है'', वह कहते है। चूंकि पंपों पर 24x7 पानी उपलब्ध रहता है इसलिए अब खद्दर बस्ती में इस अनमोल संसाधन की कोई कमी नहीं है।

हैंडपंप के पास रहने वाला व्यक्ति इसके रखरखाव के लिए जिम्मेदार होगा। हैंडपंप के आभासी उद्घाटन के दौरान, DG अनूप मित्तल ने इस झुग्गी बस्ती को पानी की कमी का स्थायी समाधान प्रदान करने के लिए क्लब की सराहना की। उद्घाटन के मौके पर रो ई मंडल 3080 के DG अजय मदान भी मौजूद थे।

सौर लैम्प

अब यह क्लब इस झुग्गी बस्ती में सौर स्ट्रीट लाइट लगाने पर काम कर रहा है क्योंकि यहाँ बिजली नहीं है। ''यह कार्य 30 जून से पहले पूर्ण हो जाएगा'', क्लब अध्यक्ष ने आश्वासन दिया। 69 सदस्यों वाला यह क्लब पिछले 4-5 वर्षों में दिल्ली की 15 सरकारी कन्या शालाओं में WinS कार्यक्रमों को लागू करने के अलावा राजस्थान में 35 रोधक बांधों का निर्माण करने जैसी बड़ी जल परियोजनाओं के क्रियान्वयन के लिए जाना जाता है। ■

2022-26 के लिए PRID भरत पांड्या TRF न्यासी चुने गए

PRID डॉ भरत पांड्या को रो ई निदेशक मंडल द्वारा जुलाई 2022 से जून 2026 तक चार वर्षों के लिए रोटरी संस्थान के न्यासी के रूप में सेवा देने हेतु चुना गया है।

उन्होंने 2019-21 के दौरान रोटरी अंतर्राष्ट्रीय के निदेशक के रूप में कार्य किया और 2020-21 के लिए इसके कोषाध्यक्ष बने। ■

मासिक धर्म स्वास्थ्य जागरूकता परियोजनाओं के निधीयन के लिए कला नीलामी

जयश्री

रोटेरियन बी दक्षिणायनी की दस में से तीन पेंटिंग यूके के किंग्स्टन में एक प्रदर्शनी में बेची गईं और उन्होंने अपनी एक पेंटिंग रो ई मंडल 1130, यूके, के अध्यक्ष सुजय पॉल के अनुरोध पर रोटरी पासपोर्ट क्लब को दान कर दी। ''वह मिजोरम के एक सक्रिय रोटेरियन है और लंदन में काफी लोकप्रिय है। क्लब के माध्यम से वह इस पेंटिंग की नीलामी करके इससे प्राप्त आय का उपयोग एक सेवा परियोजना हेतु करेंगे'', दक्षा कहती है जो रोटरी क्लब मीनमबाक्कम, रो ई मंडल 3232, के साथ 21 साल से एक रोटेरियन के रूप में जुड़ी है और 30 साल पहले रोटरी के यूथ एक्सचेंज कार्यक्रम की एक लाभार्थी रही है।

वर्तमान में वह मासिक धर्म स्वास्थ्य और स्वच्छता के रोटरी एक्शन ग्रुप (RAG-MHH) के धन संचयन समारोह की निदेशक है जिसका गठन पिछले साल रोटरी क्लब टॉवर हाइट्स, लंदन, द्वारा किया गया था जिसमें शर्मिला नागराजन इसकी अध्यक्ष, विद्या श्रीनी (रोटरी क्लब चेन्नई टेम्पल सिटी) इसकी उपाध्यक्ष और डेनिस किल्सचन (रोटरी क्लब इबिज़ा, स्पेन) इसकी सचिव के रूप में कार्यरत है।

यह समूह दुनिया भर के रोटेरियनों के लिए खुला है और इसका उद्देश्य विकसित देशों में 'पीरियड ग़रीबी' के बारे में जागरूकता फैलाना है। ''यूएस, यूके और यूरोप जैसे देशों के लोग यह जानकर हैरान है कि अनेक देशों में ऐसी महिलाएं है जो सैनिटरी नैपकिन नहीं खरीद सकती। इस कारण भारत के कुछ गांवों में महिलाओं को मासिक धर्म के दौरान बाहरी क्षेत्र में अलग-थलग रहने हेतु मजबूर किया जाता है'', दक्षा कहती है। ''हमारा RAG

दुनिया भर की सभी महिलाओं को सुकून देने हेतु उत्सुक है और उन्हें मासिक धर्म स्वच्छता एवं कपड़े से निर्मित पैड और मासिक धर्म कप जैसे विभिन्न विकल्पों की उपलब्धता के बारे में शिक्षित करना चाहता है। हम पुरुषों के साथ भी इस मुद्दे पर बातचीत को आगे बढ़ाने पर काम कर रहे है ताकि बेहतर समझ से स्वस्थ संबंध स्थापित किए जा सकें। हमें किशोरियों एवं युवतियों को MHH संसाधन प्रदान करने हेतु धन की आवश्यकता है, वह आगे कहती है।

धन संचयन समारोह की निदेशक के रूप में उन्होंने RAG के लिए धन एकत्रित करने हेतु

RID 1130, किंग्स्टन, यूके में प्रदर्शनी में बी दक्षिणायनी, फँड्रैसिंग निदेशक, शर्मिला नटराजन, अध्यक्ष, RAG - मासिक धर्म स्वास्थ्य और स्वच्छता; और पीडीजी टोनी शर्मा।

यूएस, यूके और यूरोप जैसे देशों के लोग यह जानकर हैरान है कि अनेक देशों में ऐसी महिलाएं है जो सैनिटरी नैपकिन नहीं खरीद सकती।

अपनी पेंटिंग्स की एक प्रदर्शनी रखने का विचार प्रस्तुत किया। ''मैंने सोचा कि मैं अपनी प्रतिभा का आँकलन करूंगी'', दक्षा कहती है जिन्होंने ललित कला में परास्नातक किया है और श्रम एवं ललित कला के इतिहास में अंतर-अनुशासनात्मक डॉक्टरेट की उपाधि हासिल की है। इसके बाद उन्होंने 1860 के दशक में दक्षिण अफ्रीका में रेलमार्ग बिछाने के लिए भारत से पलायन करने वाले गिरमिटिया मजदूरों द्वारा दिए गए योगदान हेतु समर्पित एक संग्रहालय के लिए सरकार को एक प्रस्ताव भेजा था। ''मैं जोहान्सबर्ग एवं डरबन गई और प्रवासी लोगों की पांच पीढ़ियों का पता लगाया। वे अपने परदादाओं की उत्पत्ति के बारे में जानते भी नहीं थे।''

BCG टीकों के निर्माता और निर्यातक के रूप में 15 साल तक कार्य करने के बाद, दक्षा ने कोविड लॉकडाउन की वजह से धीमी हुई ज़िंदगी की रफ्तार का फायदा उठाते हुए चित्रकारी के अपने शौक को आगे बढ़ाने का फैसला किया।

इस साल जून में, उन्होंने पोलियो के लिए धन संचयन करने हेतु पेंटिंग्स की एक आभासी प्रदर्शनी आयोजित की। इस प्रदर्शनी का शीर्षक 'डायरेक्टर्स कट' था क्योंकि इसकी अध्यक्षता PRID भरत पंड्या और PRID कमल संघवी और रो ई निदेशक एएस वेंकटेश और रो ई निदेशक महेश कोटबागी ने की थी। उनकी पेंटिंग्स के साथ-साथ, चार अन्य प्रतिष्ठित कलाकारों की कृतियों को भी शामिल किया गया। हमने छह पेंटिंग्स बेची। PRID कमल संघवी और डॉ अमीता कोटबागी ने एक-एक पेंटिंग खरीदी। ''हमने जाना कि लोग सिर्फ एक कला प्रेमी होने या कला में निवेशक होने के कारण हमारी पेंटिंग खरीदने में दिलचस्पी नहीं दिखा रहे थे, बल्कि यह इसलिए भी था ताकि वे हमारी पेंटिंग खरीदकर अपना योगदान दे सकें'', दक्षा कहती है। इस आयोजन से पोलियो कोष के लिए ₹3.46 लाख एकत्रित करने में मदद मिली।

जब उन्होंने RAG-MHH की अध्यक्ष शर्मिला के साथ इस अवधारणा पर चर्चा की तो उन्होंने

अपने क्लब, रोटरी क्लब टॉवर हैमलेट्स, के एक परीक्षण दौरे का सुझाव दिया जिसकी वह अध्यक्ष है। दक्षा ने किंग्स्टन, यूके, की एक गैलरी और एक आभासी मंच पर ऑइल कैन्वस पर निर्मित अपनी दस पेंटिंग्स को प्रदर्शित किया जिसमें तटीय भारत के दृश्यों को दर्शाया गया था। तीन पेंटिंग : £ 3,000 में बेची गईं और इससे प्राप्त आय का 20 प्रतिशत हिस्सा MHH से संबंधित परियोजनाओं को निष्पादित करने हेतु क्लब को दान कर दिया गया। एक पेंटिंग रोटरी पासपोर्ट क्लब को नीलामी हेतु दान कर दी गई थी। येह प्रदर्शनी आभासी मंच पर 30 नवंबर तक खुली है और वहाँ दो अन्य पेंटिंग भी बेची गई, दक्षा कहती है।

अगले साल जून में एक और प्रदर्शनी आयोजित करने की योजना चल रही है और इस बार यह हमारे RAG के लिए धन संचयन करने के लिए होगा। हमारे प्रदर्शनों की सूची में प्रतिष्ठित और कम-नामी कलाकारों द्वारा दान की गई लगभग 100 कलाकृतियां शामिल है। इस तरह हम अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए धन संग्रहण करने के साथ-साथ उनकी रचनाओं को भी बढ़ावा दे रहे है। ये कलाकार अपनी कलाकृतियों को बेचकर उससे प्राप्त आय का एक हिस्सा RAG में दान करेंगे, वह कहती है।

इन प्रदर्शनियों के परिणामस्वरूप रो ई मंडल 3232 में फैलोशिप ऑफ विजुअल आर्ट लविंग रोटेरियन का गठन हुआ। ''हाल ही में DGN रवि रमन के कार्यालय में इसका उद्घाटन हुआ और अब तक हमारे पास लगभग 12 सदस्य है। ऐसे और भी रोटेरियन हो सकते है जो पेंटिंग का शौक रखते हो और हम उन सभी को एक साथ लाकर धर्मार्थ कार्यक्रमों के लिए अपनी कलाकृति दान करने हेतु प्रोत्साहित करना चाहते है'', दक्षा मुस्कुराती है। ■

TRF की मदद से अच्छे कार्य

जालंधर में एक चलती-फ़िरती मैमोग्राफी क्लिनिक

टीम रोटरी न्यूज़

रोटरी मंडल 3070 के तहत, जालंधर वेस्ट के रोटरी क्लब ने हाल ही में जिले भर में नियमित रूप से गांवों का दौरा करने और स्तन व सर्वाइकल कैंसर के लिए महिलाओं को स्क्रीन करने के लिए कैंसर स्क्रीनिंग वैन शुरू की। मैमोग्राफी और पैप स्मीयर टेस्टिंग इक्विपमेंट से लैस इस वैन को टीआरएफ और कनाडा के सुबरी सनराइजर्स रोटरी क्लब द्वारा समर्थित ग्लोबल ग्रांट के जरिए खरीदा गया था।

दो डॉक्टरों, एक नर्स और एक तकनीशियन के साथ वैन, गांवों का दौरा करेगी और मांग के आधार पर एक सप्ताह या महीने के लिए शिविर आयोजित करेगी। इन शिविरों में युवा लड़कियों को सर्वाइकल कैंसर

के टीके भी उपलब्ध कराए जाएंगे, पीडीजी डॉ एसपीएस ग्रोवर ने कहा, जिन्होंने क्लब के पूर्व अध्यक्ष कुलदीप सिंह के साथ परियोजना को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। ग्रोवर ने कहा कि कैंसर जांच शिविरों की योजना गांव के प्रमुखों, चिकित्सा और स्कूल अधिकारियों के परामर्श से बनाई जाएगी। कैंसर के मरीजों को आगे के इलाज के लिए रोटरी समर्थित अस्पतालों में रेफर किया जाएगा। मोबाइल यूनिट का रखरखाव डॉ केएसजी मेमोरियल चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा किया जाएगा। ■

रो ई अध्यक्ष रोटरी क्लब जुबली हिल्स लर्निंग सेंटर का उद्घाटन करते है

टीम रोटरी न्यूज़

रो ई अध्यक्ष शेखर मेहता ने अक्टूबर में हैदराबाद स्थित सरथ गोपाल रोटरी क्लब ऑफ जुबली हिल्स लर्निंग सेंटर का उद्घाटन किया। रोटरी क्लब जुबली हिल्स के दो सदस्यों - सरथ गोपाल, जिन्होंने इस इमारत के लिए 1,800 वर्ग गज की प्रमुख भूमि दान में दी, और पेंचला रेड्डी, पूर्व अध्यक्ष राम प्रसाद द्वारा प्रायोजित एक नवीन सदस्य जिन्होंने ₹50 लाख दान करके भवन निर्माण का बीड़ा उठाया - के जुनून और उदारता के कारण केंद्र अस्तित्व में आया।

प्रसाद ने ₹20 लाख की लागत से होने वाली टाइलिंग, सेनेटरी वेयर और पुताई के लिए प्रायोजकों को तैयार किया और रोटेरियन रमन रेड्डी के साथ निर्माण का निरीक्षण किया।

मेहता ने रो ई मंडल 3150 के DG प्रभाकर, क्लब अध्यक्ष सुरेश गुप्ता और अन्य वरिष्ठ रोटरी नेतृत्वकर्ताओं एवं रोटरेक्टरों की उपस्थिति में इस केंद्र का उद्घाटन किया। PDG सैम पतिबंदला ने कहा कि यह केंद्र प्रासंगिक कौशल विकास पाठ्यक्रमों के माध्यम से वंचित युवाओं और महिलाओं के लिए उद्यमशीलता और रोजगार के अवसर विकसित करने वाले कौशलों को प्रदान करने के उद्देश्य से स्थापित किया गया है। संचार, सूचना और परिवर्तन के अलावा, अंग्रेजी बोलना और पारस्परिक कौशलों के साथ-साथ, टैली के माध्यम से लेखाकार्य, गृह-व्यवस्था और अग्रिम कार्यालय प्रबंधन कौशल जैसे व्यावसायिक कौशल, वित्तीय साक्षरता और उद्योग की आवश्यकताओं के आधार पर अन्य पाठ्यक्रम भी पेश किए जाएंगे। ''क्लब अध्यक्ष गुप्ता ने कहा, RCJH को उम्मीद है कि यह केंद्र रोटरी के आदर्शों, जिसे यहाँ पढ़ाया जाएगा, द्वारा समर्थित गुणवत्तापूर्ण जनशक्ति वाली एक जगह बनेगा।''

यह केंद्र, जिसने सितंबर 2020 में अपने कार्यक्रमों का शुभारंभ किया, महामारी की वजह से आई चुनौतियों के कारण आभासी और भौतिक कक्षाओं के मिश्रित मॉडल के माध्यम से पहले ही लगभग 1,500 लाभार्थियों तक पहुंच चुका है। टैली कार्यक्रम के कुछ लाभार्थियों को पहले से ही इंटर्नशिप और रोजगार हेतु चुन लिया गया है। इस केंद्र में जनवरी 2022 से भौतिक कक्षाएं शुरू होंगी।

तीन मंजिला इस इस सुविधा का उद्घाटन करते हुए, जिसके प्रत्येक तल में लगभग 1,000 वर्ग फुट में बने प्रशिक्षण हॉल और छत पर भोजन क्षेत्र निर्मित है, रो ई अध्यक्ष ने कहा, ''ये सेवा के मंदिर है जिनके माध्यम से हम सैकड़ों लोगों के जीवन में परिवर्तन लाते है। उन्होंने संचिता की कहानी सुनाई जिसकी शिक्षा को उन्होंने और उनकी पत्नी राशी ने शिक्षा को समर्थन देने वाले एक धर्मार्थ संस्थान, उड़ान, के माध्यम से समर्थित किया था।'' उन्होंने कहा कि इस पूरे परिवार का जीवन बदल गया है क्योंकि वे अब एक आरामदायक जीवन जीने हेतु पर्याप्त कमाई करने में सक्षम है।

मेहता ने आगे कहा कि वह इस केंद्र से ऐसी ही और कहानियां सुनने हेतु उत्सुक है और इस बात से बेहद खुश है कि इसकी विशेष रूप से महिला-उन्मुख पाठ्यक्रम संचालित करने की योजना है। ■

रो ई अध्यक्ष शेखर मेहता ने पीडीजी गण वी जवाहर, सैम पतिबंदला, रत्न प्रभाकर ऐनी और रोटेरियन रतन राम प्रसाद की उपस्थिति में शिक्षण केंद्र का उद्घाटन किया।

Rotary PEOPLE OF ACTION

मुंबई में नाइजीरियाई बच्चे की दिल की सर्जरी

वी मुत्तुकुमारन

रोई मंडल 3141 के DG राजेंद्र अग्रवाल द्वारा इस रोटरी वर्ष (2021-22) में विदेशी बच्चों की 100 दिल की सर्जरियों को अपने प्रमुख कार्यों में से एक घोषित करने के साथ ही रोटरी क्लब मुंबई दिवास और गवर्नर के गृह क्लब, बॉम्बे क्वीन सिटी, ने जुलाई में एक नाइजीरियाई बच्चे की सर्जरी को प्रायोजित किया।

22 जुलाई को गंभीर हृदय विकार से ग्रसित नाइजीरिया की तीन साल की एमा अपनी मां लूसी ओबाज़्वे के साथ मुंबई हवाईअड्डे पर उतरी। उसे तुरंत डॉ विश्वा पांडा की देखरेख में बाई जेरबाई वाडिया अस्पताल में भर्ती कराया गया। कोविड प्रोटोकॉल के चलते 48 घंटे तक उसे आइसोलेशन वार्ड में रखने और कई तरह के टेस्ट करने के बाद उसकी सर्जरी की गई। उस बच्ची को 30 जुलाई को छुट्टी दे दी गई थी। दो 2D इको टेस्ट में सब कुछ सामान्य दिखने के बाद डॉक्टरों ने उसे वापस नाइजीरिया जाने की अनुमति दी।

मंडल एवेन्यू अध्यक्ष (इंटरनेशनल चाइल्ड सर्जरीज़) लीना शाह ने मुख्य अतिथि के रूप में ऊ्र अग्रवाल के साथ उस नाइजीरियाई बच्चे और उसकी मां के लिए एक आभासी विदाई समारोह आयोजित किया। डॉ विश्वा पांडा और अन्य डॉक्टरों के साथ ऊ्र एंडी इयोन उवेजेयन और -ऋइबिमिना अमाचरी, रो ई मंडल 9125, नाइजीरिया, ने इस आभासी बैठक को संबोधित किया। इस अवसर पर रोटरी क्लब मुंबई दिवास की अध्यक्ष विधि गुप्ता और रोटरी क्लब बॉम्बे क्वीन सिटी के अध्यक्ष अनूप गुप्ता ने भी अपनी बात रखी। अपने अनुभव को सारांशित करते हुए ओबाज़्वे ने कहा, ''यह एक सपने जैसा लग रहा है कि मैं अपनी स्वस्थ बच्ची के साथ लौट रही हूँ।'' एक तरह से उन्होंने रो ई मंडल 3141 के रोटेरियनों द्वारा इस तरह की महान परियोजनाओं को करके उससे मिलने वाली खुशी को प्रकट किया, गवर्नर के प्रमुख सहयोगी रोटेरियन वीरेंद्र विज ने कहा।

DG अग्रवाल बच्चों की हृदय सर्जरी को लेकर उत्साहित है जो गरीब परिवारों के छोटे बच्चों को आने वाली मृत्यु से बचाती है, उन्होंने कहा। ''अब तक, उन्होंने व्यक्तिगत धन या प्रायोजन की सुविधा के माध्यम से 2,500 गरीब बच्चों की नि:शुल्क सर्जरी करके उनकी मदद की है।'' रो ई अध्यक्ष शेखर मेहता ने रो ई मंडल 3141 को विदेशी बच्चों की 100 हृदय सर्जरियाँ करने का लक्ष्य दिया है। DG ने इस चुनौती को स्वीकार किया जो ''यह साबित करेगी कि अतीत में हमें दूसरे देशों से निधीयन की मदद मिल

बाएं से: एजी दीपा गोयनका, डीजी राजेंद्र अग्रवाल, लुसी ओबाज़वे उनकी बच्ची एम्मा, रोटेरियन सुमन अग्रवाल और मंडल एवेन्यू चेयर (इंटरनेशनल सर्जरी) लीना शाह।

DG राजेंद्र अग्रवाल ने 2,500 गरीब बच्चों की मुफ्त सर्जरी या तो व्यक्तिगत फंडिंग या प्रायोजकों की सुविधा के माध्यम से मदद की है।

बेबी गर्ल एम्मा और उसकी मां लुसी ओबाज़वे शैल्य चिकित्सा के बाद नाइजीरिया लौटी।

रही थी, लेकिन अब हम दुनिया भर के मरीजों की मदद करने में सक्षम है, विज ने कहा। यह माना जा सकता है कि नाइजीरिया की बेबी इमैनुएला नवंबर 2020 में रो ई मंडल 3141 की मदद से अपने दिल का ऑपरेशन कराने वाली पहली विदेशी बच्ची थी।

मुंबई में विश्व स्तरीय अस्पतालों की बहुलता और 110 से अधिक क्लब एवं 6,000 से अधिक सदस्यों के साथ, जिनमें से अधिकांशतः उच्च नेटवर्थ वाले व्यक्ति है, ''हम दुनिया भर के गरीब बच्चों के जीवन को बचाने के लिए हृदय सर्जरी के क्षेत्र में अग्रणी भूमिका निभाने में सक्षम है।'' DG अग्रवाल की अगले सात महीनों में अफ्रीकी बच्चों के दिल की कम से कम 50 सर्जरी करने की योजना है। अग्रवाल ने कहा, ''रोटेरियनों द्वारा लूसी और उसके बच्चे का नाइजीरियाई हवाई अड्डे पर जोरदार स्वागत किया गया जिससे यह पल उस मां के लिए एक विशेष क्षण बन गया।'' उन्होंने इस सर्जरी परियोजना को सफल बनाने में अपनी एवेन्यू अध्यक्ष लीना के नेतृत्व वाली इस मंडल टीम की प्रशंसा की। ■

देवनार रोटरी क्लब ने स्कूली बच्चों को टैब उपहार में दिए

टीम रोटरी न्यूज़

रोटरी मंडल 3142 के तहत, रोटरी क्लब देवनार ने हाल ही में मुंबई की एक झुग्गी बस्ती के बीच स्थित सुभाषचंद्र बोस विद्यामंदिर में कक्षा 7 में पढ़ने वाले 10 शिक्षकों और 105 छात्रों को 8 इंच के टैब भेंट किए। प्रोजेक्ट हेड रोहन डिसूजा ने कहा, ''हम गैजेट्स के जीवन काल को ध्यान में रखते हुए तीन साल बाद टैब को बदल देंगे'', जो क्लब के अध्यक्ष सुधीर मेहता के साथ 'हर एक, दे एक' की परिकल्पना के साथ इस प्रोजेक्ट को चला रहे हैं। सेवेक्स टेक्नोलॉजीज़ ने टैब की लागत को प्रायोजित किया है और कोटक शिक्षा फाउंडेशन इसके उपयोग पर छात्रों और शिक्षकों को प्रशिक्षित करेगा।

क्लब पिछले आठ वर्षों से इस स्कूल से जुड़ा हुआ है और 'हैप्पी स्कूल प्रोजेक्ट' के तहत विभिन्न सामग्री दान कर चुका है। ''हमारे बच्चे स्मार्ट हैं, लेकिन उनके पास कॉन्वेंट किड्स के साथ प्रतिस्पर्धा करने के लिए आवश्यक संसाधन नहीं हैं।'' स्कूल प्रिंसिपल काले ने कहा, ये टैब और ट्रेनिंग से मेधावी छात्रों को चमकने और सफल होने का मौका मिलेगा। ■

Rotary PEOPLE OF ACTION

सौर लैंप कूमाती आदिवासियों के जीवन में रोशनी लाते है

वी मुत्तुकुमारन

जब फॉरेस्ट रेंजर मणिकंदन ने रोटरी क्लब सेलम सेंट्रल (रो ई मंडल 2982) के पूर्व अध्यक्ष सुरेशकुमार को वालपराई तालुक के कूमाती आदिवासियों की दुर्दशा के बारे में बताया, तो क्लब के सदस्यों को अनामलाई टाइगर रिजर्व, जो जंगली जानवरों और लुप्तप्राय प्रजातियों का एक संरक्षित आवास है, में रहने वाले इस आदिम समुदाय द्वारा सामना की जाने वाली दैनिक कठिनाइयों के बारे में कोई जानकारी नहीं थी। ''जल्द ही, हमें रेंजर से एक पत्र मिला जिसमें टाइगर रिजर्व की कूमाती बस्ती में रहने वाले 36 आदिवासी परिवारों की दयनीय स्थिति का विवरण था। सरकार ने उन्हें बिजली या कंक्रीट के घर उपलब्ध नहीं कराए क्योंकि वे संरक्षित वन्यजीव क्षेत्र में रहते है'', PDG आर वासु, ARRFC कहते है।

पत्र मिलने के बाद, वासु के नेतृत्व में एक चार सदस्यीय सर्वेक्षण दल ने पोलाची से 65 किमी दूर स्थित आदिवासी बस्ती का दौरा किया। ''हमने उनसे बातचीत करके उनकी बुनियादी आवश्यकताओं की एक संक्षिप्त सूची बनाई और जाना कि उनके जीवन को आसान बनाने के लिए क्या किया जा सकता है। इस वन्यजीव क्षेत्र में बिजली की आपूर्ति और मकान प्रतिबंधित है। इसलिए हमने उनकी मिट्टी की झोपड़ियों में सौर स्ट्रीट लाइट और सौर लैंप लगाने का फैसला किया'', वासु याद करते है। सर्वेक्षण टीम के वापस जाने के बाद, क्लब ने इकट्ठा की गई जानकारी पर काम करते हुए अपनी आदिवासी उत्थान परियोजना को आकार दिया।

2,000 लीटर की पानी की एक टंकी स्थापित की गई और पानी भरने के लिए ऊंचे पहाड़ों से एक

PDG आर वासु, (बाएं से) मंडल सचिव राजेश, DG के सुंदरलिंगम और क्लब अध्यक्ष तमिल मोहन की उपस्थिति में एक आदिवासी महिला को आवश्यक चीज़ों का एक बैग देते हुए।

पाइपलाइन बिछाई गई ताकि हर एक आदिवासी झोपड़ी तक टंकी का पानी लगातार पहुँच सके। ''20 सोलर स्ट्रीट लाइटों और प्रत्येक झोपड़ी में एक सौर लैंप के साथ, अब उनके पास पर्याप्त रोशनी है और उन्हें बाघों एवं अन्य जंगली जानवरों के हमले से डरने की जरूरत नहीं है। इस रोशनी ने उनके जीवन के अंधकार को दूर किया है'', वासु मुस्कुराते है। लेकिन आदिवासियों को अपनी आजीविका अर्जित करने हेतु वालपराई या अनामलाई पर्वत श्रृंखला एवं एक वन्यजीव अभ्यारण के एक हिस्से टॉपस्लिप तक 12 किमी पैदल चलना पड़ता है। ''यहाँ सड़क परिवहन की कोई संभावना नहीं है क्योंकि यह सख्त कानून प्रवर्तन वाला एक घना जंगल है।''

DG के सुंदरलिंगम ने क्लब अध्यक्ष तमिल मोहन, सचिव राजेश, वासु, पूर्व अध्यक्षों के राजेंद्रन और सुरेशकुमार सहित 10 रोटेरियनों के साथ कूमाती का दौरा किया और 100 बरसाती, प्रत्येक परिवार को खाना पकाने के दो बर्तन, सोने के लिए चटाई, चादर, ₹1000 की लागत वाली किराने की थैलियाँ और 100 सब्जी के बीज के पैकेट सहित कई आवश्यक चीजें दान की। ''हम जल्द ही झोंपड़ियों की मामूली मरम्मत करेंगे। लेकिन हम ऐसे घर प्रदान नहीं कर सकते जो इस स्थान पर प्रतिबंधित है'', वासु कहते है। ₹3.5 लाख की लागत वाली आदिवासी उत्थान परियोजना को ₹45 लाख की अनुमानित लागत के साथ रो ई मंडल 3203 के समर्थन से 16 अन्य स्थानों पर दोहराया जाएगा। वित्त पोषण वैश्विक अनुदान और सदस्यों के योगदान के मिश्रण से किया जाएगा। ''हम इस सम्पूर्ण परियोजना को अगले रोटरी वर्ष से पहले पूरा कर लेंगे।''

धन्यवाद ज्ञापन

सभी 36 परिवारों के चेहरों पर खुशी थी और लाभार्थियों द्वारा आयोजित धन्यवाद ज्ञापन समारोह में सभी खुशी से झूम रहे थे। ''अब हमारे दैनिक जीवन में कोई अंधेरा नहीं है। हमारी झोपड़ी साफ है, हमारे पास निरंतर जल आपूर्ति की व्यवस्था है और हम अच्छी चटाइयों पर सो रहे है'', आदिवासी प्रमुख मणि (60) ने कहा। लेकिन उनकी मुश्किलें अभी खत्म नहीं हुई है। प्रत्येक आदिवासी को सरकार की ओर से साल के तीन महीने ₹200 की दैनिक मजदूरी और मुफ्त राशन मिलता है। ''लेकिन उनकी बुनियादी आवश्यकताएं अभी तक पूरी नहीं हुई है और वे बहुत ही आदिम जीवन व्यतीत कर रहे है'', वासु आगे कहते है। ■

हुबली में दृष्टिबाधित लोगों के लिए स्मार्ट विजन चश्मा

टीम रोटरी न्यूज़

रोटरी मंडल 3170 के तहत, रोटरी क्लब हुबली विद्यानगर ने रो ई मंडल 3232 के तहत, रोटरी क्लब मद्रास ईस्ट (आरसीएमई), 'प्रोजेक्ट दृष्टि' से प्रेरित होकर, प्रोजेक्ट 'द आई स्टोरी' लॉन्च किया, जिसके तहत क्लब ने स्मार्ट हेल्थ ग्लोबल द्वारा डिजाइन किए गए स्मार्ट विजन ग्लासेस (एसवीएस) का दान बेंगलुरु की एक आईटी कंपनी ने आठ दृष्टिबाधित छात्रों को किया। ''आरसीएमई ने हमें निर्माताओं के संपर्क में रहने तथा मदद की और प्रक्रिया के माध्यम से हमारा मार्गदर्शन किया। प्रत्येक डिवाइस की कीमत ₹25,000 है।'' हुबली का वीआरएल लॉजिस्टिक्स, अपने सीएसआर उद्यम के हिस्से के रूप में हमारे साथ साझेदारी कर रहा है'', क्लब अध्यक्ष महिमा मोहित कहती हैं।

दृष्टिबाधित छात्रों के लिए चश्मों के वितरण समारोह में क्लब अध्यक्ष महिमा मोहित (बाएं से तीसरी) के साथ DG गौरीश धोंड।

उन्होंने स्मार्ट हेल्थ ग्लोबल के सीईओ रामू मुथांगी के साथ बातचीत करने के उद्देश्य से अपने मंडल के क्लबों के लिए जूम सम्मेलन की मेजबानी की। उन्होंने कहा, कई क्लब इस परियोजना को लेना चाहते हैं और डीजी गौरीश धोंड ने थोक आपूर्ति के लिए जांच की है।

इस परियोजना की प्रतिक्रिया से उत्साहित, आरसीएमई क्लब के अध्यक्ष एम श्रीनिवास राव कहते हैं, ''हमें खुशी है कि हमारी परियोजना दृष्टिहीन लोगों के जीवन को बदलने के लिए उत्प्रेरक बन गई है। रोटरी समाचार में परियोजना प्रकाशित होने के बाद मुझे बहुत सारी पूछताछ मिली है।'' ■

Rotary PEOPLE OF ACTION

अमेरिकी सेमेरिटन चिकित्सा उपकरण देकर ग्रामीण भारत की मदद करते हैं

टीम रोटरी न्यूज़

रोटरी क्लब मइलाडदुराई प्राइड द्वारा मइलाडदुराई जीएच को BiPAP/CPAP *मशीनें दान की गयी।*

कोविड महामारी के दौरान, रोटरी क्लब सिलिकॉन वैली फॉर ग्लोबल इम्पैक्ट और इंडियन कोविड डजद, अमेरिका का एक स्वैच्छिक संगठन जिसमें वैज्ञानिक, चिकित्सक, इंजीनियर, नीति-निर्माता आदि शामिल है, धन संचयन हेतु एक साथ आए और भारत के दूरस्थ एवं ग्रामीण इलाकों में प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों के उपयोग के लिए BiPAP/CPAP चिकित्सा उपकरण भेजें जो एक प्रकार का साधारण वेंटिलेटर होता है।

रो ई मंडल 2981 के IPDG बालाजी बाबू ने बताया कि इनमें से प्रत्येक मशीन की कीमत लगभग ₹70,000 है और यह दो हिस्सों में आती है जिन्हें अलग किया जा सकता है। यह मशीन चीरफाड़ मुक्त होती है और यह एक वेंटिलेटर का अधिक बुनियादी रूप है जिसे अमेरिकी रोटेरियनों और अन्य परोपकारी लोगों द्वारा जरूरतमंद एवं पर्याप्त चिकित्सा उपकरणों से वंचित दूरस्थ एवं ग्रामीण प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र के रोगियों को राहत प्रदान करने के उद्देश्य से दान किया गया था।

नेट पर उपलब्ध जानकारी के अनुसार, BiPAP का उपयोग मुख्य रूप से हृदय, फेफड़े और तंत्रिका संबंधी विकारों के इलाज हेतु किया जाता है जिन्हें नींद के दौरान संरचित वायुमार्ग समर्थन की आवश्यकता होती है। CPAP और BiPAP दोनों मशीनें कई प्रकार की सहायक सामग्रियों के साथ उपलब्ध होती है। इन मशीनों को ग्रामीण क्षेत्रों में देने का फैसला किया गया जहाँ कोविड-संबंधी बीमारियों के अलावा विशेष रूप से बच्चों की अन्य बीमारियों के

लिए भी इनकी आवश्यकता होती है, बालाजी कहते है।

यह एक निरंतर चलने वाली परियोजना है और पहले ही 126 मशीनें प्राप्त कर ग्रामीण क्षेत्रों को दान की जा चुकी है। वह आगे कहते है कि रोटरी क्लब सिलिकॉन वैली ग्लोबल इम्पैक्ट के PDG रमेशन हरिहरन, जो केरल के पलक्कड़ के रहने वाले है और जिन्होंने करईकल में एक परियोजना करने के लिए पहले उनके साथ काम किया था, ज़ूम बैठक के ज़रिए उनके संपर्क में आए। उन्होंने वालन्टीर्स फ्रॉम यूनाइटेड स्टेट्स ऑफ अमेरिका एंड इंडिया (VUIA) नामक एक संयुक्त पहल के माध्यम से धन जुटाने, मशीने प्राप्त करने और उन्हें भारत भेजने के लिए उनके साथ समन्वय किया। जहाँ कुछ मशीनें चंडीगढ़, बेंगलुरु और हैदराबाद के पास के ग्रामीण क्षेत्रों को दी गई, वहीं तीन मशीनें जुलाई 2021 में त्रिक्क मयिलादुथरई, तमिलनाडु को दी गई है और बाकि रो ई मंडल 2981 के कई दूरस्थ प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों को दी गई जिनमें कोडइकनल, ऊटकामुंड आदि के पास के पहाड़ी इलाके शामिल है। ■

मशीन जिसे अमेरिकी रोटेरियनों और अन्य परोपकारी लोगों द्वारा जरूरतमंद एवं पर्याप्त चिकित्सा उपकरणों से वंचित दूरस्थ एवं ग्रामीण प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र के रोगियों को राहत प्रदान करने के उद्देश्य से दान किया गया था।

साक्षरता परियोजनाओं के लिए वैश्विक अनुदान पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम

किरण ज़ेहरा

बुनियादी शिक्षा और साक्षरता (BEL) परियोजनाओं हेतु वैश्विक अनुदान के लिए अनुमोदन प्राप्त करने को लेकर रोटेरियनों को शिक्षित करने हेतु, रो ई मंडल 3232 के रोटरी एक्शन ग्रुप - BEL ने एक माह का ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रोजेक्ट विद्यार्थी - स्थानीय और वैश्विक आयोजित किया। ''बहुत से रोटेरियन सोचते है कि साक्षरता परियोजनाएं बस किताबें, स्टेशनरी या कक्षा के लिए फर्नीचर खरीदना का नाम है। लेकिन साक्षरता में और भी बहुत कुछ है। आप योग या गायन के माध्यम से सिखा सकते है। विद्यार्थी कार्यक्रम से रोटेरियनों को समग्र साक्षरता परियोजनाओं को समझने और उनके लिए योजना तैयार करने हेतु दुनिया भर के संसाधनों तक पहुंचने में मदद मिलेगी'', वसंती रंगनाथन कहते है जो एक कैडर सदस्य के रूप में इएड परियोजनाओं का ऑडिट करते है। उन्होंने रोटरी क्लब जोहन्सबर्ग, रो ई मंडल 9400, का उद्धरण दिया जिसने छात्रों की संज्ञानात्मक क्षमता बढ़ाने के लिए पोषण पर एक वैश्विक अनुदान परियोजना लागू की थी। जहाँ परियोजना की मापनीयता और परिणाम मायने रखते है, वहीं रोटेरियनों को यह भी समझना चाहिए कि उनकी परियोजना का निरीक्षण और मूल्यांकन कैसे किया जाएगा।

रोटेरियनों और गैर-रोटेरियनों सभी के लिए उपलब्ध इस 30-दिवसीय और 90 घंटे के कार्यक्रम में विभिन्न इएड परियोजनाओं पर सत्र शामिल थे जिसमें नृत्य, संगीत, संबंध, संचार, धर्म और मूल्यों के माध्यम से उनकी प्रमुख विशेषताओं पर प्रकाश डाला गया जिससे सीखने की इन हितकारी पहलों को डिजाइन करने में मदद मिली।

इस ऑनलाइन कार्यक्रम ने एक विशेष स्मृति चिन्ह, विद्यार्थी मग, की बिक्री के माध्यम से ₹7,700 एकत्रित किए जिसे रोटरी क्लब चेन्नई, रोटरी क्लब माम्बलम और रोटरी क्लब अंबत्तूर की साक्षरता परियोजनाओं में प्रदर्शित किया जाएगा। DG जे श्रीधर ने मंडल में साक्षरता परियोजनाओं के लिए उपयोग की जाने वाली 25,000 डॉलर की एक विद्यार्थी अक्षय निधि की घोषणा की। इस कार्यक्रम में 115 वक्ता थे और सभी 60 सत्र यूट्यूब पर अपलोड किए गए थे।

अपने संदेश में, रो ई अध्यक्ष शेखर मेहता ने कहा कि इस तरह के प्रशिक्षण कार्यक्रमों को केवल सितंबर (BEL माह) में आयोजित करने के बजाय बारम्बार आयोजित करना चाहिए जिससे कि रोटेरियनों और क्लबों को साक्षरता परियोजनाओं को समग्र रूप से समझने और उनकी योजना तैयार करने में मदद मिलेगी। ■

पूर्वोत्तर भारत के भावी डॉक्टरों के लिए एक मेडिकल कॉलेज

दीपाली बोरठाकुर और
शिल्पी सुधा गोस्वामी

उनका मानना था कि आशा सपनों में निहित होती है और एक शानदार सपने के साथ, उन्होंने पूर्वोत्तर भारत के सर्वश्रेष्ठ निजी राज्य विश्वविद्यालयों में से एक - असम डाउन टाउन यूनिवर्सिटी (AdtU) - की स्थापना की। यह रो ई मंडल 3240 के पूर्व मंडल गवर्नर एवं AdtU के संस्थापक-कुलपति और डाउनटाउन अस्पताल के रोटेरियन डॉ नरेंद्र नाथ दत्ता है। एक छोटे से गाँव से आने के बावजूद भी, उन्होंने गुवाहाटी मेडिकल कॉलेज से एमबीबीएस और एम्स, नई दिल्ली, से पोस्ट-ग्रेजुएशन (ENT) करके अकादमिक प्रतिभा हासिल की। माइक्रोसर्जरी में उच्च अध्ययन के लिए वह यूके भी गए।

GMCH में 14 साल पढ़ाने के बाद, उन्होंने वहाँ से इस्तीफा देकर डाउन टाउन अस्पताल शुरू किया जो पूर्वोत्तर भारत का पहला NABH मान्यता प्राप्त अस्पताल है जहाँ मेडिकल कॉलेज के 27 सेवानिवृत्त शिक्षकों ने प्रारंभिक चरण में सलाहकारों के रूप में काम किया जिससे इस अस्पताल को अधिक प्रसिद्धि मिली।

रोटरी क्लब गुवाहाटी द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम में एक वयस्क शिक्षार्थी को पीडीजी नरेंद्र नाथ दत्ता एक कार्यात्मक साक्षरता पूर्णता प्रमाण पत्र देते हुए।

वह 1974 में रोटरी से जुड़े और 1995-96 में मंडल गवर्नर के रूप में कार्य किया। उन्हें 2013-14 में विशिष्ट सेवा पुरस्कार मिला। उन्होंने एक रो ई कार्यक्रम के तहत एक रोटरी स्वयंसेवी माइक्रोसर्जन के रूप में केन्या का दौरा किया और वहाँ पर एक महीने तक रहे। वह दुनिया के सबसे बड़े नदी द्वीप - माजुली - में कटाव की समस्या का अध्ययन करने और एक रिपोर्ट प्रस्तुत करने के लिए दक्षिण अफ्रीका से एक रोटरी स्वयंसेवक एकार्ड मुलर को साथ लाए।

उन्होंने 2010 में AdtU की स्थापना की। विभिन्न पाठ्यक्रम और कार्यक्रम उपलब्ध होने के बाद भी इस विश्वविद्यालय की ताकत इसका नर्सिंग विभाग, पैरामेडिकल और स्वास्थ्य देखभाल में MBA है। वह और उनकी पत्नी वंदना रोटरी क्लब गुवाहाटी के सदस्य है।

यह विश्वविद्यालय हर साल विभिन्न नर्सिंग कार्यक्रमों में 100 प्रतिशत प्लेसमेंट के साथ 240 छात्रों का नामांकन करता है। 19 पराचिकित्सक पाठ्यक्रमों के संकाय में डॉक्टर भी शामिल है ताकि छात्रों को इस चिकित्सीय क्षेत्र में नवीनतम ज्ञान के साथ अपडेट किया जा सके।

गुवाहाटी से 16 किमी दूर पानीखैती में ब्रह्मपुत्र नदी की तलहटी में फैली 80 एकड़ भूमि पर स्थापित यह संस्थान पूर्वोत्तर के शीर्ष चिकित्सा संस्थानों में से एक है जो छात्रों को पेशेवर और अकादमिक उत्कृष्टता का एक अनूठा मिश्रण प्रदान करता है। इस हरे-भरे परिसर में दुर्लभ किस्मों के 10,000 पेड़ है जिनमें 1,000 ऑर्किड, 100 नीम के पेड़, 100 नारियल के पेड़, सुपारी के पेड़, अखरोट के पेड़, अदरक, हल्दी, नींबू के बगीचे और कई अन्य पेड़ शामिल है।

इस विश्वविद्यालय में एक सौर ऊर्जा संयंत्र, चार खंडों में वर्षा जल संचयन प्रणाली और 5,000 सीटों वाला एक थिएटर मौजूद है जो विभिन्न तकनीकी कार्यक्रमों, प्रतियोगिताओं, DJ नाइट्स और विशेष प्रदर्शनों की मेजबानी करता है। AdtU ने हमेशा विश्वविद्यालय के मामलों में महिलाओं की भागीदारी को प्रोत्साहित किया है।

अपने दौरे के दौरान, केंद्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्री स्मृति ईरानी को यह जानकर सुखद आश्चर्य हुआ कि महिला संकाय और छात्राओं

की संख्या पुरुषों से अधिक है और छात्राओं का प्रदर्शन उनके समकक्षों से बेहतर है।

इन पांच छात्रावासों में 600 लड़कियां और 300 लड़के रहते है। छात्रों और संकायों के लिए इनडोर स्विमिंग पूल, बास्केटबॉल मैदान, चार बैडमिंटन कोर्ट, योग केंद्र, व्यायामशाला और फुटबॉल मैदान आदि जैसी सुविधाएं उपलब्ध है।

AdtU उन्नत भारत अभियान के तहत आसपास के छह गांवों में रोटरी क्लब गुवाहाटी के सहयोग से वयस्क साक्षरता कार्यक्रम चला रहा है। छात्र ग्रामीणों के लिए जीवन कौशल, शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य कार्यशालाओं का आयोजन करते है।

विश्वविद्यालय के छात्र महिलाओं को सैनिटरी नैपकिन प्रदान करते हुए।

प्रत्येक वर्ष इस विश्वविद्यालय में 2,500 से अधिक बच्चे नामांकित होते है और अब तक AdtU से 2,000 बच्चे यूजी और PDG दोनों चिकित्सा पाठ्यक्रमों से उत्तीर्ण हुए है। मैं रोटेरियनों को हमारे परिसर में आने के लिए आमंत्रित करता हूँ। पर्यावरण के अनुकूल एक विश्वविद्यालय बनाने के PDG नरेंद्र नाथ दत्ता के सपने ने असम और अन्य दूर-दराज के क्षेत्रों के आम लोगों की AdtU में मिलने वाली गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के माध्यम से डॉक्टर और पराचिकित्सक बनने के अपने सपने को साकार करने में मदद की है।

लेखक असम डाउन टाउन यूनिवर्सिटी में अंग्रेजी पढ़ाते है

2022 ह्यूस्टन कन्वेंशन

अपरंपरागत ह्यूस्टन

मियोकी वॉकर

2022 रोटरी इंटरनेशनल सम्मेलन, 4 से 8 जून के लिए ह्यूस्टन का दौरा करते समय, यह पता लगाने के लिए कुछ समय निकालें कि इस शहर को क्या विशिष्ट बनाता है - या यूँ भी कह सकते हैं कि इसे क्या विचित्र बनाता है।

ह्यूस्टन को दुनिया के 'कलात्मक कारों की राजधानी' कहा जाता है। कलात्मक कार म्यूज़ियम देखें, जिसमें फ़ैक्टरी-निर्मित कारों को प्रदर्शित किया गया है, जिन्हें विस्तृत रूप से रचनात्मक टुकड़ों में बदल दिया गया है। यह संग्रहालय एक प्रकार की विध्वंसकारी कला को स्थान देता है, जिसे ऐतिहासिक रूप से ललित कला संस्थानों से बाहर रखा गया है, जबकि उन स्थानों पर प्रकाश डाला गया है जहां व्यक्ति, राजनीति और संस्कृति मिलते हैं।

एक व्यक्ति के परिकल्पना की पराकाष्ठा का उदाहरण देखने के लिए, ह्यूस्टन के ईस्ट एंड में 'संतरे के शो' पर जाएं। संतरे के प्रति उनके प्रेम और अच्छे पोषण से प्रेरित, डाक कर्मचारी जेफ मैककिसैक के 3,000 वर्ग फुट हस्तनिर्मित आकर्षण में एक तालाब, मंच, संग्रहालय, शुभकामनाओं का कुआँ और उपहार की दुकानों सहित बहुत-सी रंगीन संरचनाएं हैं। इसे संयुक्त राज्य अमेरिका में सबसे महत्वपूर्ण लोक-कला प्रतिष्ठानों में से एक कहा गया है।

ह्यूस्टन की एक और उल्लेखनीय विषमता का उदाहरण है, प्रसिद्ध 'बीयर कैन हाउस'। 1968 में, रेलकर्मी जॉन मिल्कोविच ने एक प्रोजेक्ट शुरू किया, जिसने उनकी रचनात्मकता को बीयर के प्रति उनकी अत्याधिक आत्मीयता के साथ जोड़ दिया। उन्होंने कला का एक आश्चर्यजनक और कार्यात्मक रूप से पेश करने के लिए अपने घर के बाहरी हिस्सों को चपटे बियर के डिब्बों से सजाया। 'रिप्लेय के विश्वास करो या नहीं!' का अनुमान है कि घर में 50,000 से अधिक बियर के डिब्बे इस्तेमाल हुए हैं, जिन्हें पर्दे, दीवारों, हिंडोला, और बहुत-सी चीज़ों में बदल दिया गया है। अब इसे ही हम आविष्कारशील पुनर्चक्रण कहते हैं।

अधिक जानने और रजिस्टर करने के लिए *convention.rotary.org* पर देखें।

Rotary PEOPLE OF ACTION

मदुरई में दृष्टिहीन परिवारों के लिए रोटरी घर

वी मुत्तुकुमारन

तमिलनाडु में मदुरई के पास सक्कीमंगलम गांव के 49 दृष्टिबाधित परिवारों के लिए रोटेरियन एस एल सेतुमाधव इंसान के रूप में भगवान है। रोटरी क्लब मदुरई स्टार, रो ई मंडल 3000, के यह भले इंसान उन सभी वंचित परिवारों को बुनियादी आवश्यकताऐं और सुविधाएं उपलब्ध करवा रहे है जिनके कमाने वाले सदस्य या परिवार के सभी सदस्य दृष्टिहीन है। ''2004 में ये लोग आवासीय घरों के लिए एक असामान्य अनुरोध लेकर मेरे पास आए; हालांकि यह एक कठिन कार्य था, फिर भी मैंने इसे एक चुनौती के रूप में लिया'', सेतुमाधव याद करते है जो कम लागत वाली आश्रय परियोजना के प्राथमिक संपर्क है। तब तक, वे छप्पर वाले घरों में रह रहे थे जिसमें बाहरी खतरों का डर बना रहता था।

उन्होंने दो साल तक जिला कलेक्ट्रेट के कई चक्कर लगाए ताकि ''समाज से अलग रहने वाले इन वंचित परिवारों की दयनीय स्थिति की ओर उन सभी का ध्यान आकर्षित किया जा सकें जिन्होंने इन लोगों से आँखें मूँद ली थी'', वह कहते है। अगस्त 2006 में तमिलनाडु के तत्कालीन ग्रामीण विकास मंत्री एम के स्टालिन, जो अब मुख्यमंत्री है, द्वारा लाभार्थियों को नि:शुल्क पट्टे सौंपे गए जिससे सेतुमाधव और उनकी टीम को काफी राहत मिली।

तमिलनाडु के वाणिज्यिक कर मंत्री पी मूर्ति ने मदुरै के जिला कलेक्टर अनीश शेखर (दाएं), क्लब के अध्यक्ष एल श्रीनिवासन (बाएं से तीसरे) और परियोजना समन्वयक एस एल सेतुमाधवा (बाएं से दूसरे) की उपस्थिति में एक लाभार्थी को घर की चाबी सौंपी।

एक चुनौतीपूर्ण कार्य

लेकिन असली चुनौती की तो बस शुरुआत हुई थी। संसाधनों और पैसों के संग्रहण की मदद से, उन्होंने मई 2009 से लेकर दिसंबर 2016 तक चार चरणों में ₹63 लाख की लागत से 30 घरों के निर्माण का कार्य पूर्ण किया। क्लब ने शेष घरों के निर्माण में तेजी लाने के लिए करूर के PDG पी गोपालकृष्णन से मदद मांगी क्योंकि इसमें विभिन्न कारणों से विलंब हो रहा था। ''उनके मार्गदर्शन से, हमें 120,000 डॉलर (लगभग ₹87 लाख) का वैश्विक अनुदान प्राप्त हुआ जिससे हमें परियोजना स्थल पर अन्य 15 घरों का निर्माण करने में मदद मिली'', सेतुमाधव कहते है। रोटरी क्लब द हिल्स-केलीविले, रो ई मंडल 9685, ऑस्ट्रेलिया, उनका वैश्विक साझेदार है। पहले बनाए गए 30 घरों की तुलना में बाद में निर्मित सभी 15 घरों का आकार बड़ा था क्योंकि ऑस्ट्रेलियाई झऊ्रू का ध्यान इस बात पर अधिक था कि दृष्टिहीन जोड़ों को एक अलग कमरा मिलना चाहिए, वह मुस्कुराते है।

इन कम लागत वाले आश्रयों में दो घर एक ही दीवार साझा करते है जो 185-240 वर्ग फुट क्षेत्र में निर्मित है। ''अब तक हम 15 घरों के निर्माण में ₹1.5 करोड़ खर्च कर चुके है। हम शेष चार घरों का भी निर्माण करेंगे। तमिलनाडु के मंत्री पी मूर्ति को आश्चर्य हुआ कि रोटरी ने वो काम किया जो मुख्य रूप से सरकार की जिम्मेदारी है।'' उन्होंने स्वेच्छा से शेष घरों में से एक के निर्माण के लिए 5 लाख का दान किया। जिला कलेक्टर अनीश शेखर ने आश्वासन दिया कि नए घरों को शीघ्र अति शीघ्र सड़क, पानी और बिजली कनेक्शन दिया जाएगा।

PDG एस गोपाल, DRFC एवं PDG ए पुरुषोत्तमन ने इस परियोजना दल को सम्मानित किया। लाभार्थियों में से एक, थाई पूसम (60), घर की चाबी प्राप्त करते समय भावुक हो गए। ''लेकिन अगर अय्याह (तमिल में महोदय, सेतुमाधव के सम्मान में कहा गया एक शब्द) नहीं होते तो हमें इतना सुंदर घर नहीं मिलता, जिसे बनाना हमारी क्षमता से परे है। वह हमारे पिता है'', वह कहते है। रोटरी ब्राइट होम्स नामक ये घर कम लागत में निर्मित है और ये घर मदुरई के इस गांव के दृष्टिहीन परिवारों के जीवन में वास्तव में 'उजाला' लाए है। ■

3-दिवसीय नासिक एक्सपो में ग्रामीण महिलाओं को सशक्त बनाया गया

टीम रोटरी न्यूज़

रो ई मंडल 3030 के तहत, रोटरी क्लब नासिक गोदावरी द्वारा माइक्रोक्रेडिट के माध्यम से वंचित परिवारों और आदिवासी समुदायों की महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए 'रोटरी गोदा हाट' नामक तीन दिवसीय प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

एक्सपो का उद्देश्य कम आय वाले परिवारों की महिलाओं द्वारा बनाए गए उत्पादों को प्रदर्शित करना और बेचना था। क्लब के अध्यक्ष राजेश सिंघल ने कहा, ''इस आयोजन से उन्हें बाजार की स्थितियों का सामना करने और पेशेवर रूप से अपने कारोबार को प्रबंधित करने का आत्मविश्वास भी मिला।'' सभी 30 स्टॉल्स पर कई तरह के होममेड प्रोडक्ट्स जैसे मसाले, खाने-पीने की चीजें, पूजा के सामान, महिलाओं के सामान, कपड़े, आदिवासियों द्वारा उगाई जाने वाली चावल की वैरायटी, हैंडमेड लिफाफे, फाइल्स, इको फ्रेंडली सैनिटरी नैपकिन और कैरी बैग्स प्रदर्शित किए गए। उन्होंने कहा, ''हालांकि कुछ स्टालों को मुफ्त में चलाने के लिए दिया गया, लेकिन बाकी की 100 महिलाओं को माइक्रोक्रेडिट-फंड से पैसे जुटाकर कम किराये पर चलाने के लिए दिया गया था।''

एक्सपो में एक स्टॉल पर डीजी रमेश मेहर और डीजीएन आशा वेणुगोपाल (डीजी मेहर के बाईं ओर)।

क्लब की माइक्रोक्रेडिट पहल तीन महीने में 40 महिलाओं तक पहुंच चुकी है और इससे आने वाले महीनों में 60 अन्य लोगों को और फायदा होगा। गोदा हाट एक्सपो ने 4,000 लोगों को आकर्षित किया और अधिकांश आगंतुकों ने स्टालों से सामग्री खरीदी जिससे लाभार्थियों के चेहरे पर खुशी फैल गई। डीजी रमेश मेहर और डीजीएन आशा वेणुगोपाल को प्रोजेक्ट लीडर डॉ मीनल पालोद और सुरेखा महाले ने सम्मानित किया। ■

पोलियो जागरूकता पैदा करने के लिए GPS कला

किरण ज़ेहरा

चेन्नई के रोटेरियनों की साइक्लिंग फैलोशिप के साथ रोटरी क्लब गिंडी, रो ई मंडल 3232, के सदस्यों ने एंड पोलियो नाउ संदेश देने वाली एक GPS कला के प्रदर्शन के लिए पूरे चेन्नई में 16 किमी की यात्रा की। GPS कला में साइकिल चलाते हुए, चलते हुए, बाइक या कार चलाते हुए ग्लोबल पोजिशनिंग सिस्टम (GPS) के माध्यम से लोकेशन रिकॉर्ड करते हुए उस ट्रैक पर कोई चित्र या संदेश बनाया जाता है। इस GPS कला परियोजना को DG जे श्रीधर ने हरी झंडी दिखाई।

GPS कला को पूरा करने के लिए स्त्रव ऐप का उपयोग करके एक मार्ग बनाया गया था। पच्चीस साइकिल चालकों ने 12 घंटे तक एक ही कतार में सवार होकर *इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स* में नाम दर्ज कराने का प्रयास किया जो अब मूल्यांकन चरण में है। प्रमुख साइकिल चालक और क्लब के सदस्य नरेश कुमार के एन कहते है, ''चेन्नई शहर हमारा कैनवास था, हमारी चाल हमारा रंग थी, और हमारी साइकिलों ने ब्रश की तरह काम किया।'' भले ही पारंपरिक मायनों में यह कला नहीं है ''लेकिन हमने GPS के दिखाए रास्तों पर चलकर एंड पोलियो नाउ को स्केच करने के लिए 16 किमी की यात्रा की।''

वह बताते है कि सबसे चुनौतीपूर्ण बात योजना तैयार करने की थी। ''सैन फ्रांसिस्को जैसे शहर, जहाँ की सड़कें ब्लॉक दर ब्लॉक योजनाबद्ध है, के उलट चेन्नई में ग्रिड और सेक्टर नहीं है जो साइकिल चालकों के लिए सुविधाजनक होते है।'' 20 घंटे की योजना बनाने और यह सुनिश्चित करने के बाद कि वहाँ कोई भी रास्ता बंद न हो, उस मार्ग को अंतिम रूप दिया गया। ''अपने गृह नगर की सवारी करना किसी जादू से कम नही है। आपको ऐसे अलग-अलग क्षेत्रों को देखने का मौका मिलता है जहां आप कभी नहीं गए।''

एक और चुनौती था मौसम। ''वो बारिश का दिन था, लेकिन रोटेरियनों और गैर-रोटेरियनों दोनों तरह के साइकिल चालकों ने जो उत्साह दिखाया वह प्रशंसनीय था'', कुमार कहते है। ■

नीचे: समापन बिंदु पर साइकिल चालक।

मालदा में क्लबफुट का इलाज

जयश्री

डॉ देबज्योति दास अपने छोटे मरीजों और उनकी माताओं के साथ।

रोटरी क्लब मैंगो सिटी मालदा, रो ई मंडल 3240, के एक सदस्य डॉ देवज्योति दास के प्रयासों की वजह से मालदा के आठ सौ असामान्य बच्चे अब सामान्य रूप से चलने में सक्षम है और बेहतर सामाजिक जीवन का आनंद ले सकते है। दास एक आर्थोपिडिक सर्जन है और 1980 के दशक में जब से उन्होंने अभ्यास करना शुरू किया तब से वह क्लबफुट से पीड़ित बच्चों का इलाज करने को लेकर उत्साहित है। क्लबफुट एक जन्मजात विकार है जिसमें एक या दोनों पैर नीचे या अंदर की तरफ मुड़ जाने के कारण वे गोल्फ क्लब की तरह दिखते है। ''पहले के दिनों में लोग अंधविश्वास, धार्मिक मिथकों और निरक्षरता के कारण इस जन्मजात विकार का इलाज कराने से हिचकिचाते थे और बच्चे बड़े होकर शारीरिक रूप से विकलांग रहते थे। अगर शुरुआती चरण में ही इसका इलाज कर लिया जाए तो इसे ठीक किया जा सकता है'', वह कहते है।

यहां तक कि कुछ बच्चों का इलाज करने के दौरान, जिसके लिए परिवार को बहुत समझाना पड़ता था, उन्होंने सोचा कि यह काम और आसान हो जाएगा यदि उन्हें इसकी वकालत के लिए कुछ समर्थन प्राप्त हो जाए और ''इस तरह मैं 2011 में रोटरी से जुड़ा।'' तब से क्लब नियमित रूप से हर साल 4-5 क्लबफुट परीक्षण एवं उपचार शिविर आयोजित करता है और उन्होंने बिना परामर्श शुल्क लिए अपने क्लिनिक में बच्चों का इलाज करना शुरू किया। क्लब स्प्लिंट सहित अन्य आवश्यक उपभोग्य सामग्रियों को प्रायोजित करता है। ''यह प्रक्रिया महंगी होती है और गरीब परिवारों पर बोझ डालती है। इसलिए जब मेरा क्लब एक सम्मानित जीवन जीने में उनके बच्चों की मदद करता है, तो वे लोग इसे एक वरदान समझते है'', दास कहते है। पोलियो प्लस राष्ट्रीय टीकाकरण दिवस के दौरान क्लब फुट सुधार पर विशेष जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जाते है ताकि माता-पिता इससे प्रोत्साहित होकर अपने बच्चे का इलाज कराने के लिए लेकर आएं।

यह सुधार प्रक्रिया लंबी होती है और 3-5 साल तक चलती है। इसमें लीगामेंट्स और टेंडन पर आहिस्ता से काम करने के बाद क्लबफुट पीड़ित की पैर की अंगुली से लेकर पेट एवं जांघ के जोड़ तक झेझ लगाया जाता है। कुछ हफ्तों बाद पैरों को धीरे-धीरे स्थिति में लाने और पूर्वावस्था में जाने से रोकने के लिए स्प्लिंट लगाए जाते है। जैसे-जैसे बच्चा बढ़ता है, पैर भी बढ़ते है और स्प्लिंट्स को चार साल तक हर तीन महीने में स्थिति अनुसार बदलने की आवश्यकता होती है। ''शुरुआती चरण में उपचार लेना ज्यादा बेहतर होता है भले ही तब बच्चा एक सप्ताह का ही क्यों ना हो क्योंकि उनकी हड्डियाँ लचीली होती है। एक वर्ष से अधिक उम्र के बच्चों की सामान्य निश्चेतनता के तहत सर्जरी करनी पड़ सकती है। स्थानीय निश्चेतनता का उपयोग नहीं किया जा सकता क्योंकि स्थिर रहने के लिए बच्चा बहुत छोटा होता है'', दास कहते है। एक बार सुधार हो जाने के बाद ये बच्चे सामान्य रूप से चल सकते है।

स्प्लिंट्स को समय पर बदलने के लिए सतर्कतापूर्वक जांच की जाती है और बारीकियों का ध्यान रखने के लिए विशेष शिविर आयोजित किए जाते है। ■

हर जगह रोटरी समान नहीं है

इंसा फोल्स्टर

रोटरी इंटरनेशनल की छत्रछाया में दुनिया भर के रोटेरियन एकजुट हैं। लेकिन उनमें क्या अंतर है? सात ज़ोन्स में विभजित रोटरी विश्व के रोटेरियन बताते हैं कि स्थानीय स्तर पर उनके लिए रोटरी संस्कृति के क्या मायने हैं।

रोटरी का नया चेहरा 'डाउन अंडर'

ऑस्ट्रेलिया में रोटरी का स्वरुप इस राष्ट्र की तरह ही है - विशाल और विविधता लिए हुए। ऑस्ट्रेलिया दुनिया का सबसे सफलतम बहुसांस्कृतिक समाज है। ओ ईस देश की लगभग आधी आबादी या तो विदेश में जन्मी थी या उनके माता-पिता में कम से कम एक विदेशी मूल का हैं। अधिकांश ऑस्ट्रेलियाई रोटरी क्लबों ने भी रो ई की नीतियों विविधता, समानता और समावेश का समर्थन कर पूरे उत्साह से इसे अंगीकार किया है और वे अपने समाज में विविध प्रकार के कई लोगों का स्वागत करते हैं।

आज जब ऑस्ट्रेलिया के प्राचीनतम क्लब, इस साल अपनी 100 वीं वर्षगांठ मना रहे हैं, उन्हें आज भी अभिजात्य क्लब कह सकते हैं - धनाढ्य और जो पारंपरिक तरीके से लंच मीटिंग्स आयोजित

घरेलू हिंसा के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए ऑस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैंड में रोटरी के शताब्दी वर्ष पर गोल्ड कोस्ट पासपोर्ट रोटरी क्लब के सदस्यों ने एक वाक आयोजित किया।

करते हैं – वहीं छोटे ग्रामीण कस्बों से ले कर तटीय समुदायों के क्लब भिन्न भिन्न तरीके से मीटिंग के लिए एकत्रित होते हैं।

क्वींसलैंड की राजधानी ब्रिस्बेन में, रोटरी क्लब वूलेनगैबा राज्य के LGBTIQ समुदाय के समर्थन में एक प्राइड क्लब को प्रायोजित करने वाला दुनिया का पहला रोटरी क्लब है। कई वर्षों से, इस क्लब ने LGBTIQ संगठनों जैसे कि क्वींसलैंड काउंसिल फॉर LGBTIQ हेल्थ एंड ओपन डोर्स यूथ सर्विस का लगातार सहयोग किया है। पिछले साल, क्लब के सदस्यों ने प्रथम रोटारैक्ट प्राइड क्लब की स्थापना की – रो ई का प्रथम।

जोन 8 में मंडल 9640 सदस्यता वृद्धि और प्रतिधारण में शीर्ष प्रदर्शन करने वाला मंडल है और इसने क्लब विकास की सीमाओं को पुनः परिभाषित किया है। फिर मंडल अध्यक्ष एंडी राजपक्षे और उनकी

टीम ने पांच नए रोटरी क्लब, दो रोटरी सैटेलाइट क्लब, तीन रोटारैक्ट क्लब, एक इंटरैक्ट क्लब और एक रोटेक्स क्लब चार्टर किया है। उन्होंने कहा, हमने 365 दिनों में अपने 58 रोटरी क्लबों में रिकॉर्ड 383 नए सदस्य जोड़े हैं, उन्होंने कहा कि उनमें से 63 प्रतिशत महिलाएं थीं और 24 प्रतिशत सदस्य 40 वर्ष से कम के थे। गोल्ड कोस्ट पासपोर्ट रोटरी क्लब और गोल्ड कोस्ट कॉर्पोरेट रोटरी क्लब की गिनती मंडल में सर्वश्रेष्ठ नवाचारों में होती है।

राष्ट्रीय स्तर पर, रोटरी की 100 वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में डाउन अंडर, (ऑस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैंड और साउथवेस्ट पैसिफिक), पूरे ज़ोन के क्लब और मंडल रोटरी 100 डाउनअंडर, *रोटरी गिवस एवरी चाइल्ड ए फ्यूचर* के समर्थन में एकत्रित हुए थे।

यह परियोजना अपनी 100 वर्ष की सेवा का उत्सव मना रही है, आगामी तीन वर्षों में यूनिसेफ के साथ साझेदारी में, दक्षिण प्रशांत के नौ द्वीप देशों में रोटावायरस, न्यूमोकोकल रोग और गर्भाशय ग्रीवा के कैंसर के खिलाफ 100,000 बच्चों का टीकाकरण करेगी। दोनों संगठन टीका लगाने के लिए, टीकाकरण कार्यक्रमों को विकसित करने और इन्हें कार्यान्वित करने के लिए स्थानीय सरकारों के साथ काम करेंगे।

हालांकि इस साल पूरे क्षेत्र में कई शताब्दी परियोजनाएं प्रस्तावित हैं, *रोटरी गिवस एवरी चाइल्ड ए फ्यूचर* वह प्रोजेक्ट है जिसमें पूरे ऑस्ट्रेलएशिया को सम्मिलित किया गया है और यह दर्शाता है कि रोटरी आज की दुनिया में प्रासंगिक है और सशक्त है।

मेगन मार्टिन (गोल्ड कोस्ट पासपोर्ट रोटरी क्लब) 2019 से रोटरी डाउन अंडर की संपादक हैं।

सेवा जीने का अंदाज़

यदि रोटरी का उद्देश्य 'विविधता में एकता' है, तो रोटरी में भारत जैसे विविधतापूर्ण देश से बेहतर उदाहरण क्या हो सकता है? 22 प्रमुख भाषाओं और हज़ारों बोलियों वाले देश में, रोटरी की भाषा एक ही रहती है – निस्वार्थ सेवा की।

भारत की आर्थिक राजधानी मुंबई में एक क्लब है रोटरी क्लब ऑफ क्वीन्स नेकलेस। इसके सदस्य विभिन्न व्यवसायों और पेशे का व्यापक प्रतिनिधित्व करते हैं। 181 सदस्यीय क्लब में काफी महिलाएं

रोटरी क्लब वूलेनगैबा राज्य के LGBTIQ समुदाय के समर्थन में एक प्राइड क्लब को प्रायोजित करने वाला दुनिया का पहला रोटरी क्लब है।

हैं और इसके सदस्यों की उम्र 40 से 70 के बीच है। युवा सदस्यों को आकर्षित करने के लिए यहां लगातार प्रयास किए जा रहे हैं।

सामाजिक सरोकार और समुदाय से सृजित संस्कृति क्लब को बांधे रखती है। सदस्यों के उदार अनुदान की वजह से आज, क्लब विशाल परियोजनाओं को हाथ में लेने में सक्षम है। व्हाट्सएप पर धन उगाहने की एक सामान्य अपील से कुछ ही घंटों में 50,000 डॉलर के संकल्प एकत्रित होना सामान्य बात है। पिछले साल, महामारी की पहली लहर में, इस क्लब ने देश में लंबे चले लॉकडाउन के समय गंभीर रूप से प्रभावित भूखे और बेघर लोगों को 10 मिलियन भोजन मुहैया कराने के लिए करीब 2 मिलियन डॉलर की एक परियोजना की थी।

इनमें से आधी राशि इसके सदस्यों, परिवारों और दोस्तों द्वारा दान में प्राप्त हुई थी। क्लब के सदस्यों में स्थानीय समाज की शिक्षा के क्षेत्र में सहायता करने, वंचितों के लिए, रियायती स्वास्थ्य सुविधाओं और ग्रामीण जनता के जीवन स्तर में सुधार कर परिवर्तन लाने का जोश है।

सौहार्द और भाईचारा इस क्लब की एक अहम् खासियत विशेषता है। महामारी से पूर्व हर महीने दो बैठक और कम से कम एक सामजिक कार्यक्रम के लिए सदस्य एकत्रित होते थे। सभी भारतीय त्योहार, और त्यौहार हैं भी बहुत, हर साल अत्यंत हर्षोल्लास के साथ मनाए जाते हैं। दिवाली के दौरान पूरा क्लब एक रात भव्य समारोह आयोजित करता है। लेकिन वर्तमान में चल रही महामारी के कारण सशरीर बैठक आयोजित नहीं की जाती , लेकिन दुनिया भर के वक्ताओं को सुनने के लिए ज़ूम मीटिंग में सदस्यों की अच्छी भागीदारी होती है। सदस्यों ने आभासी कार्यक्रम भी आयोजित किए हैं, जैसे कि

एक जादू कार्यक्रम, प्रतिभा प्रदर्शन कार्यक्रम और विभिन्न कार्यशालाएं। भारतीय लोग खाने के बड़े शौक़ीन हैं। इसलिए हर महीने स्वादिष्ट व्यंजनों की टोकरियाँ सभी सदस्यों के घरों में पहुंचाई गई थीं।

स्नेहा पाठक, सदस्य, रोटरी क्लब क्वीन्स नेकलेस मुंबई

300 नॉर्वेजियन में एक रोटेरियन

भूतपूर्व चांसलर और हापग कंपनी के प्रमुख विल्हेम कुनो ने रोटरी क्लब हैम्बर्ग की स्थापना की थी, ये जर्मन साम्राज्य का पहला रोटरी क्लब था, स्कैंडिनेविया में छह वर्ष पूर्व पहला क्लब 13 अक्टूबर, 1921 में पहले ही स्थापित हो चुका था। इडाहो के एक नॉर्वेजियन -अमेरिकी सीनेटर और रोटरी क्लब फोर्ट डॉज के एक सदस्य ओलाफ एम ओलेसन ने जून 1921 में एडिनबर्ग में रो ई सम्मेलन में भाग लिया था, फिर अपनी जन्मभूमि आये थे और वहां अपने भतीजे को रोटरी के बारे में बताया था। रॉयल गार्ड में एक कप्तान ओला फाइव ने अपने आठ दोस्तों को इकट्ठा किया और उनके साथ रोटरी क्लब क्रिस्टियानिया का गठन किया। 1924 में, उस शहर की तरह ही, क्लब ने अपना नाम परिवर्तित कर दिया और तब से इसे ओस्लो रोटरी क्लब कहा जाता है।

इसके मानद सदस्यों में क्राउन प्रिंस हाकोन मैग्नस शामिल हैं और उनके पिता किंग हेराल्ड पंचम नॉर्वे के सात रोटरी मंडलों के मानद गवर्नर हैं। ओस्लो रोटरी क्लब ने नॉर्वे में न केवल 19 क्लबों की स्थापना की है, बल्कि स्टॉकहोम रोटरी क्लब के संरक्षण में कोबेनहवन रोटरी क्लब के साथ खड़े रह कर उसके गॉडफादर की भूमिका भी निभाई है। आज, नॉर्वे रोटरी के सशक्त दुर्गों में से एक है, जिसमें 335 क्लब और लगभग 14,000 सदस्य हैं – 300 नॉर्वेजियन में एक रोटेरियन है।

क्लब अपनी बैठक की शुरुआत 'ग्लैडमेल्डिंग' के साथ करते हैं, एक निजी खुशखबरी सुना कर । इस बीच, एक सदस्य हर टेबल पर जा कर रैफल टिकट बेचता है; विजेता को वाइन मिलती है, विजेता टिकट का लकी ड्रा उस दिन के स्पीकर द्वारा निकाला जाता है। उस आय से क्लब के कोष में भी वृद्धि होती है। एक सदस्य अपने तीन मिनट के भाषण में एक समसामयिक विषय पर चर्चा करता है, इससे पहले लंच मीटिंग में दोपहर के भोजन का आनंद लेते हैं और शाम को गरमा गरम डिनर साथ करते हैं।

उत्कृष्ट डिजिटल नेटवर्क की आधारभूत संरचना को धन्यवाद है, क्लब ने विभिन्न प्रकार की वेब-आधारित कार्यों का सूत्रपात किया है। उनमें से एक 'डिजिटल मेल्टिंग पॉट उल्लेखनीय है '; नियमित नेटवर्क बैठकों में, क्लब आपस में मिल कर क्षेत्रीय और राष्ट्रीय स्तर पर वर्तमान और भावी परियोजनाओं को समायोजित करते हैं, संसाधन जुटाते हैं और इस प्रकार रोटरी परियोजना से होने वाले फायदों का दायरा बढ़ाते हैं। रोटरी क्लब फर्दर अपना ध्यान अकादमिक क्षेत्र के युवा छात्रों पर केंद्रित करता है: यह अपने क्लब में यूथ एक्सचेंज के तहत लौटने वाले छात्रों को रोटरी की सदस्यता मुफ्त प्रदान करता है। ब्योर्न रिश्मेर ने (रोटरी क्लब कर्मी वेस्ट से) अपनी

डेविड किंग, एसेक्स, इंग्लैंड के रोटरी क्लब कोलचेस्टर के पूर्व अध्यक्ष, रेनबो ट्रस्ट -एक धर्मार्थ संगठन जो गंभीर रूप से बीमार बच्चों के परिवारों का समर्थन करता है, की सारा रेवेन-लॉयड को ईस्टर एग्स सौंपते हुए।

रोटरी क्लब क्वीन्स नेकलेस, मुंबई के सदस्यों ने महामारी के दौरान ग्रामीण महिलाओं को खाद्य पैकेज वितरित किए।

मर्सिडीज की वैनिटी प्लेट पर 'रोटरी' लिखवा रखा है। रोटरी, ये डांस क्लब है क्या? उनसे पूछे गए प्रश्नों में से एक यह भी था। खैर लोग कुछ भी पूछें, पर इससे रोटरी के बारे में बताने का मौक़ा ज़रूर मिलता है, रिश्मेर कहते हैं।

काई-एक्सल आंडरड (रोटरी क्लब - हैम्बर्ग-डीचटोर) एक नॉर्वेजियन पिता और एक जर्मन मां का बेटा है। उन्होंने अपने रोटरी क्लब हैम्बर्ग-डीचटोर के पार्टनर क्लब के रूप में उरानीनबोर्ग रोटरी क्लब (ओस्लो) जीता था।

असमानता और कई आवश्यकताएं

दक्षिण अफ्रीका में फैले हुए तीन मंडल (9350, 9370 और 9400) में भौगोलिक दृष्टि से इसमें छह पड़ोसी देश, अंगोला, बोत्सवाना, इस्वातिनी साम्राज्य, लेसोथो, दक्षिणी मोज़ाम्बिक और नामीबिया शामिल हैं। एक शहरी क्लब में भाग लेना ग्रामीण क्लब में भाग लेने से बिलकुल पृथक हो सकता है। शहर के क्लबों के सदस्य पारम्परिक रूप से औद्योगिक क्षेत्र के अधिकारी वर्ग से हो सकते हैं और ज़्यादा औपचारिक होते हैं। ग्रामीण क्लबों ने ऐतिहासिक रूप से ज्यादातर मध्यम और छोटे व्यवसायिक सदस्यों को आकर्षित किया है जो बहुत ही सामाजिक हैं और कम औपचारिक हैं। हालाँकि, क्लब के दोनों स्वरुप लगातार परिवर्तित हो रहे हैं क्योंकि वे विविधता और लैंगिक समानता के लिए प्रयास कर रहे हैं। 1991 तक महिलाओं को रोटरी में प्रवेश नहीं मिलता था, लेकिन अब यह क्षेत्र 32 प्रतिशत महिला-रोटेरियन सदस्यता का दावा करता है।

दक्षिणी अफ्रीका के अधिकांश क्लब ऐतिहासिक, पारंपरिक क्लब मॉडल पर आधारित हैं। ई-क्लबों और सैटेलाइट क्लबों की अवधारणा और लचीलापन धीरे-धीरे का केंद्र बन रहे हैं।

यहाँ बहुत अधिक असमानता और गरीबी व्याप्त है और इसलिए यहां की जरूरतें भी बहुत हैं। मैं सहजता से कह सकता हूं कि रोटरी के सभी सात फोकस क्षेत्र दक्षिणी अफ्रीका के लिए पूर्णतः प्रासंगिक हैं। अगर मुझे जरूरतों को प्राथमिकता देने के लिए कहा गया, तो मैं क्षेत्रों को महत्व के अनुसार निम्नलिखित क्रम में सूचीबद्ध करूंगा: पानी और स्वच्छता, कुपोषण और बचपन का विकास, आर्थिक अवसर, शांति और संघर्ष की रोकथाम। यह क्षेत्र अंतर-देशीय समिति समझौतों के लिए बहुत ग्रहणशील है। आज तक, जर्मनी, कनाडा, भारत और यूके के मंडलों के साथ अच्छे संबंध हैं। ये संबंध केवल परियोजनाओं तक ही सीमित नहीं हैं बल्कि फ्रेंडशिप एक्सचेंज, यूथ एक्सचेंज, सांस्कृतिक आदान-प्रदान, सम्मेलनों या वेबिनार आदि भी परिपक्व हैं।

ग्रांट डेलीस मंडल 9400 के पूर्व अध्यक्ष।

जर्मनी की तुलना में अत्यंत कम पारंपरिक

अतीत में, ग्रेट ब्रिटेन ने हमेशा एक उच्छृंखल किशोर की तरह व्यवहार किया है - अभिमानी, लेकिन जिद्दी और बहुत स्वतंत्र। आखिर, हम एक द्वीप राष्ट्र हैं, जो मुख्य यूरोप के सबसे संकीर्ण बिंदु से केवल 20 मील दूर स्थित है। फिर भी ग्रेट ब्रिटेन और आयरलैंड में रोटरी के संदर्भ में, इंग्लैंड, स्कॉटलैंड, वेल्स, उत्तरी आयरलैंड और आयरलैंड गणराज्य पांच देश और दो द्वीप अपनी विशिष्टताओं और संस्कृतियों के मामले में बहुत अलग हैं। फिर भी हम सभी रोटरी के धागे से एक बंधन में जुड़े हुए हैं। ग्रेट ब्रिटेन और

आयरलैंड में लगभग 40,000 रोटेरियन हैं, और हाल के दशकों में सदस्यता में लगातार गिरावट देखी गई है। उनमें से 22 प्रतिशत महिलाएं हैं और वहां औसत आयु 71 है। लेकिन ये सामान्य समय नहीं हैं। कोविड-19 ने दुनिया भर में रोटरी के स्वरुप और प्रकृति को बदल दिया है। क्लबों की बैठक ऑनलाइन संचालित होने के साथ, धन एकत्रित करने के अवसर भी बेहद सीमित हैं।

महामारी के दौरान करीब 12.4 मिलियन ब्रिटेन वासियों ने सामाजिक सेवा कार्यों में स्वेच्छा से भाग लिया था, आयरलैंड गणराज्य में दसियों हज़ार लोग शामिल हुए। महामारी के बाद इन भावी रोटेरियनों का हमारे क्लबों में शामिल करना हमारी सबसे बड़ी चुनौती होगी, क्योंकि इन्होने स्वयंसेवा करने का स्वाद चख लिया है।

विगत 16 माह से, रोटरी क्लब अपने समाज में जरूरतमंद और अलग-थलग पड़े लोगों की मदद, सेवा सुश्रुषा और उनके लिए दवाइयां लाने का काम कर रहे हैं। उन्होंने खाद्य बैंकों का भी सहयोग किया है जो बढ़ती बेरोजगारी के कारण उपजी विषम परिस्थितियों के बावजूद विद्यमान हैं। क्लबों ने व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरण जैसे कोविड गाउन और फ्रंटलाइन कार्यकर्ताओं के लिए फेस मास्क प्रदान करने के लिए मिलजुल के टीम बनाकर एक साथ काम किया है - जिनमें से कई स्वयं भी रोटेरियन हैं।

स्वयंसेवी बनने और समुदाय में शामिल होने की यह इच्छा पिछले मई में और उजागर हुई जब यूके वालंटियर एक्सपो में रोटरी सबसे आगे थी, उपलब्धियों का दो दिवसीय डिजिटल प्रदर्शन। एक्सपो के लिए 5,500 से अधिक लोगों ने पंजीकरण कराया था - उनमें 40 प्रतिशत रोटेरियन थे - और सीखा कि कैसे स्वयंसेवा का स्वरुप और आकार किस प्रकार परिवर्तित हो रहा है। वालंटियर एक्सपो का संदेश यह था कि हमें युवा लोगों को उनके व्यस्त कामकाजी जीवन के अनुकूल अवसर प्रदान करके अगली पीढ़ी के लिए स्वयंसेवा को और अधिक प्रासंगिक बनाने की आवश्यकता है। हमें और अधिक लचीला होने की आवश्यकता है, और इसमें हमारे रोटरी करने का तरीका भी शामिल है।

जर्मनी की अपेक्षा इन द्वीपों में रोटरी काफी कम पारंपरिक है। इस लचीलेपन ने उपग्रह क्लबों, पासपोर्ट क्लबों और ऐसे क्लबों का विकास किया है जो अब औपचारिक रूप से सिर्फ रात के खाने पर नहीं मिलते हैं, लेकिन शायद रविवार की सुबह एक कैफे में ज़रूर मिलते हैं, बच्चों के साथ।

डेव किंग (इंग्लैंड के हैम्पशायर में रोटरी क्लब गोस्पोर्ट से) चार साल तक ग्रेट ब्रिटेन और आयरलैंड के लिए रोटरी पत्रिका के संपादक रहे हैं। वह 2010 से रोटेरियन हैं और विभिन्न क्लबों के सदस्य रह चुके हैं।

परंपरा के प्रति जागरूक और हमेशा समय पर

रोटरी जापान के 34 मंडलों में 2,237 क्लबों में 88,310 सदस्य हैं (अप्रैल 2021) । इनमें 6,265 सदस्य महिलाएं हैं, लगभग सात प्रतिशत। कम संख्या का कारण हो सकता है कि जापान में महिला नेता ज़्यादा नहीं हैं। जापानी रोटेरियन आमतौर पर कार्यकारी या प्रबंधक स्तर के होते हैं। उनकी औसत आयु 60 वर्ष है। और एक बार जब वे रोटरी में शामिल हो जाते हैं, तो कम ही छोड़ते है। कई सदस्यों का एक लंबा रोटरी इतिहास है।

कई क्लब नियमित रूप से एक घंटे की बैठक आयोजित करते हैं जहां वे दोपहर का भोजन साथ करते हैं और एक टेबल टॉक सुनते हैं। आम तौर पर जापानी, समय के बहुत पाबंद होते हैं! वे आपसी मेलजोल को महत्वपूर्ण मानते हैं, इसलिए वे कभी-कभी शाम को भी सभाएँ आयोजित करते हैं ताकि उन्हें अधिक समय मिल सकें।

सामान्यतया, जापानी सदस्य परंपराओं की पालना में निष्ठा रखते हैं, लेकिन वे परिवर्तन के प्रति ज़्यादा उत्सुक नहीं होते या वे वर्तमान स्थिति से संतुष्ट रहते हैं। वे सदस्यता बढ़ाने की आवश्यकता को महसूस तो करते हैं, लेकिन उनके लिए अधिक महत्वपूर्ण यह है कि वे ऐसे व्यक्ति शामिल करें जो रोटरी के दर्शन, फेलोशिप के महत्त्व को समझते हैं, सिर्फ सदस्यता वृद्धि के बजाय।

रोटरी क्लब योकोहामा (लगभग 200 सदस्य) एक प्रतिष्ठित होटल में नियमित रूप से मिलते हैं। कोविड -19 से पहले, सदस्य गोल मेज सम्मलेन करते थे और होटल में भोजन का आनंद लेते थे। अब संक्रमण से बचने के लिए वे अपनी बैठकें स्कूल शैली में आयोजित करते हैं। नियमित बैठक के उपरान्त लंच बाक्स वितरित किये जाते हैं।

जापान में हम जिन परियोजनाओं पर काम कर रहे हैं उनमें से एक है योनीयामा मेमोरियल स्कॉलरशिप । योनीयामा उस व्यक्ति का नाम है जिसने रोटरी का जापान से परिचय कराया था। यह परियोजना सभी जापानी रोटेरियनों द्वारा वित्त पोषित है और प्रत्येक वर्ष जापान में पढ़ने वाले 900 विदेशी छात्रों को छात्रवृत्ति प्रदान करती है।

ब्राजील में एक बच्चे को पोलियो की बूँदें पिलाती हुयी एक रोटेरियन।

इसका लक्ष्य है उत्कृष्ट अंतरराष्ट्रीय छात्र विकसित करना जो भविष्य में अंतरराष्ट्रीय समुदाय में सक्रिय भूमिका निभाएंगे और अपने घरेलू देशों और जापान के बीच एक सेतु का निर्माण करेंगे। अभी तक, हमने दुनिया भर के 129 देशों के लगभग 22,000 छात्रों का सहयोग किया है। क्षेत्रीय कारणों से, उनमें से ज्यादातर छात्र एशियाई मूल के हैं, लेकिन हमने 44 जर्मन छात्रों का सहयोग भी किया है।

क्योको नोज़ाकी 2016 से जापानी रोटरी पत्रिका रोटरी नो तोमो के संपादक हैं।

पोलियो पहल में अकेले नेता

ब्राजील में 1923 में रोटरी क्लब रियो डी जनेरियो की स्थापना के साथ रोटरी इतिहास की शुरुआत हुई थी। ओ ईस देश के 31 रोटरी मंडलों में 2,426 रोटरी क्लब और 51,945 रोटेरियन हैं। तब से, ब्राजील तीन रो ई कन्वेंशन की मेजबानी कर चुका है: रियो डी जनेरियो (1948) और साओ पाउलो (1981 और 2015) में। तीन ब्राजीलियाई रो ई के अध्यक्ष रहे हैं: अरमांडो डी अरुडा परेरा (1940/41), अर्नेस्टो इम्बासाही डे मेलो (1975/76), और पाउलो विरियातो कोर्रा दा कोस्टा (1990/91), जिनके प्रिजर्व *प्लैनेट अर्थ* कार्यक्रम ने पर्यावरण के लिए नए फाउंडेशन के सृजन पर ध्यान केंद्रित किया है।

ब्राज़ील के क्षेत्रीय प्रसार और विविध आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विशिष्टताओं के साथ क्लबों में विभिन्न प्रकार के प्रोफाइल हैं: व्यवसायी, फ्रीलांसर, शिक्षक और सेवानिवृत्त।

क्लबों में सदस्यता के साथ साथ महिलाओं की संख्या भी तेजी से बढ़ रही है, जो अब लगभग ब्राजीलियाई रोटेरियन की 30 प्रतिशत हैं। ब्राजील में रोटरी के हॉलमार्क में से एक इसके युवा क्लब हैं, जिसमें 754 रोटारैक्ट क्लब और 649 इंटरैक्ट क्लब हैं, जिनमें क्रमशः 9,029 और 16,120 सदस्य हैं।

ब्राजील में रोटरी परिवार एक महत्वपूर्ण पहल करने जा रहा है जो ब्राजील के समाज में उन निरापद सामाजिक असमानताओं को दूर करने में मदद करेगी जो आज भी देश को चिह्नित करती हैं। इनमें से कई परियोजनाएं, जिनमें वैश्विक अनुदानों के माध्यम से वित्तपोषित परियोजनाएं शामिल हैं जो बीमारी की रोकथाम और उपचार पर केंद्रित हैं।

इस कहानी का एक विशेष अध्याय है पोलियो के खिलाफ लड़ाई। 1980 के दशक से, पोलियो के खिलाफ लड़ाई में रोटरी ब्राजील के स्वास्थ्य मंत्रालय की भागीदार रही है। पूर्व अनुदानों में टीके खरीदने के लिए धनराशि शामिल है। ब्राज़ील में पोलियो का अंतिम मामला 1989 में सामने आया था, लेकिन वार्षिक राष्ट्रीय टीकाकरण दिवसों में रोटेरियन स्वेच्छा से काम करते हैं। यह प्रतिबद्धता रो ई द्वारा आयोजित विश्व पोलियो दिवस (WPD) में भी परिलक्षित होती है। 2016 से, ब्राजील WPD प्रयासों की वैश्विक रैंकिंग सबसे आगे रहा है।

नूनो वर्जिलियो नेटो (मानद सदस्य, रोटरी क्लब रियो डी जनेरियो) 2016 से रोटरी ब्रासील पत्रिका के पत्रकार और संपादक हैं।

(रोटरी मैगज़ीन, जर्मनी से पुनर्प्रकाशित)

भारतीय क्षेत्रीय भोजन

शर्मिला चंद

डाइनर्स स्थानीय स्वादों और क्षेत्रीय स्वादों का लुत्फ उठा रहे हैं और शेफ इस प्रवृत्ति को अपना रहे हैं, क्योंकि भारतीय क्षेत्रीय व्यंजन लोकप्रिय फाइन-डाइनिंग रेस्तरां के मेनू में एक गौरवपूर्ण स्थान पाते हैं। कश्मीर से लेकर अवध, महाराष्ट्र, राजस्थान और रामपुर तक कई प्रकार के स्वादों का आनंद लें क्योंकि शेफ घर पर आसानी से पकाने की अपनी रेसिपी साझा करते हैं।

नल्ली निहारी

राजेश वाधवा

कार्यकारी शेफ, ताज पैलेस, नई दिल्ली

इस समृद्ध भोग की तैयारी शाहजहानाबाद में अपनी उत्पत्ति पाती है, जिसे आज हम पुरानी दिल्ली कहते हैं और मुगलों के शासनकाल के दौरान विकसित किया गया था। यह व्यंजन भोपाल, अवध और हैदराबाद के व्यंजनों का केंद्र है। यहाँ यह क्लासिक संस्करण है, जो खमेरी रोटी या किसी भी गर्म नान के साथ सबसे अच्छा पसंद किया जाता है।

सामग्री

- बकरी की टांगें 1 किलो
- मटन स्टॉक 1.5-2 लीटर
- सरसों का तेल 150 मिली
- लौंग 3 ग्राम
- हरी इलायची 3 ग्राम
- तेज पत्ता 2 नग
- दालचीनी 5 ग्राम
- कटा हुआ प्याज 150 ग्राम
- अदरक का पेस्ट 40 ग्राम
- लहसुन का पेस्ट 40 ग्राम
- लाल मिर्च पाउडर 10 ग्राम
- पीली मिर्च पाउडर 20 ग्राम
- हल्दी पाउडर 20 ग्राम
- धनिया पाउडर 50 ग्राम
- दही 150 ग्राम
- भुना हुआ बेसन 50 ग्राम
- गरम मसाला पाउडर 20 ग्राम
- नमक स्वादअनुसार
- केसर कुछ किस्में
- ताजा हरा धनिया और अदरक जूलिएन्स (सजाने के लिए)

विधि

- एक भारी तले की कड़ाही में सरसों का तेल गर्म करें। सारे मसाले डालें और उन्हें चटकने दें। कटा हुआ प्याज डालें और सुनहरा भूरा होने तक पकाएं। अदरक और लहसुन का पेस्ट डालें। अच्छी तरह से भूनें। लाल मिर्च पाउडर, पीली मिर्च पाउडर, हल्दी, धनिया पाउडर, फेंटा हुआ दही के साथ बकरी के टुकड़े डालें और अच्छी तरह से भूनें।
- अब मटन स्टॉक डालें और धीमी आंच पर तब तक पकाएं जब तक कि टांगें नर्म न हो जाएं। एक अलग पैन में घी गरम करें, भुना हुआ बेसन डालें और खुशबूदार और हल्का सुनहरा होने तक भूनें। इस मिश्रण को तैयार शैंक्स में डालें और ग्रेवी की स्थिरता को अच्छी और क्रीमी होने तक एडजस्ट करें। मसाला समायोजित करें। गरम मसाला और केसर के साथ समाप्त करें। ताज़े हरे धनिये के पत्तों और अदरक के जुलिएन्स से गार्निश करें। गर्म - गर्म परोसें।

मच्छी कोलीवाड़ा

स्वप्नदीप मुखर्जी

कार्यकारी शेफ, द मेट्रोपॉलिटन होटल एंड स्पा

मच्छी कोलीवाड़ा मुंबई के सबसे प्रतिष्ठित व्यंजनों में से एक है। पकवान की उत्पत्ति हजारा (पाकिस्तान) शहर के पंजाबी प्रवासियों द्वारा की गई थी जो महाराष्ट्र के कोली समुदाय के साथ बस गए थे।

सामग्री

- बासा पट्टिका 150 ग्राम
- बेसन 50 ग्राम
- चावल का आटा 30 ग्राम
- मिर्च पेस्ट 5 ग्राम
- अजवायन के बीज 2 ग्राम
- दही 10 ग्राम
- डेगीमिर्च 5 ग्राम
- जीरा पाउडर 5 ग्राम
- गरम मसाला 5 ग्राम
- हल्दी पाउडर 5 ग्राम
- सौंफ 2 ग्राम
- नींबू 1 नग
- अदरक लहसुन का पेस्ट 10 ग्राम
- नमक 2 ग्राम
- तलने के लिए तेल 500 मि ली

विधि

- बासा पट्टिका को आठ बराबर आकार के पांसे में काटें। मछली को बेसन के अलावा सभी मसालों और दही के साथ मैरीनेट करें। 30 मिनट के लिए अलग रख दें। एक और कटोरा लें और उसमें बेसन डालें। घोल बनाने के लिये पानी डालिये. एक पैन में डीप फ्राई करने के लिए तेल डालें। मैरीनेट की हुई मछली को बैटर में डालें और अच्छी तरह मिलाएँ। फिश डाइस को गोल्डन ब्राउन होने तक डीप फ्राई करें। पुदीने की चटनी और नींबू के टुकड़े के साथ परोसें।

आलू गोश्त

ओसामा जलाली
बावर्ची, मुगल प्लेट जलालिस द्वारा

सामग्री

- मटन 1 किलो
- आलू 500 ग्राम
- तेल/घी 200 ग्राम
- हल्दी 5 ग्राम
- लाल मिर्च पाउडर 10 ग्राम
- धनिया पाउडर 15 ग्राम
- भूरी तली हुई प्याज 200 ग्राम
- दही 200 ग्राम
- लौंग 8
- गरम मसाला - 5 ग्राम
- लहसुन का पेस्ट 10 ग्राम
- पानी 1 लीटर
- नमक स्वादानुसार
- चर्शीहेव

विधि

- एक लगन में घी/तेल गरम करें, अब लौंग और मांस डालें। 2 मिनिट तक भूनें, फिर अदरक लहसुन का पेस्ट डालें। इसे 2 से 3 मिनट के लिए छोड़ दें। अब हल्दी और लाल मिर्च पाउडर, धनिया पाउडर और स्वादानुसार नमक डालें। इसे 5 से 10 मिनट तक भूनें और 1 लीटर पानी डालकर ढक दें। इसे आधे घंटे के लिए छोड़ दें ताकि मांस नरम हो जाए। अब आलू, ब्राउन प्याज और दही डालें। थोड़ा और पानी डालें और आलू के गलने तक 15 मिनट के लिए छोड़ दें। ऊपर से चने का मसाला डालें और यह परोसने के लिए तैयार है। ताजा धनिया से सजाएं।

केर सांगरी

राज कुमार
कार्यकारी शेफ हॉलिडे इन, जयपुर सिटी सेंटर

राजस्थान का एक रमणीय स्वदेशी व्यंजन, केर सांगरी एक पारंपरिक, मसालेदार सब्जी है जिसे केर बेरी और सांगरी बीन्स से बनाया जाता है, जिसे लाल मिर्च, अजवायन और कुछ मसाले पाउडर जैसी सामान्य सामग्री के साथ पकाया जाता है। किशमिश मिलाने से रेसिपी में सबसे अच्छा स्वाद उभर आता है

सामग्री

- सांगरी 75 ग्राम
- केर 50 ग्राम
- सरसों का तेल 70 मिली
- जीरा 5 ग्राम
- सरसों के बीज 2 ग्राम
- लाल मिर्च पाउडर 2 ग्राम
- हल्दी पाउडर 3 ग्राम
- धनिया पाउडर 10 ग्राम
- नमक स्वादअनुसार
- दही 50 ग्राम
- सूखे आम का पाउडर 10 ग्राम
- नींबू का रस 10 मिली
- हरा धनिया 25 ग्राम
- चर्शीहेव

विधि

- केर और सांगरी को थोड़े से नमक और हल्दी पाउडर के साथ रात भर के लिए भिगो दें।

- भीगी हुई केर-सांगरी को उबाल कर पानी निकाल कर अलग रख दें. एक प्याले में फेंटा हुआ दही, हल्दी, धनिया, लाल मिर्च और नमक डालकर चिकना घोल तैयार कर लीजिए. एक पैन में तेल गरम करें, उसमें जीरा और राई डालें, जब वे चटकने लगे तब साबुत सूखी लाल मिर्च और दही का मिश्रण डालें और 15 मिनट तक पकाएँ।
- मिश्रण में केर और सांगरी डालें और 10 मिनट के लिए और पकाएँ। खत्म करने के लिए नींबू का रस और अमचूर पाउडर डालें।
- कटे हरे धनिये से सजाकर गरमागरम परोसें।

कश्मीरी फिरनी

करण बंसल

वरिष्ठ रसोइया, चोर बिज़ेर, बीकानेर हाउस

सामग्री

- मोटे दाने वाली सूजी - 80 ग्राम
- फुल क्रीम दूध - 1 लीटर
- चीनी - 80 ग्राम
- केसर - 0.25 ग्राम
- काजू - 80 ग्राम
- कंडेंस्ड मिल्क - 100 ग्राम
- कटे हुए बादाम: 20 ग्राम
- इलायची पाउडर: 5 ग्राम
- चर्शीहेव

विधि

- सूजी और काजू को साफ करके अलग अलग पानी में भिगो दीजिये. केसर को थोड़े से गर्म दूध में भिगो दें। दूध को लगातार चलाते हुए गर्म करें ताकि बेसन पर जलने से बचा जा सके। दूध में उबाल आने पर भीगी हुई सूजी और काजू डालें। हिलाते रहें। भीगा हुआ केसर डालें और इलायची पाउडर छिड़कें।
- दूध में उबाल आने पर उसमें चीनी डाल कर मिला दीजिये. कन्डेन्स्ड मिल्क डालें, अच्छी तरह मिलाएँ और मिश्रण को गाढ़ा होने तक कम कर दें। आंच से हटाएँ। इसे मिट्टी के छोटे कटोरे में निकाल लें और ठंडा होने दें। केसर और कटे हुए बादाम से सजाएं। इसे ठंडा परोसें।

इलेखका एक जीवन शैली पत्रकार हैं।

धारवाड़ में रोटरी लड़कियों को वापस स्कूल पहुँचाती है

टीम रोटरी न्यूज़

रोई मंडल 3170 में रोटरी क्लबों द्वारा स्कूलों को गोद लेने और उन्हें हाथों की धुलाई की सुविधा, लिंग-पृथक शौचालय जैसी बुनियादी सुविधाएं देने एवं व्यक्तिगत स्वच्छता पर बच्चों को प्रशिक्षण देने से छात्रों को कोविड महामारी से लड़ने में मदद मिलेगी, WinS राष्ट्रीय समिति के सदस्य PDG गणेश जी भट ने कहा।

अंतर्राष्ट्रीय बालिका दिवस को चिह्नित करने हेतु आयोजित किए गए एक कार्यक्रम जिसमें विभिन्न कारणों से स्कूल छोड़ने वाली 10 छात्राओं को रोटरी क्लब धारवाड़ सेंट्रल और धारवाड़ हेरिटेज द्वारा अपनाया गया था, को संबोधित करते हुए, उन्होंने बच्चों को वापस स्कूल भेजने हेतु अपने CSR निधि के माध्यम से कॉरपोरेट्स से मदद मांगी। कर्नाटक सरकार के लोक शिक्षा विभाग के आयुक्त मेजर सिद्धलिंगय्या ने कहा कि रोटरी क्लबों ने सरकारी स्कूलों को अनेक सुविधाएं और अन्य कक्षा सुविधाएं प्रदान की है जिससे उन्हें महामारी के बावजूद फिर से खोलने में मदद मिली।

उन्होंने कहा कि साबुन के साथ सामूहिक हाथों की धुलाई की इकाइयों, लिंग आधारित शौचालयों, बहते पानी और क्लबों द्वारा किए जा रहे MHM सत्रों ने माता-पिता को अपने बच्चों को बिना किसी हिचकिचाहट के स्कूलों में भेजने हेतु प्रोत्साहित किया। मनोचिकित्सक डॉ आनंद पांडुरंगी ने कहा कि रोटरी ने बच्चों और अभिभावकों की मानसिकता को बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है क्योंकि बड़ी संख्या में बच्चों की कक्षाओं में उपस्थिति के साथ स्कूल फिर से खुल गए है। रोटरी क्लब धारवाड़ सेंट्रल के अध्यक्ष डॉ आनंद तवरगेरी, सचिव नागराज, रोटरी क्लब धारवाड़ हेरीटेज की अध्यक्ष डॉ वाणी इरकल, सचिव डॉ महाबल शेट्टी और कार्यक्रम अध्यक्ष आनंद नायक उपस्थित थे। ■

Rotary at a glance

Rotary clubs	:	36,994
Rotaract clubs	:	10,707
Interact clubs	:	16,795
RCCs	:	11,875
Rotary members	:	1,201,654
Rotaract members	:	230,701
Interact members	:	386,285

As on November 17, 2021

Membership Summary

As on November 1, 2021

RI District	Rotary Clubs	No of Rotarians	Women Rotarians (%)	Rotaract Clubs	Interact Clubs	RCC
2981	132	6165	7.53	44	52	236
2982	76	3564	7.27	47	98	73
3000	137	5423	9.13	90	259	213
3011	125	4666	26.88	71	118	36
3012	132	4071	27.09	65	76	61
3020	77	4756	7.30	30	166	350
3030	96	5140	15.14	116	243	363
3040	102	2619	14.55	54	81	196
3053	69	2784	18.03	33	49	118
3054	184	7428	20.36	103	177	563
3060	110	5184	14.95	62	70	147
3070	124	3308	15.63	42	35	59
3080	98	4157	13.30	135	158	115
3090	90	2310	5.63	38	64	123
3100	105	2373	11.21	10	21	146
3110	134	3683	11.02	14	17	106
3120	90	3605	16.56	62	31	55
3131	140	5539	23.74	108	229	131
3132	90	3616	10.92	31	122	166
3141	117	6418	27.13	137	182	102
3142	104	3769	20.75	79	137	80
3150	115	4293	13.60	75	135	118
3160	78	2652	8.82	27	20	82
3170	138	6308	14.90	83	239	171
3181	87	3485	8.78	33	194	115
3182	85	3479	9.60	42	124	104
3190	160	6765	18.34	156	202	70
3201	153	6009	9.42	103	89	63
3203	92	4760	7.94	73	233	36
3204	62	2059	6.41	19	23	13
3211	145	4834	7.86	7	24	134
3212	143	5278	12.86	74	204	153
3231	98	3729	8.64	28	81	419
3232	152	7478	17.05	114	212	99
3240	102	3563	15.89	61	405	216
3250	107	4018	19.91	63	73	185
3261	92	3217	18.28	14	23	44
3262	123	4154	14.42	68	72	89
3291	168	4173	23.27	133	95	647
India Total	**4,432**	**170,832**		**2,544**	**4,833**	**6,197**
3220	76	2396	16.36	87	131	75
3271	130	2217	17.41	91	185	25
3272	161	1963	17.07	70	22	47
3281	308	8329	18.50	264	147	209
3282	175	3957	11.80	196	47	47
3292	153	6053	17.26	168	128	129
S Asia Total	**5,435**	**195,747**		**3,420**	**5,493**	**6,729**

Source: RI South Asia Office

आपके गवर्नर्स

राजेन्द्र अग्रवाल

टेक्सटाइल्स, रोटरी क्लब बॉम्बे क्वीन सिटी, रो ई मंडल 3141

मुंबई की आवासीय सोसाइटियों में फलते-फूलते रोटरी क्लब

तीन साल पहले, मुंबई की एक आवासीय सोसाइटी में रोटरी क्लब मुंबई लोअर परेल का गठन किया गया था। इसने नए क्लबों का गठन करके सदस्यता बढ़ाने का चलन शुरू किया। ''सदस्यता बढ़ाने के लिए ऊंची इमारतों, सुरक्षापूर्ण परिसरों (GC) और हाउसिंग सोसाइटियों में रोटरी क्लब का गठन करने की पहल मेरे द्वारा शुरू की गई थी जो बाद में एक चलन बन गया'', राजेंद्र अग्रवाल कहते है। ''ऐसे क्लबों के सदस्यों को अपने सुरक्षापूर्ण परिसरों से बाहर नहीं जाना पड़ता न ही साप्ताहिक बैठकों के लिए लंबी दूरी की यात्रा करनी पड़ती है; और आराम से कोई भी गतिविधि आयोजित कि जा सकते है'', वह मुस्कराते है।

अग्रवाल की 10 नए क्लबों का गठन करने और 1000 से अधिक नए सदस्यों को जोड़कर मंडल में इनकी संख्या को क्रमशः 127 और 7,000 के पार ले जाने की योजना है। रोटरेक्ट में सप्ताहांत गतिविधियों/कार्यक्रमों के माध्यम से 1500 नए सदस्यों को शामिल करने और 20 नए क्लबों का गठन करने की योजना बनाई गई है। पिछले पांच वर्षों में अग्रवाल ने बच्चों के लिए लगभग 3000 बाल हृदय सर्जरियों का प्रबंध किया है और इस वर्ष 1500 सर्जरियों की योजना है। प्रत्येक सर्जरी की लागत लगभग ₹1 लाख है और यह एक वैश्विक अनुदान परियोजना है। वैश्विक अनुदान एवं सदस्य योगदान के मिश्रण के माध्यम से पालघर के किसानों को 25 लाख के फलदार पौधे दान किए जाएंगे। उनका TRF लक्ष्य 3 मिलियन डॉलर का है। अग्रवाल का 1992 में रोटेरियन अजय गोयल द्वारा रोटरी से परिचय करवाया गया था। बाद में, मैं रोटरी पदानुक्रम की सीढ़ी चढ़ने के लिए झ्ऊ डॉ बाल इनामदार और श्रीरंग प्रभु से प्रेरित हुआ।

कर्नल महेंद्र मिश्रा

पूर्व-सेना अफसर, रोटरी क्लब भोपाल हिल्स, रो ई मंडल 3040

रोटरेक्ट को मिला बूस्टर शॉट

एक स्व-प्रेरित रोटेरियन होने के नाते, यह पूर्व सेना कर्नल फरवरी 2009 में सेवनिवृत्त होने के बाद एक सामाजिक सेवा संगठन में शामिल होना चाहते थे, ''तब मेरे एक सहयोगी ने मेरा परिचय रोटरी से करवाया। तब से यह एक रोमांचक यात्रा रही है।'' पश्चिमी मध्य प्रदेश के 23 राजस्व ज़िलों और गुजरात के दो क्षेत्रों को मिलाकर मिश्रा रोटरेक्ट सदस्यता में बड़ा इजाफा कर रहे है।

''अब तक, 13 नए रोटरेक्ट क्लबों का गठन किया जा चुका है, पांच गठित होने वाले है; इससे रोटरेक्टरों की सदस्य संख्या में 2500 से अधिक की वृद्धि होगी, सीधे तौर पर 300 प्रतिशत की वृद्धि।'' अगले जून तक रोटरेक्ट संख्या को 3040 तक और वर्तमान 2649 रोटेरियनों की संख्या को 3040 तक पहुँचाने का लक्ष्य है। RAC ओरिएंटल इंदौर नवलखा का अधिकार-पत्र सौंपने के दौरान, 646 रोटरेक्टरों को शामिल किया गया। ''नवीन रूप से स्थापित किए गए बहुत से क्लबों में 100 से अधिक रोटरेक्टर है।''

सरकारी और धर्मार्थ अस्पतालों से जुड़े पांच डायलिसिस केंद्रों की योजना बनाई जा रही है (वैश्विक अनुदान: 175,000 डॉलर)। 40,000 डॉलर के वैश्विक अनुदान की मदद से गुजरात और मध्य प्रदेश के झाबुआ शहर में दो चलित खउण, एक चलित हृदय इकाई और CSR निधीयन के साथ 10-15 हैप्पी स्कूल की योजना बनाई जा रही है। हम ग्रामीण परिवारों के लिए लगभग 850 चिकित्सा शिविर आयोजित करेंगे। TRF में देने का उनका लक्ष्य करीब 250,000 डॉलर का है।

''शीर्ष से लेकर क्लब तक सभी स्तरों पर अवरोधन की चुनौती का सामना किया जा रहा है। रो ई नेतृत्व भी भारत में सदस्यता के विकास की निगरानी कर रहा है और क्लब अध्यक्ष इस मुद्दे पर ध्यान केंद्रित कर रहे है'', वह कहते है।

से मिलिए

वी मुत्तुकुमारन

राजीव सिंघल

आयकर सलाहकार, रोटरी क्लब साकेत मेरठ, रो ई मंडल 3100

आइए मिलकर रोटरी के विशिष्ट स्वरूप को बनाएं रखें

एक विशिष्ट गैर सरकारी संगठन होने के नाते, ''रोटरी को अपनी श्रेणी को संरक्षित करने और गुणवान सदस्यों को आकर्षित करने के लिए नीतियां तैयार करने की आवश्यकता है।'' राजीव सिंघल कहते है। उनकी छह नए क्लबों को गठित करने की योजना है जिनमें से दो का गठन किया जा चुका है ताकि अगले साल जून तक यह संख्या 112 पर पहुँच जाएं। उनका कहना है कि अन्य 300 नए सदस्य इस संख्या को 2600 के पार ले जाएंगे।

उनका लक्ष्य कम से कम 10 नए रोटरेक्ट क्लब गठित करने का है। पहली बार, उनका मंडल इतने बड़े पैमाने पर बाल हृदय सर्जरियाँ करेगा। ''मेरा लक्ष्य बच्चों के लिए कम से कम 50 सर्जरियाँ आयोजित करने का है और ये मेरे द्वारा (लगभग ₹50 लाख) निजी एजेंसियों के माध्यम से प्रायोजित किए जाएंगे'', सिंघल कहते है। सदस्य योगदान के माध्यम से सरकारी स्कूलों में दस हैप्पी स्कूल बनाए जाएंगे।

एक और बड़ी परियोजना स्कूलों में ''लिंग-पृथक शौचालयों (50 ब्लॉक) के निर्माण की है जिसे वैश्विक अनुदान (32000 डॉलर) और सदस्य योगदान के मिश्रण के माध्यम से वित्त पोषित किया जाएगा। हम ऐसे 20 शौचालय खंड पहले ही बना चुके है।'' TRF में देने के लिए सिंघल का लक्ष्य 41,000 डॉलर का है। 1996 में उनके पिता स्वर्गीय रोटेरियन जे डी सिंघल ने उन्हें रोटरी में शामिल होने हेतु प्रेरित किया। ''मैं रोटरी क्लब साकेत मेरठ का चार्टर अध्यक्ष बना। मेरे पिता मेरे आदर्श है।'' NCR, पश्चिमी यूपी और उत्तराखंड के रोटरी क्लबों ने पिछले कुछ वर्षों में संतोषजनक वृद्धि दिखाई है। हमें इस 'विशेष श्रेणी' की संरचना को बनाए रखने की आवश्यकता है। रोटरी विशेष लोगों के लिए है, वह कहते है।

डॉ उपिंदर सिंह घई

सर्जन, रोटरी क्लब जालंधर सिटी, रो ई मंडल 3070

श्रीनगर में एक विशाल राहत शिविर योजनाबद्ध है

पेशे से एक लेप्रोस्कोपिक सर्जन डॉ उपिंदर सिंह घई के लिए ग्रामीण बच्चों की शिक्षा और पर्यावरण मुद्दे प्राथमिक क्षेत्र है, जो रोटेरियनों द्वारा रेफर किए गए मरीजों की हर महीने कम से कम 4-5 नि:शुल्क सर्जरियाँ कर रहे है। ''मैं संयोग से 1996 में रोटरी में शामिल हो गया जब मेरे एक डॉक्टर मित्र मुझे क्लबों की एक रात्रिभोज बैठक में ले गए। वहाँ मैं कुछ दिलचस्प लोगों से मिला। जो एक फेलोशिप के रूप में शुरू हुआ था, वह सामुदायिक सेवा में तब्दील हो गया'', घई कहते है।

उनकी अपने कार्यकाल के दौरान 500 नए सदस्यों को शामिल करने और 10 नए क्लबों को गठित करने की योजना है जिससे उनकी संख्या क्रमशः 3,900 और 135 हो गई। मनाली में आयोजित एक तीन-दिवसीय RYLA में 230 रोटरेक्टरों ने भाग लिया जिसमें 20 नेपाली भी शामिल थे। हाल ही में रोटरी क्लब अमृतसर सेंट्रल द्वारा प्रायोजित RAC संत सिंह सुखा सिंह कॉलेज ऑफ कॉमर्स फॉर विमेन के अधिष्ठापन में 100 से अधिक महिला रोटरेक्टरों को शामिल किया गया। घई कहते है, ''मेरा लक्ष्य 250-300 नए रोटरेक्टरों को शामिल करने का है।'' श्रीनगर में आतंकी हमलों और खराब मौसम के कारण नवंबर में 10 दिवसीय राहत चिकित्सा शिविर स्थगित कर दिया गया।

उनका लक्ष्य निजी अस्पतालों में तीन डायलिसिस केंद्रों (वैश्विक अनुदान: 35,000 डॉलर - 40,000 डॉलर प्रत्येक) शुरू करने का है। ''पंजाब के मुख्यमंत्री चरणजीत सिंह चन्नी PDG मनमोहन सिंह, रो ई मंडल 3080, के छोटे भाई है और हम कम से कम 10 हैप्पी स्कूल करने के लिए राज्य सरकार के साथ काम कर रहे है। TRF में देने के लिए उनका लक्ष्य 200,000 डॉलर का है।

एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपरेखा

अपराध-भावना मुक्त उपहार

प्रीति मेहरा

यह क्रिसमस और नया साल पर्यावरण के अनुकूल उपहारों के साथ अच्छा उत्साह फैलाता है।

एक दंडनीय महामारी के बाद, चीजें साल के अंत तक अच्छी दिख रही हैं। अगर तीसरी लहर हमें गंभीर रूप से प्रभावित नहीं करती है, तो क्रिसमस-नया साल जश्न मनाने का मौसम होने की संभावना है। परंपरागत रूप से भी वर्ष का अंत हमेशा अच्छा उत्साह फैलाने, उपहारों का आदान-प्रदान करने और आने वाले वर्ष के लिए आशामय घोषित करने का समय रहा है।

उपयुक्त उपहारों की खरीदारी दिसंबर की व्यस्तता बन जाती है। और अगर आप हरित क्षेत्र में रहने के लिए प्रतिबद्ध हैं, तो इस मुद्देपर मैं आपके लिए बहुत सारे हरे रंग के उपहार देने वाले विचारों को लेकर आया हूं, जिन्हें पृथ्वी को प्रदूषित करने के लिए दोषी महसूस किए बिना प्रस्तुत किया जा सकता है।

पर्यावरण के अनुकूल उपहार देने का अर्थ है, संसाधनों के उपयोग को कम करना और ऐसे उपहारों के लिए खुला होना, जो रीसाइक्लिंग या अपसाइक्लिंग की प्रक्रिया से गुजरे हैं। और चुनाव केवल उपहार के साथ नहीं रुकता है, इसके लपेटने का भी एक गैर-अवक्रमणीय विकल्प होना चाहिए।

हालांकि उपहार के लिए मेरी व्यक्तिगत पसंद - चाहे वह वयस्क हो या बच्चा - एक किताब है, पर कई लोगों को ऐसा नहीं लग सकता। आज कई हरे उपहार हैं जो प्राकृतिक संसाधनों से आते हैं और रसायन तथा प्लास्टिक मुक्त हैं। टेराकोटा, बांस, कांच और धातु लें। इन सभी सामग्रियों को सुंदर कटोरे, मग, फूलदान, हुक और हैंगर, झंकार, बुकेंड, कोस्टर, प्लांटर्स में बदल दिया जाता है ... सूची अंतहीन है। मैंने कुछ ऑनलाइन साइटों की जाँच की जो जीरो-नुकसान वाले जीवन शैली के लिए उपहार प्रदान करती हैं।

ब्राउन लिविंग खुद को भारत का पहला प्लास्टिक-मुक्त बाज़ार कहता है और उनके पर्यावरणीय प्रभाव का मूल्यांकन करने के बाद विशेष रूप से क्यूरेट किये गए उपहार प्रदान करता है। उनके पास चुनने, पैक करने और उन्हें प्लास्टिक-मुक्त भेजने के लिए शाकाहारी और टिकाऊ श्रेणियां हैं और आदेशों को कार्बन न्यूट्रल भी सुनिश्चित करने के लिए लाभ से पेड़ लगाते हैं।

इसके बाद 'लूपिफाय' है जो अपसाइकल, रिसाइकल और बायोडिग्रेडेबल उत्पादों से बने इनोवेटिव उपहारों की पेशकश करता है। उनकी बांस रेंज में डेस्क आयोजक, प्लांटर्स, स्ट्रॉ, टूथपिक्स, कटलरी, कोस्टर, टूथब्रश, बियर मग, सलाद बाउल्स शामिल हैं। अपसाइकल कॉर्क के उनके उत्पादों में कोस्टर, वॉलेट, पासपोर्ट स्लीव्स, यहां तक कि योगा मैट भी शामिल हैं। इसी तरह, वे

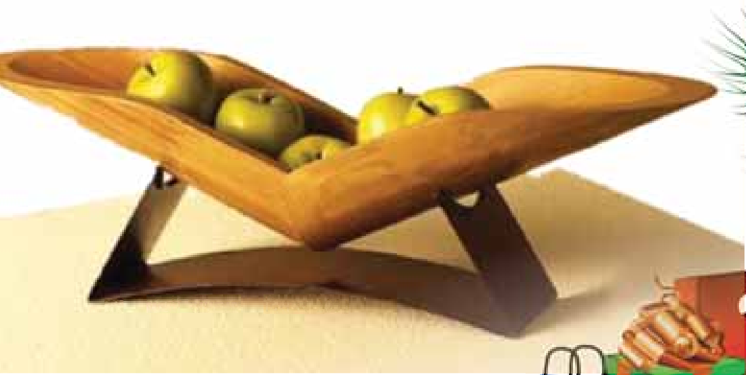

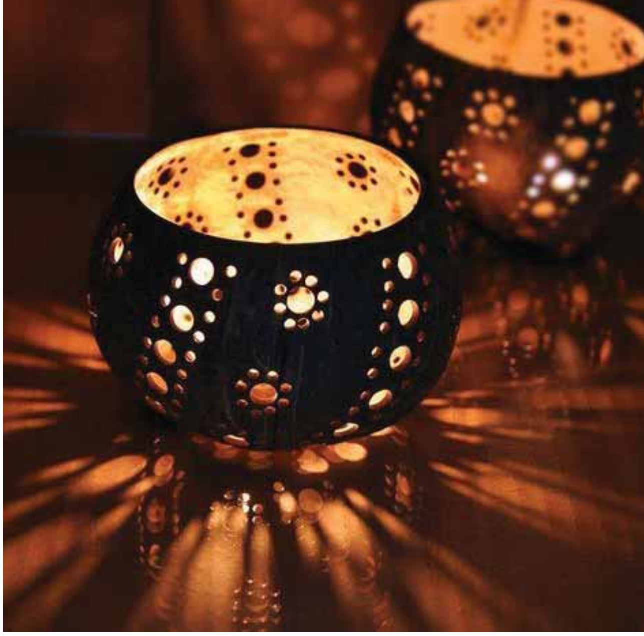

कांच और धातु में उपहार देने के विचार पेश करते हैं, जिससे पसंद करके आप पूरी तरह से बिगड़ा हुआ महसूस करते हैं।

'ग्रीन फील्स' एक अन्य ऑनलाइन स्टोर है जो स्टेशनरी, कपड़े, एक्सेसरीज सेगमेंट और किचन, बाथरूम और सामान्य रूप से घर के लिए विशिष्ट उत्पादों के तहत उपहार प्रदान करता है। बहुत से लोग उपहार में दिए गए पौधे को पसंद करते हैं, रसीले किस्म विशेष रूप से लोकप्रिय हैं क्योंकि उन्हें घर के अंदर रखा जा सकता है और अन्य पौधों की तरह देखभाल की आवश्यकता नहीं होती है। हैंगिंग पॉट्स की भी सराहना की जाती है और इन्हें पड़ोस की बागवानी की दुकानों से खरीदा जा सकता है, जो आपको एक सूक्ष्म उद्यमी को प्रोत्साहित करने में एक कदम आगे ले जाएगा। इस बार दिवाली के दौरान एक उद्यमी नौजवान ने नारियल के छिलकों से मोमबत्तियां बनाईं।

इन दिनों पौधों की ऑनलाइन खरीदारी का भी चलन है और वेब पर कई ईको स्टोर हैं, जिनसे आप ऑर्डर कर सकते हैं। ऐसे विकल्पों की कोई कमी नहीं है जो आपको गैर-बायोडिग्रेडेबल सामग्री से दूर रहने में मदद करेंगे। यानी अगर आप पृथ्वी को बचाने के लिए एक छोटा, लेकिन महत्वपूर्ण योगदान देने के लिए गंभीर हैं तो।

उपहारों की पैकिंग के साथ भी ऐसा ही है। मुझे एक दोस्त याद है जो हमेशा मेरे बेटे के जन्मदिन का उपहार तार से बंधा हुआ और अखबार में पैक करके लाती थी, जिसे उसकी बेटी ने क्रेयॉन से रंगा होता था। वह तीन चीजें करने में कामयाब रहती थी - बच्चों में रीसाइक्लिंग की भावना पैदा करना, उसे रचनात्मक गतिविधि में व्यस्त रखना, और उस चमकदार रैपिंग पेपर को नहीं खरीदना जिसमें लगभग हमेशा एक प्लास्टिक कोटिंग होती है जो नग्न आंखों से दिखाई नहीं देती है।

कागज या कार्डबोर्ड का उपयोग करने के अलावा, जो उपहार पैक करने के लिए सौ प्रतिशत पुन: प्रयोज्य है, हरित पैकिंग के अन्य विकल्प भी हैं। यदि उपहार को पैकिंग के लिए कठोर सामग्री की आवश्यकता है, तो आप टिन का पुन: उपयोग कर सकते हैं या धातु या एल्यूमीनियम का उपयोग कर सकते हैं - दोनों ही पुन: उपयोग योग्य उत्पाद हैं।

ग्लास भी एक रिसाइकिल योग्य उत्पाद है और इसे व्यक्तिगत उपहार देने के लिए स्वतंत्र रूप से इस्तेमाल किया जा सकता है। एक सुंदर कांच की बोतल का पुन: उपयोग करना और इसे घर का बना अचार, जैम, या चॉकलेट फज से भरना सही उपाय समझ में आता है। या अपने प्यार और देखभाल को सुपर स्वस्थ सूरजमुखी और खरबूजे के बीज से भरकर दिखाएं।

कपड़ा और जूट भी पैकिंग के लिए बेहतरीन विकल्प हैं। पड़ोस का दर्जी सबसे आकर्षक उपहार देने वाले बैग में बचे या छोड़े गए सामग्री को बदल सकता है। साल में एक बार जब आप अपनी अलमारी को साफ करते हैं, तो अवांछित सामग्री या कपड़ों का ढेर लगायें और बस अपनी कल्पना का उपयोग करके उन्हें सभी आकार और आकार के बैग में बदल दें। उनसे पैसे देने वाले अच्छे लिफाफे भी बना सकते हैं।

विचार, नवीनतम होने और पर्यावरण के अनुकूल उपहार देने के लिए प्रतिबद्ध है। सस्टेनेबल गिफ्टिंग, संसाधनों का उपयोग कम से कम करने के अलावा, प्राकृतिक, बायोडिग्रेडेबल, पुनर्नवीनीकरण, पुनर्नवीनीकरण सामग्री का उपयोग करते हुए, इसका अर्थ है उन लोगों पर ध्यान देना जो इस ग्रह पर रहते हैं। इसका अनिवार्य रूप से अर्थ है, दुनिया को वापस लौटाना, स्थानीय कारीगरों का समर्थन करना, संसाधनों के समान वितरण में विश्वास करना, सभी श्रमिकों को उचित भुगतान करना और ऐसा करके पृथ्वी ग्रह पर सबसे सकारात्मक प्रभाव डालना।

लेखिका एक वरिष्ठ पत्रकार हैं, जो पर्यावरण के मुद्दों पर लिखती हैं।

एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपरेखा

Wordsworld

Not simply courage, conviction too

Sandhya Rao

Malala Yousafzai proves William Wordsworth right: child is the father of man.

We have all heard the phrase: 'out of the mouths of babes'. This was one reason I had not picked up Malala Yousafzai's book, *I Am Malala*, all these years. Yes, she had lived through a terrible experi-ence — being shot at by Taliban terrorists — at age 15 with tremendous cour-age and had come through it all to become a role model especially for young people and women. Ever since, she had been in the news and had been seen to have met influential people and received international honours, including the Nobel Prize when she was just 16. But… but, she was just a kid! I couldn't have been proved more wrong.

Recently, I watched a programme on YouTube showing Malala addressing the Canadian parliament after being conferred honorary citizenship of that country. It was old news, but I was blown away. By her simplicity, composure, humour, restrained oratory, powerful message and, more than anything else, her spirit of forgiveness. At this time of the season, when people of different faiths celebrate peace, goodwill, enlightenment and devotion, it seemed as though the universe were leading me to her. That's how I started reading *I Am Malala*, which she has co-authored with journalist Christina Lamb, whose book, *Farewell Kabul*, was featured in this column a couple of months ago.

What an education the book is, full of insightful observations that sweep away dust in the mind. It talks about the history of the region, the Swat Valley that straddles both Pakistan and Afghanistan; the people and their beliefs and practices; the growth of the Taliban; social conditions and conditioning, the lack of education and basic facilities; mystical mountains, clear skies and running water, and sometimes piles of garbage; the efforts to educate children, especially girls; growing up in a loving environment in a society rigid with rules; a father who defies stereotypes and a daughter who follows suit, yet who are both very much products of their circumstances; the love for reading; being a girl; speaking up and dressing up; politics and holding political views; the generosity and support of strangers…

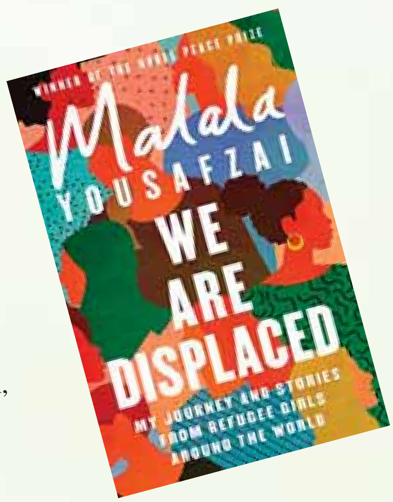

No wonder the book was declared nonfiction book of the year when it was published.

Christina Lamb, as we already know, comes with firsthand knowledge of the region. Malala, we realise, is extraordinary. And although a lot of the background information is clearly the work of the journalist, it is Malala's voice we hear. You see that she wasn't just some random kid who got in the way of the Taliban. Even before she turned 13, she was politically aware, speaking publicly in support of the importance of educating girls and questioning injustices in society. In this, she was deeply influenced by her father, Ziauddin, who took the lead in the community and beyond in opposing social injustices and speaking out against the violence perpetrated by the Taliban.

As you read, you get a strange but distinct feeling as if Malala was 'chosen' to be at the receiving end of bullets shot at her pointblank by two men who stopped the van bringing her and

other children back home from school on October 9, 2012. 'Who is Malala?' they asked and when she identified herself, they fired three shots. Malala slumped forward; two other girls were also hurt but their wounds were less grievous.

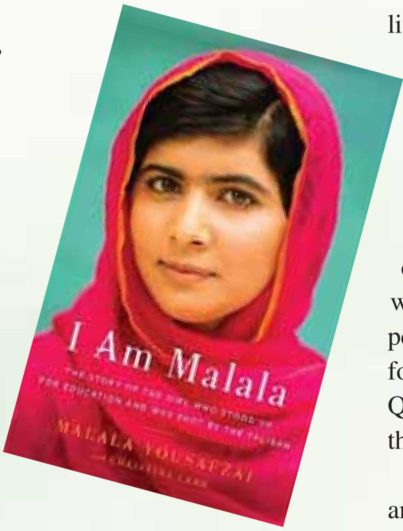

While all these and the story of how Malala was flown on the private plane of a Saudi royal for treatment in the UK and her gradual recovery read almost like fiction, it's the painting with words of the larger canvas that is riveting. You are compelled to pay attention as, for instance, you read: 'Children in the refugee camps were even given school textbooks produced by an American university which taught basic arithmetic through fighting. They had examples like, "If out of 10 Russian infidels, 5 are killed by one Muslim, 5 would be left" or "15 bullets – 10 bullets = 5 bullets".'

A simple paragraph like the following resonates with us but it also tells a troubling story: 'It was school that kept us going in those dark days. When I was in the street it felt as though every man I passed might be a *talib*. We hid our school bags and our books in our shawls. My father always said that the most beautiful thing in a village in the morning is the sight of a child in a school uniform, but now we were afraid to wear them.'

Despair seeps through simple words: 'People had lived by the river in Swat for 3,000 years and had always seen it as our lifeline, not a threat, and our valley as a haven from the outside world. Now we had become "the valley of sorrows", said my cousin Sultan Rome. First the earthquake, then the Taliban, then the military operation and now, just as we were starting to rebuild, devastating floods arrived to wash all our work away. People were desperately worried that the Taliban would take advantage of the chaos and return to the valley.'

And a few lines later, you see Malala reaching right for the fundamentals: 'While all this suffering was going on, while people were losing their loved ones, their homes and their livelihoods, our president, Asif Zardari, was on holiday at a chateau in France. "I am confused, *Aba*… What's stopping each and every politician from doing good things? Why would they not want our people to be safe, to have food and electricity?"' Questions that echo around the world.

It's been some years and Malala is now a young woman. But she continues speaking up and asking questions, and has used her prize money to set up a fund to help children, especially girls and women. This prompted me to read, along with *I Am Malala*, a book in which she shares stories from refugee girls around the world, called *We Are Displaced*. Noting that according to statistics from the UNHCR more than 44,000 people a day are forced to flee their homes, Malala urges us, among other things, to 'be kind to a new student who has been displaced and is starting over… Know that empathy is key.' And we in India know too well that it's not just conflict or poverty that creates refugees; it's government policies and people's attitudes too.

It's not just conflict or poverty that creates refugees; it's government policies and people's attitudes too.

Malala was 16 when she was invited to speak at the United Nations: 'I did not write the speech only with UN delegates in mind; I wrote it for every person around the world who could make a difference. I wanted to reach all people living in poverty, those children forced to work and those who suffer from terrorism or lack of education. I called on the world's leaders to provide free education to every child in the world. "One child, one teacher, one book and one pen can change the world."'

Zaynab, who fled war in Yemen and eventually settled in the US, met Malala after a screening of the film *He Named Me Malala*. She says she felt she was meeting a movie star. 'But then,' she says, 'she sat down and started asking us questions, and I realized, *She is just like us*.'

If a girl, just like us, can touch so many lives and make us think about the need for change, what better purpose can books serve?

The columnist is a children's writer and senior journalist.

येना - जर्मनी का कांच का शहर

पुरुषोत्तम चक्रबर्ती

येना पूर्व के पूर्वी जर्मनी का एक छोटा सा शहर है, जिसका साहित्यिक सम्मेलन, वैज्ञानिक अनुसंधान और दार्शनिक अवलोकन का एक पारंपरिक केंद्र होने के कारण एक शानदार अतीत रहा है। 1994 में प्रतिष्ठित पडोवा विश्वविद्यालय, इटली, में एक ICTP फ़ेलो के रूप में काम करते हुए मैंने येना के फ्रीडरिच शिलर विश्वविद्यालय के ऑप्टिक्स विभाग के निमंत्रण को तुरंत स्वीकार कर लिया था। चूंकि मेरा मेरा शोध मूल रूप से 'नॉनलीनियर ऑप्टिक्स' पर आधारित था, इसलिए मैं गोएथ और शिलर के इस शहर का दौरान करना चाहता था, जो नेत्र संबंधी लेंस के क्षेत्र में वैज्ञानिक अन्वेषण हेतु प्रसिद्ध है, और अब संयुक्त जर्मनी में अकादमिक अनुसंधान के समृद्ध केंद्रों का एक शहर है। पडोवा विश्वविद्यालय यूरोप के सबसे पुराने विश्वविद्यालयों में से एक है और येना की तरह इसका भी लेंस निर्माण और उसकी कार्यप्रणाली को लेकर एक पुराना इतिहास रहा है।

ऐसा माना जाता है कि लगभग 4000 साल पूर्व प्राचीन मिस्रवासियों द्वारा सबसे पहले कांच का निर्माण किया गया था लेकिन कांच की वैज्ञानिक खोज काफी नवीन है और येना के साथ करीब से जुड़ी हुई है। फ्रेनहोफर, गोएथ, जीस और शिलर इस क्षेत्र के प्रसिद्ध नाम है।

28 मार्च, 1829 को गोएथ ने एक प्रसिद्ध जर्मन रसायनशास्त्री और येना विश्वविद्यालय में रसायन विज्ञान के प्रोफेसर जोहान वोल्फगैंग डोबेरिनर को लिखकर कहा, कांच में प्रकाश के अपवर्तन और प्रकीर्णन के मध्य संबंध को खोजना सर्वाधिक महत्वपूर्ण होगा... और इसके लिए एक मामूली धनराशि का योगदान करके मुझे खुशी होगी। प्रोफेसर डोबेरिनर रासायनिक तत्वों के आवधिक नियम की पूर्व अवधारणा प्रस्तुत करने और प्रथम लाइटर का आविष्कार करने हेतु जाने जाते है, जिसे डोबेरिनर लैंप के नाम से जाना जाता है। एक व्यावहारिक उत्पाद के रूप में नेत्र संबंधी लेंस के इतिहास का प्रमुख अध्याय येना के निवासियों - रसायनशास्त्री ओटो शोट, भौतिक विज्ञानी अर्नस्ट एब और तकनीशियन कार्ल ज़ीस - द्वारा किए गए पथप्रदर्शक शोध पर आधारित है। इन तीनों ने येना के ''ज़ीस वर्क्स'' में एक साथ मिलकर काम किया, जो उच्च-सूक्ष्मता वाले नेत्र संबंधी उपकरणों के निर्माण के लिए जर्मनी और शायद दुनिया का भी पहला उपक्रम था। हैरानी की बात है कि गोएथ और शिलर के इस महान शहर का गौरवशाली इतिहास,

वोल्क्शौस, जर्मनी के पहले मुफ्त शिक्षण संस्थानों में से एक।

जिसकी जर्मन साहित्य में समृद्ध परंपरा है, को लगता भुला दिया गया है। संभवत: तत्कालीन पश्चिमी जर्मनी और शेष विश्व से अलगाव की लंबी अवधि ने इसे लोगों कि स्मृति से हटा दिया।

येना जर्मन रेलवे के म्यूनिख-बर्लिन रेल ट्रैक से जुड़ा हुआ है। मैं म्यूनिख सेंट्रल स्टेशन से ट्रेन में चढ़ा, जो अल्प समय के लिए प्रतीक्षा करने और निश्चित रूप से जर्मन बियर का आनंद लेना का एक ठिकाना है, परंतु मुझे इस बात का आभास नहीं था कि ट्रेन यात्रा ऐतिहासिक रूप से इतनी ज्ञानवर्धक और शिक्षाप्रद साबित होगी। म्यूनिख-बर्लिन रेलवे ट्रैक 1874 में स्थापित किया गया था। मेरे सह-यात्रियों के अनुसार, पश्चिम जर्मनी की सीमा में आने वाले रेल ट्रैक के इस हिस्से का रख-रखाव बहुत अच्छी तरह से किया गया था जो जाहिर भी था, लेकिन पूर्वी जर्मनी के अंतर्गत इसे न तो पुनर्निर्मित किया गया और न ही तेज रफ्तार ट्रेनों के वेग को झेल पाने के लिए इसका पर्याप्त रखरखाव किया गया। पश्चिम से पूर्व में आर्थिक समृद्धि के एक बड़े प्रवाह के बावजूद भी जर्मनी के इन दो हिस्सों के बीच असमानता स्पष्ट रूप से मौजूद थी, जो जर्मनी के पूर्वी हिस्से के विश्वविद्यालयों के वित्त पोषण में अधिक झलकती थी। उदाहरण के लिए येना में फ्रीडरिच शिलर विश्वविद्यालय के आप्टिक्स विभाग से जुड़े शोधकर्ताओं ने पश्चिमी जर्मनी के विभिन्न विश्वविद्यालयों - हीडलबर्ग, हैम्बर्ग, म्यूनिख, गोटिंगेन, फ्रैंकफर्ट, आदि से अपनी स्नातकोत्तर की डिग्री पूरी की थी। जाहिर है, कि जर्मनी के पश्चिमी हिस्से में स्थित अपने विश्वविद्यालयों में धन की कमी के चलते उन्हें येना का रुख करना पड़ा।

छह नोबेल पुरस्कार विजेता इससे संबद्ध है, और सबसे हालिया नाम हर्बर्ट क्रॉमर का है जिन्होंने 2000 में भौतिकी के लिए नोबेल पुरस्कार जीता था।

यद्यपि हजारों वर्षों से आग जलाने के लिए पानी से भरी कांच की बोतलों के रूप में लेंस जाने जाते थे, लेकिन उत्तल आकार के कांच के लेंस का चश्मा के रूप में पहला उपयोग 13वीं शताब्दी के अंत में पीसा के एलेसेंड्रो डेला स्पाइना और स्वतंत्र रूप से फ्लोरेंस के साल्विनो डी'अर्माती द्वारा किया गया था।

येना से यह निमंत्रण पाकर मैं सम्मानित महसूस कर रहा था क्योंकि यह आप्टिक्स विभाग से आया था जिससे आधुनिक आप्टिक्स के जनक, प्रोफेसर अर्न्स्ट एब, जुड़े हुए थे। इस विश्वविद्यालय की स्थापना 1558 में हुई थी और जर्मनी के दस सर्वश्रेष्ठ विश्वविद्यालयों में इसकी गणना की जाती है। छह नोबेल पुरस्कार विजेता इससे संबद्ध है, और सबसे हालिया नाम हर्बर्ट क्रॉमर का है जिन्होंने 2000 में भौतिकी के लिए नोबेल पुरस्कार जीता था। इसका नाम बदलकर कवि फ्रीडरिच शिलर के नाम पर रखा गया था जो तब दर्शनशास्त्र के प्रोफेसर थे जब येना ने 19वीं सदी के अंत में कुछ सबसे प्रभावशाली बुद्धिजीवियों को आकर्षित किया था।

येना साले नदी की विस्तृत घाटी के अंतर्गत थुरिंगिया प्रांत के पूर्व में एक पहाड़ी परिदृश्य में बसा हुआ है। अपने चट्टानी परिदृश्यों, विविध भू-स्तरों और मिश्रित जंगलों के कारण, यह विभिन्न प्रजाति के जंगली ऑर्किड के लिए जाना जाता है। इस शहर की अर्थव्यवस्था उच्च-प्रौद्योगिकी उद्योग और अनुसंधान पर आधारित है। आज की तारीख में ऑप्टिकल और सूक्ष्मता उद्योग अग्रणी क्षेत्र है, जबकि सॉफ्टवेयर इंजीनियरिंग, अन्य डिजिटल व्यवसाय और जैव प्रौद्योगिकी का महत्व भी बढ़ रहा है।

मैं रात 11 बजे येना पहुंचा, वहाँ तापमान शून्य से 10 डिग्री सेल्सियस नीचे था और मैं एक महीने तक उस शहर में रुका। बर्फ से ढकी सड़कों से गुजरते हुए मैं 400 फीट ऊंचे यूनिवर्सिटी टॉवर के पास आया जो येना का सबसे प्रमुख स्थल है। एक अन्य महत्वपूर्ण इमारत वोल्क्सहौस थी, जो जर्मनी के प्रथम मुक्त शैक्षणिक संस्थानों में से एक थी। इसका निर्माण कार्ल ज़ीस फाउंडेशन से प्राप्त धनराशि से किया गया था और इसे 1903 में खोला गया था। जून 1922 से अक्टूबर 1924 तक, वोल्क्सहौस-येना ने ऑप्टिकल उपकरणों की पहली प्रदर्शनी लगाई थी। 1846 में जीस ने माइक्रोस्कोप और अन्य ऑप्टिकल उपकरणों के उत्पादन के लिए येना में एक कारखाने की शुरुआत की।

20वीं शताब्दी की शुरुआत में, ज़ीस के कार्यों को मिल रही अपार सफलता की वजह से येना संपन्न हो रहा था। यह जर्मनी का सबसे

बड़ा औद्योगिक केंद्र था जहाँ हजारों वैज्ञानिकों, कुशल इंजीनियरों और शोधकर्ताओं के एक साथ काम करने से विज्ञान और इंजीनियरिंग का उत्कृष्ट समन्वय स्थापित हुआ। इस विश्वविद्यालय में बौद्धिक सफलता के एक नए युग की शुरुआत हुई।

शहर का एक हवाई दृश्य।

हैरानी की बात यह है कि साले नदी के दोनों किनारों पर 10 किमी से अधिक क्षेत्र में फैली हुई अनेक पहाड़ियों के बीच भव्य रूप से स्थित इस छोटे से शहर पर बार-बार दुश्मनों द्वारा हमला किया गया जिससे यहाँ के गांवों और कस्बों को भारी नुकसान पहुंचा। युद्धरत दल अक्सर इसकी केंद्रीय भौगोलिक स्थिति के कारण येना से होकर गुजरते थे। किसी समय, येना पर स्वीडन के सैनिकों द्वारा अतिक्रमण कर लिया गया था। नेपोलियन बोनापार्ट के नेतृत्व में फ्रांसीसी सैनिकों और प्रशिया सेना के बीच 14 अक्टूबर, 1806 को हुआ प्रसिद्ध येना युद्ध का अंत प्रशिया सैनिकों और उनके सहयोगियों की विनाशकारी हार से हुआ। फ्रांसीसियों ने येना पर कब्जा जारी रखा और 14 अक्टूबर की लड़ाई के बाद भी यहाँ गंभीर लूटमार करते रहे। हजारों फ्रांसीसी सैनिक इस शहर से तोड़फोड़ करते हुए लोगों के घरों में घुस गए और शहरवासियों को रसद और कीमती सामान सौंपने के लिए मजबूर किया। 1813 में, जर्मनी फ्रांस के कब्जे से मुक्त हो गया।

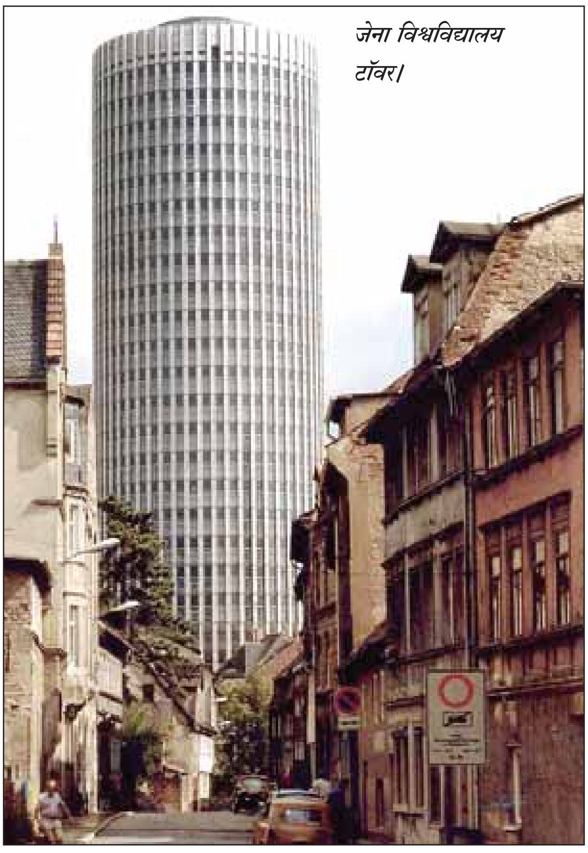

जेना विश्वविद्यालय टॉवर।

द्वितीय विश्व युद्ध के अंतिम चरण के दौरान येना तबाह हो गया था। फरवरी और मार्च 1945 में, बमबारी के हमलों ने शहर को बहुत नुकसान पहुंचाया। जुलाई 1945 में, यह शहर सोवियत संघ का हिस्सा बन गया। येना के लोगों के लिए सबसे चौंकाने वाली घटना येना के पुराने शहर के खूबसूरत चौराहों और ऐतिहासिक इमारतों का उजड़ना था। 1972 में, प्रतिष्ठा के नाम पर 120 मीटर ऊंचे ज़ीस रिसर्च टॉवर का निर्माण किया गया। यह टॉवर अब येना यूनिवर्सिटी की संपत्ति है और इसे येना यूनिवर्सिटी टॉवर के नाम से जाना जाता है।

कार्ल ज़ीस प्लाट्ज 12 का ऑप्टिकल संग्रहालय आकर्षक है। इसे 1920 के दशक में खोला गया था। यहां माइक्रोस्कोप, टेलिस्कोप और चिकित्सा प्रौद्योगिकी के लिए आप्टिक्स के ऐतिहासिक विकास को विभिन्न प्रदर्शनों के माध्यम से कालानुक्रमिक रूप से प्रदर्शित किया गया है। लंबी दूरी तक देखने के उपकरण, जियोडेसिक उपकरण और फोटोग्राफिक लेंस सभी यहाँ प्रदर्शित है। येना का ज़ीस तारामंडल शायद पृथ्वी पर सबसे पुराना तारामंडल है। इसे 1926 में दुनिया के पहले तारामंडल के रूप में जनता के लिए खोला गया था। इसमें, आकाशीय पिंडों को एक कृत्रिम आकाश पर प्रक्षेपित किया जाता है जो पर्यवेक्षकों के लिए अंतरिक्ष और समय का एक आकर्षक प्रभाव पैदा करता है। आज दुनिया भर में 40 से अधिक ज़ीस संग्रहालय है, परंतु येना स्थित सबसे पुराना संग्रहालय अभी भी एक उत्कृष्ट कृति है।

लेखक रोटरी क्लब कलकत्ता नॉर्थ सबअर्बन, रो ई मंडल 3291, के सदस्य है।

जन्मदिन का जश्न

DGE डॉ आनंद झुनझुनवाला तुला दान करते हुए।

रो ई मंडल 3030 के तहत, खामगांव रोटरी क्लब, ने डीजीई डॉ आनंद झुनझुनवाला का जन्मदिन तुला दान करके मनाया, जो दाता के शरीर के वजन के बराबर अनाज या गुड़ दान करने की एक रस्म है। खामगांव के पास दो ग्रामीण स्कूलों के छात्रों को डीजीई के वजन के बराबर 73 किलोग्राम नोटबुक दी गई।

सर्वाइकल कैंसर से बचाव

रो ई मंडल 3100 के तहत, रोटरी क्लब मेरठ उमंग ने डीजीएन अशोक गुप्ता द्वारा झंडी दिखाकर शहर में वर्धमान अकादमी की 65 छात्राओं के लिए सर्वाइकल कैंसर टीकाकरण की सुविधा प्रदान की। क्लब के अध्यक्ष अशोक सिंघल ने कहा कि क्लब का लक्ष्य अगले तीन वर्षों में 500 लड़कियों का टीकाकरण करना है। परियोजना समन्वयक समीर अग्रवाल ने कहा कि क्लब सदस्य पंकज जैन 25 लड़कियों के लिए वैक्सीन प्रायोजित करने पर सहमत हो गए हैं।

लोगों को चलने में मदद करना

नन्हा नित्यानंद तालुकदार अपने माता-पिता के साथ।

रो ई मंडल 3240 के तहत, रोटरी क्लब गुवाहाटी मेट्रो, द्वारा आयोजित एक कृत्रिम अंग फिटमेंट शिविर ने शारीरिक रूप से विकलांग 25 लोगों को चलने में मदद की। दो वर्षीय नित्यानंद तालुकदार सबसे कम उम्र के लाभार्थी थे। एक लाख रुपये की लागत वाले इस शिविर का वित्तपोषण क्लब अध्यक्ष विकास बजाज की बहन तनुजा और उनके पति संदीप सेठिया ने किया था।

अलीपुर में कैंसर केयर वैन

PDG *प्रशांत जानी कैंसर वैन के शुभारंभ में भाग लेते हुए।*

रो ई मंडल 3060 के अंतर्गत, रोटरी क्लब चिकली रिवरफ्रंट एक वैश्विक अनुदान के तहत और 29 अन्य रोटरी क्लबों और गैर सरकारी संगठनों के सहयोग से, हाल ही में 'अलीपुर सोशल वेलफेयर ट्रस्ट अस्पताल' को कैंसर की जांच करने में मदद करने के लिए एक कैंसर डिटेक्शन वैन समर्पित की। अमेरिका से रोटेरियन हर्षद पटेल और इंदिराबेन प्रमुख योगदानकर्ता थे। वाहन में अपने स्थान को छह फीट लंबाई तक विस्तारित करने की एक अनूठी विशेषता है।

रो ई मंडल 3012 ने मनाया रोटरी दिवस

अपने दूसरे रोटरी दिवस के लिए, रो ई मंडल 3012 ने दिल्ली, गाजियाबाद और अन्य स्थानों में स्कूलों, हाउसिंग सोसाइटियों और कॉलोनियों जैसे 67 स्थानों पर 80 रोटरी क्लबों द्वारा आयोजित एक मेगा ड्राइंग प्रतियोगिता का आयोजन किया। इसने लगभग 15,000 बच्चों की प्रविष्टियाँ आकर्षित कीं, जिनमें से 10,000 बच्चों ने व्यक्तिगत रूप से भाग लिया और शेष 5,000 ने ऑनलाइन भागीदारी दिखाई।■

गतिशील शांति में

भरत और शालन सवुर

मानसिक विषहरण करना बहुत अच्छा है, बहुत ही उपचारात्मक है; यह सिर्फ इतना है कि हम में से बहुत से लोग नहीं जानते कि इसे कैसे करना है। इसके अलावा, यदि आप पहले से ही मानसिक रूप से थक चुके हैं, तो डिटॉक्स का मात्र विचार भी थका देने वाला लगता है और आप इसे अनदेखा करना चाहते हैं। आप अकेले रहना चाहते हैं और यह ठीक भी तो है। हाल ही में, मेरी बहन शोभा ने मुझसे कहा, ''कभी-कभी, दुनिया में सबसे अच्छा एहसास तब होता है, जब मैं अकेले बैठूं, आराम करूं और किसी से बात न करूं।'' मैं उसकी इस भावना से सहमत हूं।

मानसिक थकावट आत्म-कैद है। इसका मतलब है कि या तो मन अभिभूत है, टूटने के बिंदु तक फैला हुआ है या बहुत नीचे है। इसके लिए आप जो सबसे उपयोगी चीज कर सकते हैं, वह है, इत्मीनान से कुछ न करने वाली छुट्टी के लिए समय निकालना।

सोग्याल रिनपोछे इसकी तुलना एक समतल सतह पर मुट्ठी भर रेत डालने से करते हैं, जहाँ प्रत्येक दाना अपने आप जम जाता है। आप इसे आराम करने की आजादी देते हैं ताकि थकान जो वास्तव में विचारों और भावनाओं का एक तंग बंडल है, वह स्वाभाविक रूप से ढीली हो जाती है और आसान हो जाती है।

विशालता में विश्राम करो। बस शांत बैठो, शरीर ढीला, भाषण अनुपस्थित, मन शांत... बिल्कुल कोई प्रयास नहीं, केवल एक गहरा मीठा विश्राम। कोई शब्द नहीं। कुछ नहीं। यह किसी की प्राकृतिक विशालता में किया जा रहा है । जब हमें लगता है कि हमें कुछ नहीं चाहिए, सब कुछ है, जब हम इस बात से चिंतित नहीं होते हैं कि दूसरे हमारे बारे में क्या सोचते हैं या कुछ कैसे होने वाला है, हम विशालता में हैं

विशालता और भी गहरी होती जाती है- इसका मतलब है कि इस सहजता में रहने की कोई सीमा नहीं है। रॉबर्ट फुलघम इसे पूरी तरह से व्यक्त करते हैं जब वे कहते हैं, शांति कोई ऐसी चीज नहीं है, जिसकी आप कामना करते हैं। यह कुछ ऐसी चीज है जिसे आप बनाते हैं, कुछ आप हैं और कुछ आप जो दे देते हैं। मानसिक शांति निष्क्रिय नहीं है, जैसा कि कई लोग मानते हैं, यह गतिशील है, यह आपकी धारणा को व्यापक रूप से खोलती है जहां आप दुनिया को उसकी सारी चमक में देखते हैं।

शांति गतिशील है। हाल ही में, मैंने 110 साल पहले हुआ एक सच्चा जीवन का किस्सा पढ़ा, जब वेंकटराम अय्यर नामक एक बुजुर्ग सज्जन प्रसिद्ध अरुणाचल गुफाओं में ऋषि श्री रमण महर्षि के साथ रहे। श्री रमण से निकलने वाली दीप्तिमान शांति इतनी उत्साहपूर्ण थी कि एक परिवहित अय्यर ने ऋषि के चारों ओर खुशी से नृत्य किया और अपने गुरु पर पांच भजन लिखे। ये भजन आज भी गाए जाते हैं।

जब मन अपने दबावों से मुक्त हो जाता है, तो प्रभाव शांति या ऊर्जा का एक रोमांचक विद्युत झटका हो सकता है। और यदि आप सतर्क हैं, तो आप मन को हर समय स्वच्छ और आनंदित रख सकते हैं - या तो शांति-अनुभव को याद करके या कई बार धीरे-धीरे सांस रोककर मन को वर्तमान क्षण में स्थितिजन्य संकट से दूर कर सकते हैं, जो बिखरा जा रहा है। जैसा कि एकहार्ट टॉले हमेशा प्रोत्साहित करते हैं, जीवन और जीवन-स्थिति के बीच अंतर करें। शरीर के माध्यम से मन को किसी स्थिति पर अपनी ऊर्जा बर्बाद करने के बजाय एक जीवित क्षण में सांस लेने दें।

दिनचर्या जो घूमती है। शरीर मन का बहुत बड़ा सहयोगी है। कुछ दिनों पहले, मैं थोड़ा थका हुआ महसूस कर रहा था, मेरे पैरों में दर्द हो रहा था और मैं अपने व्यायाम की दिनचर्या को छोड़ने का भी विचार कर रहा था और फिर, डॉ बीएम हेगड़े धीर्मिलिश पर मन लगाते हैं और कहते हैं, जब आप शारीरिक और मानसिक रूप से थके हुए घर आते हैं तो आप क्या करते हैं? आप लेट जाते हैं। कभी मत लेटिये! लंबी सैर के लिए जाइये और देखिये कि आप कैसा महसूस करते हैं! मैंने फिर एक घंटे के लिए एक कुर्सी-साईकिल पर पैर मारे, फिर ऊपरी शरीर के व्यायाम के लिए डम्बल उठाया, और फिर पेट की कमी के लिए अनिवार्य रूप से योग चटाई पर मैंने क्रन्चस् मारे। खुशहाली

और सद्भावना से भर रहा था में और चमक रहा था। व्यायाम मन की हताशा को दूर करते हैं, तंग मांसपेशियों को आराम देते हैं और फील-गुड एंडोर्फिन छोड़ते हैं और आपको नए सिरे से अपने आप को उत्साहित करते हैं।

मानवीय बनें। कृपया प्रतिदिन समय निकाल कर चिंतन करें कि आप किस प्रकार की ऊर्जा परिस्थितियों, लोगों के जीवन और दुनिया में लाते हैं। क्या आप सद्भाव या कोलाहल पैदा कर रहे हैं? इस उच्च-प्रौद्योगिकी की दुनिया में, याद रखें कि रोबोट कुशल हो सकते हैं, कंप्यूटर तेज हो सकते हैं, लेकिन केवल मनुष्य ही सामंजस्यपूर्ण और रचनात्मक हो सकते हैं और हां, कमजोर हो सकते हैं। मानव बनें, सामंजस्यपूर्ण बनें। ऐसे अद्भुत इंसान बनें कि आप अपने ही साहचर्य से प्यार करें और दूसरों के लिए एक सहानुभूतिपूर्ण आशीर्वाद बनें।

दीपक चोपड़ा धीरे-धीरे हमें आगे ले जाते हैं जिसे वे भविष्य की रचनात्मक बुद्धि कहते हैं। वह समझाते हुए आग्रह करते हैं, प्यार और सहानुभूति साझा करें। तनाव, न कि कोविड , नंबर एक महामारी है। जब आप महसूस करते हैं कि दूसरे क्या महसूस करते हैं, तो तंत्रिका नेटवर्क पुनर्गठित होता है, जिससे आप प्यार महसूस करते हैं। प्यार ठीक कर देता है। वे कहते हैं, प्रकृति स्वास्थ्य की देखभाल करती है। बस आप स्वस्थ रहने के लिए एक छोटे से इरादे का परिचय दें ...और जैसा कि बाइबल कहती है, मांगो तो तुम्हें मिलेगा। यह मन को शांत करता है और आपके इरादे को यूनिवर्सल माइंड में डालता है और यह आपके पास पूर्ति के रूप में वापस आता है।

भेद्यता विष नहीं है, खामियां विष नहीं हैं। इसलिए, उन पर झल्लाहट न करें, बल्कि उन्हें एक स्पष्ट परिप्रेक्ष्य में देखें। भेद्यता हमारे अवरोधों को नीचे लाती है और सेतुओं का निर्माण करती है - मानव से मानव। जैसा कि विक्टोरिया प्रैट कहते हैं, लोग सोचते हैं कि भेद्यता आपको कमजोर बना देगी, लेकिन यह इसके विपरीत है। यह दर्शाता है कि आप देखभाल करने के लिए काफी मजबूत हैं। खामियां नई दिशा या नई निविष्टियां लाती हैं - उदाहरण के लिए, गलत समय के संगीत नोट्स ने नए प्रकार के संगीत का निर्माण किया है। अपूर्णताओं ने दुनिया को अद्भुत जापानी वाबी-साबी तरीका भी दिया - सुंदरता को अपूर्णता में देखना।

उस संदर्भ में, पूर्णता में इतने गहरे मत उतरो कि तुम्हारा मन क्रोध, खेद, अपराधबोध में डूब जाए। किसी काम को पूरा करने या पूरा करने के लिए इतने अधिक घंटे काम में न लगाएं। ब्रेन-ड्रेन, माइंड-स्ट्रेन इसके लायक नहीं हैं। कल इशारा करता है, आज कहता है बस हो गया।

रात से सीखें। कार्य-डेस्क से उतरें और रात में जायें। रात के उपहार का उपयोग सभी चिंताओं, सभी चिंताओं को दूर करने के लिए करें। चिकनी और फिसलती हुयी योग निद्रा के ध्यान का मार्गदर्शन करते हुए सोएं। रात की दी हुयी शांति में आराम करें शांति जहां इतने मीठे समाधान और प्रेरणादायक उत्तर बुने जाते हैं। फिर,

मानव बनें, सामंजस्यपूर्ण बनें। ऐसे अद्भुत इंसान बनें कि आप अपने ही साहचर्य से प्यार करें और दूसरों के लिए एक सहानुभूतिपूर्ण आशीर्वाद बनें।

आसमान की मुस्कान के लिए उठें। अब, आप अपने कार्य-डेस्क पर वापस जा सकते हैं।

कुछ सुझाव जो थकान को दूर करते हैं:

- दूसरों की मदद करें, यह एंडोर्फिन को बढ़ाने में मदद करता है। एंडोर्फिनिस्ट बनें।
- सुंदरता का आनंद लें। सुंदर ढंग से प्रशंसा दें और प्राप्त करें।
- यदि कोई आपके बटन दबाता है, तो प्रतिक्रिया करने के बजाय अवलोकन करने का अभ्यास करें। आत्मसंयम से आत्मबल बढ़ता है और यह सोना है ।
- स्वीकार करें कि ऐसी चीजें हैं जिन्हें आप बदल नहीं सकते हैं। इसके बाद मन अपनी बुद्धिमत्ता को उन चीजों पर प्रशिक्षित कर सकता है जिन्हें आप बदल सकते हैं।
- मुझे नहीं पता कहने के लिए तैयार रहें। इन तीन मुक्तिदायक वचनों को सुनकर मन को विश्राम मिलता है। यह दिखावा करना थकाऊ है कि आप सब कुछ जानते हैं।

अंत में, एडिथ आर्मस्ट्रांग से कुछ व्यावहारिक ज्ञान: मैं अपने दिमाग के टेलीफोन को शांति, सद्भाव, स्वास्थ्य, प्रेम और प्रचुरता के लिए खुला रखता हूं। फिर, जब भी संदेह, चिंता, या डर मुझे कॉल करने का प्रयास करते हैं, तो उन्हें एक व्यस्त संकेत मिलता रहेगा - और जल्द ही वे मेरा नंबर भूल जाएंगे।

लेखक फिटनेस फॉर लाइफ, *और* बी सिम्पली स्पिरिचुअल - यू आर नैचुरली डिवाइन *के लेखक है और फिटनेस फॉर लाइफ कार्यक्रम के शिक्षक है।*

रो ई दक्षिण एशिया कार्यालय से संदेश

2022 में राष्ट्रीय टीकाकरण दिवस (NID)

23 जनवरी, 2022 को द्विसंयोजी मौखिक पोलियो टीके (bOPV) का उपयोग करके अगले राष्ट्रीय टीकाकरण दिवस की योजना बनाई गई है जिसके अंतर्गत 0-5 वर्ष की आयवर्ग के सभी बच्चों को कवर करने का लक्ष्य रखा गया है। स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय ने भारत के राष्ट्रपति द्वारा 22 जनवरी, 2022 को इसका उद्घाटन करने का प्रस्ताव रखा है। सम्पूर्ण कोविड दिशा-निर्देशों का पालन करते हुए छोटी से छोटी योजनाओं एवं IEC अभियानों की तैयारियां पहले से की जाएंगी।

पॉल हैरिस सोसायटी

पॉल हैरिस सोसाइटी (PHS) उन व्यक्तियों को मान्यता देता है जो रोटरी संस्थान के वार्षिक कोष, पोलियोप्लस कोष या एक अनुमोदित वैश्विक अनुदान हेतु प्रत्येक रोटरी वर्ष में 1,000 डॉलर या उससे अधिक का योगदान करने का इरादा रखते हो। PHS योगदान रोटरी फाउंडेशन सस्टेनिंग मेम्बर (केवल वार्षिक कोष योगदान के लिए), पॉल हैरिस फेलो, मल्टीपल पॉल हैरिस फेलो और मुख्य दानकर्ता एवं क्लब मान्यता बैनर हेतु गिना जाता है। मान्यता में शेवरॉन-स्टाइल की एक पिन और मंडल PHS समन्वयक द्वारा प्रदान किया जाने वाला प्रमाण पत्र शामिल होता है। अधिक जानकारी के लिए वेबपेज पर जाएं या पॉल हैरिस सोसाइटी का ब्रोशर पढ़ें।

समाज के सदस्यों को उनके योगदान के लिए कैसे मान्यता दी जाती है?

समाज के नए सदस्यों को मंडल या क्लब कार्यक्रम में एक प्रमाण पत्र और शेवरॉन पिन देकर मान्यता दी जाती है। नए सदस्यों को मान्यता देने के लिए PHS समन्वयक स्वयं क्लब या मंडल का दौरा करते है या ऐसा करने के लिए किसी अन्य रोटरी अधिकारी को कार्यभार सौंपते है।

अपने क्लब/मंडल में PHS का विस्तार करने के तरीके

- दिखाएँ कि कैसे संस्थान के योगदान से दुनिया भर में बड़े बदलाव आ रहे है और दुनिया की प्रमुख जरूरतों के संवहनीय समाधान निकाले जा रहे है
- क्लब और मंडल प्रस्तुतियों के माध्यम से समाज के महत्व की व्याख्या करें।
- *Rotary.org* पर पॉल हैरिस सोसाइटी पेज पर जाकर या PHS फॉर्म पर साइन इन करके सदस्यों को ऑनलाइन शामिल होने हेतु प्रोत्साहित करें
- संभावित सदस्यों की पहचान करने के लिए संस्थान रिपोर्ट का उपयोग करें और उन्हें रूबरू बैठकों में शामिल होने हेतु आमंत्रित करें
- PHS सदस्यों के लिए मान्यता कार्यक्रमों की योजना तैयार करें या अन्य उपयुक्त आयोजनों के दौरान उन्हें मान्यता प्रदान करें

संस्थान मान्यता अंक

- संस्थान मान्यता अंक उन दानकर्ताओं को प्रदान किए जाते है जो वार्षिक कोष या पोलियोप्लस के माध्यम से TRF में योगदान देते है, या जो संस्थान अनुदान के प्रायोजन में योगदान देते है।
- दानकर्ताओं को इन कोषों में दान किए गए प्रत्येक अमेरिकी डॉलर के लिए एक मान्यता अंक प्राप्त होता है। अक्षयनिधि में किया योगदान पात्र नहीं है।
- दानकर्ता अपने संस्थान मान्यता अंक दूसरों को हस्तांतरित कर सकते है ताकि उन्हें पॉल हैरिस फेलो या मल्टीपल पॉल हैरिस फेलो के रूप में योग्य होने हेतु मदद मिल सके।
- एक बार में कम से कम 100 फाउंडेशन मान्यता अंकों को स्थानांतरित किया जाना चाहिए, और दानकर्ता को मान्यता एवं स्थानांतरण अनुरोध फॉर्म को भरकर उस पर हस्ताक्षर करना चाहिए।
- ये अंक व्यक्तियों द्वारा किसी क्लब या मंडल को स्थानांतरित नहीं किए जा सकते।

क्लब और मंडल नेतृत्वकर्ता ऑनलाइन क्लब रेकॉगनिशन समरी देख सकते है जिसमें *My Rotary* लॉगिन के माध्यम से मान्यता राशि, मान्यता अंक, वर्तमान पॉल हैरिस फेलो स्तर और उस स्तर तक पहुँचने की तिथि शामिल होती है।

रोटरी इंटरनेशनल प्रेसीडेंट शेखर मेहता एंड राशि मेहता एन्डाउड फंड

वर्तमान रो ई अध्यक्ष शेखर मेहता के सम्मान में ज़ोन 4, 5, 6 और 7 के सभी 4 EMGA द्वारा 9 नवंबर को रोटरी इंटरनेशनल प्रेसीडेंट शेखर मेहतर एंड राशि मेहता एन्डाउड फंड नामक एक अक्षय निधि कोष की औपचारिक रूप से शुरुआत की गई। इस पहल को न्यासी गुलाम वाहनवटी और रो ई निदेशक ए एस वेंकटेश एवं डॉ महेश कोटबागी ने समर्थन दिया जिन्होंने EMGA द्वारा निर्धारित अक्षय निधि के लिए 1 मिलियन डॉलर एकत्रित करने के लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु रोटरी नेतृत्वकर्ताओं को प्रेरित किया।■

On the racks

Stories I must tell

Author : **Kabir Bedi**
Publisher : **Westland**
Pages : **319; ₹256**

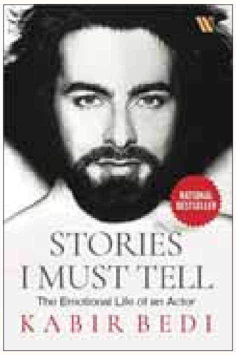

From the first magical encounter with The Beatles as a student in Delhi to working as an interviewer for All India Radio to ventures in Italy and Europe, this book is a collection of anecdotes from Bedi's life. It will take readers through the highs and lows of his professional and personal life, his relationships, including marriage and divorce. From being a sinister husband in *Khoon Bhari Maang* to playing the charming Prince Omar in *The Bold and the Beautiful*, he shares an interesting account of his exciting stints in film, television and theatre across India, Europe and Hollywood. He poignantly writes about his battle to save his schizophrenic son who later committed suicide. He also tells the fascinating love story of his Indian father, a philosopher in Europe, and his British-born mother, the world's highest-ranked Buddhist nun.

Know your Rotary

Author : **N Bhaskaran Pillai**
Pages : **447; ₹399**

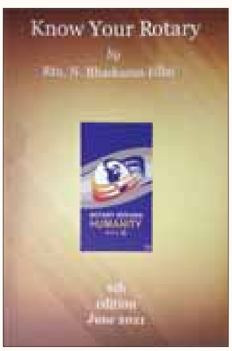

The book has detailed information on all Rotary aspects ranging from how it was started, themes of various leaders, RYLA, conventions, awards, COL, TRF and more. It is a guide and has reference material for both Rotarians and non-Rotarians. The author has also mentioned important events in the history of Rotary (year-wise) in this book, spelt out the abbreviations of Rotary terms, and listed the chronological growth of Rotary, Rotary zones and Rotary fellowships groups for networking. The book covers all avenues of services, district and club responsibilities, regional magazines, International Assemblies, women in Rotary, Rotary in UN and more.

Laughing Gas

Author : **Jai Shetty**
Publisher : **Minds Power Publication**
Pages : **180; ₹300**

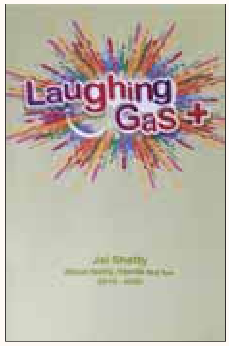

Based on the real-life experience of the author this book is a gentle reminder that life is full of laughter and one must laugh not just to be happy but healthy too. From Indian cinema to yoga, the author shares hilarious anecdotes and some special moments of his life. Written in a casual style the book includes plenty of Rotary experience, as well as poems by his wife PDG Rekha Shetty, a couple of caricatures and sketches.

Born a Muslim

Author : **Ghazala Wahab**
Publisher : **Aleph Book Company**
Pages : **408; ₹710**

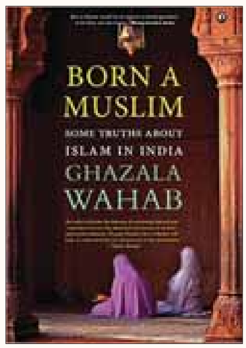

This book gives an overview of the lives of Muslims post-Partition in India. The author talks about how female genital mutilation, veil, segregation, lack of education, divorce and inheritance have made Muslim women powerless and insists that this is not a result of faith, but selective use of religious texts by the clergy. She narrates stories of Muslims hiding their identity, and reverting to Hinduism to prove their secular credentials. The author talks about how "Saudi Wahabbism is making Indian Islam primitive."

Compiled by Kiran Zehra

मंडल गतिविधियाँ

रोटरी क्लब भुवनगिरी - रो ई मंडल 2981

50 दृष्टिबाधित लाभार्थियों को ₹2.50 लाख की लागत से श्रवण यंत्र और सफेद छड़ी दान किए गए।

रोटरी क्लब फरीदाबाद संस्कृति - रो ई मंडल 3011

ग्रेटर फरीदाबाद स्थित श्रद्धा मंदिर पब्लिक स्कूल में आयोजित किए गए एक नेत्र परीक्षण शिविर में 300 से अधिक बच्चों की जांच की गई।

रोटरी क्लब सलेम एवरग्रीन - रो ई मंडल 2982

DG के सुंदरलिंगम ने जरीकोंडालमपट्टी गांव के सरकारी गर्ल्स HSS स्कूल में एक शौचालय खंड (₹3 लाख) का उद्घाटन किया।

रोटरी क्लब गाज़ियाबाद नॉर्थ - रो ई मंडल 3012

रो ई अध्यक्ष शेखर मेहता ने वरदान अस्पताल का दौरा किया जहाँ क्लब ने सीटी स्कैन मशीन लगाई और इस पहल के लिए पूर्व अध्यक्ष मनोज अग्रवाल की सराहना की।

रोटरी क्लब गुड़ालूर गार्डन सिटी - रो ई मंडल 3000

DG आर जयक्कन और थेनी जिला कलेक्टर के वी मुरलीधरन ने एक प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में 2,800 पौधों के साथ एक 26,000 वर्ग फुट के मियावाकी जंगल का उद्घाटन किया।

रोटरी क्लब नागपुर मेट्रो - रो ई मंडल 3030

जनता और पुलिस अधिकारियों को लगभग 8,000 मास्क वितरित किए गए। खझझ अंबरीश अक्रे ने 2,000 मास्क दान किए।

मंडल गतिविधियाँ

रोटरी क्लब तारापुर - रो ई मंडल 3060

क्लब के सदस्यों ने रोटेरियन राजू वाघेला के तारापुर स्थित खेत में 115 पौधे लगाएं।

रोटरी क्लब मेरठ - रो ई मंडल 3100

क्लब अध्यक्ष तृप्ति मित्तल ने गरीब बच्चों को सशक्त बनाने वाली परियोजना *हौसले की उड़ान* के उद्घाटन पर 125 विद्यार्थियों के साथ बातचीत की।

रोटरी क्लब लुधियाना ग्रेटर - रो ई मंडल 3070

रोटेरियन परम सैनी और एम एस औलुख ने जवाड़ी में आयोजित एक इंटरेक्ट अभिविन्यास बैठक में रोटरी अंतर्राष्ट्रीय और चार मार्ग परीक्षण पर बात की।

रोटरी क्लब पलिया कलां - रो ई मंडल 3120

क्लब ने टीकाकरण को बढ़ावा देने के लिए पलिया कलां के सरकारी अस्पताल में एक टीकाकरण सेल्फी बूथ स्थापित किया और डॉ अजीत सिंह, अंकित दीक्षित एवं अधीक्षक हरेंद्र वरुण को सम्मानित किया।

रोटरी क्लब उकलाना मंडी - रो ई मंडल 3090

DG परवीन जिंदल, PDG गण प्रेम अग्रवाल, राजीव गर्ग और AG हरकिरन सिंह की उपस्थिति में शारीरिक रूप से अक्षम 21 लोगों को ₹1.8 लाख की लागत से ट्राइसाइकिल दान की गई।

रोटरी क्लब कोरेगाँव पार्क - रो ई मंडल 3131

एक आदिवासी बस्ती अंदगांव के विद्या विकास मंदिर स्कूल में दोबारा इस्तेमाल किए जा सकने वाले करीब 150 सैनिटरी पैड वितरित किए गए।

मंडल गतिविधियाँ

रोटरी क्लब औरंगाबाद - रो ई मंडल 3132

औरंगाबाद के पास स्थित ठाकरवाड़ी गांव में बारिश से प्रभावित आदिवासी परिवारों को छह गायें दान की गईं।

रोटरी क्लब हुबली ईस्ट - रो ई मंडल 3170

हुबली स्थित रोटरी स्कूल बेंगेरी के इंटरेक्ट क्लब के सहयोग से आयोजित पोलियो जागरूकता रैली में पांच सौ स्कूली बच्चों ने भाग लिया।

रोटरी क्लब बॉम्बे जुहू बीच - रो ई मंडल 3141

अपनी 9 साल पुरानी *फ्रीडम फॉर गर्ल्स* परियोजना के तहत, क्लब लगभग 21 लाख सैनिटरी पैड वितरित करके एवं कॉलेजों और ग्रामीण क्षेत्रों में वेंडिंग मशीन और नैपकिन इंसिनरेटर लगाकर 25,000 लड़कियों तक पहुंचा।

रोटरी क्लब हसन रॉयल - रो ई मंडल 3182

पोक्सो एक्ट पर आधारित एक महिला सशक्तिकरण कार्यक्रम में 200 से अधिक लड़कियां उपस्थित थीं। जिला जज रविकांत और क्लब अध्यक्ष मनु एस आर मौजूद रहे।

रोटरी क्लब गुडूर - रो ई मंडल 3160

PDG सुरेंद्र बोम्मिरेड्डी ने अपने दिवंगत पिता और क्लब के चार्टर सदस्य बंदी वेणु गोपाल रेड्डी की याद में रोटेरियन श्रीधर रेड्डी बंदी द्वारा प्रायोजित GSR म्यूनिसिपल हाई स्कूल में एक RWH इकाई का उद्घाटन किया।

रोटरी क्लब बैंगलोर ब्रिगेड्स - रो ई मंडल 3190

नांगली गांव के सुभाष चंद्र बोस ग्रामीण उच्च विद्यालय में कम्प्यूटर लैब का उद्घाटन किया गया।

मंडल गतिविधियाँ

रोटरी क्लब टँगासेरी - रो ई मंडल 3211

DG के श्रीनिवासन की उपस्थिति में, केरल के कोल्लम स्थित सेंट एंटनीस एलपी स्कूल, वाडी, को बड़ी संख्या में खेल सुविधाएं दान की गईं।

रोटरी क्लब मद्रास चेन्ना पटना - रो ई मंडल 3232

DGN रवि रमन ने मंडल व्यावसायिक सेवा अध्यक्ष एस एन बालसुब्रमण्यन की मौजूदगी में छह शिक्षकों को सर्वश्रेष्ठ शिक्षक पुरस्कार से सम्मानित किया।

रोटरी क्लब तिरुनेलवेली टाउन - रो ई मंडल 3212

क्लब अध्यक्ष एल शंकरमूर्ति ने GMS अकादमी और शोटोकन कराटे-डू इंटरनेशनल एसोसिएशन के साथ साझेदारी में आयोजित कराटे शिविर में सभी प्रतिभागियों को 10,000 की लागत के नुंचाकू और बो स्टॉक प्रदान किए।

रोटरी क्लब राउरकेला क्वींस - रो ई मंडल 3261

कल्याणी रे महाविद्यालय में DG सुनील पाठक द्वारा DGS अखिल मिश्रा, -G विकास गोलछा एवं क्लब सलाहकार अजय अग्रवाल की उपस्थिति में लड़कों के एक शौचालय एवं हाथों की धुलाई के स्टेशन का उद्घाटन किया गया।

रोटरी क्लब वनियमबाड़ी - रो ई मंडल 3231

रोटरी भवन से बस अड्डे तक पोलियो जागरूकता रैली निकाली गई।

रोटरी क्लब गीतांजलि कोलकाता - रो ई मंडल 3291

क्लब ने वृद्ध महिलाओं के एक आवास, सेवा, में वरिष्ठ नागरिक दिवस एवं रक्षा बंधन मनाने के लिए रोटरेक्टरों के साथ हाथ मिलाया।

वी मुत्तुकुमारन द्वारा संकलित

नौकरशाही और एयरपोर्ट

LBW

टीसीए श्रीनिवासा राघवन

पिछले महीने एक दस्तावेज पर दस्तखत करने के लिए अपनी पत्नी के साथ मेरा बंगलुरु जाना हुआ जो इलेक्ट्रॉनिक तरीके से भी किये जा सकते थे। आखिरकार राज्य सरकार को जो भी दस्तावेज चाहिए थे, हमने सभी अपलोड कर दिए थे। लेकिन इसके बावजूद सरकारी अधिकारी-तन्त्र की खासियत है जो वो अक्सर करते हैं कि एक हाथ से भला करते हैं और दूसरे हाथ से वापस खींच लेते हैं। खैर हवाई जहाज से वहां तक पहुँचने में खासी रकम खर्च हो गई, वो भी सिर्फ हस्ताक्षर करने के लिए, क्योंकि अफसरों का आदेश था कि आपको व्यक्तिगत रूप से उपस्थित होना पड़ेगा, डिज़िटाइज़ेशन से उन्हें कोई मतलब नहीं था।

प्रौद्योगिकी के साथ यहीं तक, बस, आगे नहीं। यह कष्टप्रद था लेकिन कोविड की वजह से लागू किये गए लम्बे अंतराल के बाद ये स्वागत योग्य भी था।

पर हमें पांच दिन लग गए क्योंकि हम सप्ताहांत पर गए थे, सोचा था कुछ दोस्तों और रिश्तेदारों से भी मुलाक़ात हो जाएगी। हो सकता है आपको लग रहा हो कि मैं शिकायत कर रहा हूँ, कुल मिला कर हमारी पांच दिन की यात्रा ख़ुशगवार रही, खूब आनंद उठाया, कम से कम एम जी रोड पर स्थित होटल की वजह से जहां हम ठहरे थे। हाँ, लेकिन हमारा एयरपोर्ट का अनुभव ज़रा भी आनंददायक नहीं था, दिल्ली से आते और जाते हुए, दोनों बार और बंगलुरू से वापस लौटते हुए भी।

वजह: भारी भीड़। वास्तव में, लाइनें इतनी लम्बी थी की हमारी फ्लाइट छूटते - छूटते रह गई। हम वेब चेक इन करना भूल गए और कंप्यूटर हमारा नाम ही नहीं दिखा रहा था। इस समस्या से जूझने में उस भद्र कर्मचारी ने सिर्फ 25 मिनट लिए तब तक हमारे पीछे एक मील लम्बी लाइन लग गई थी। पर मेरी नज़र सिक्योरिटी लाइन पर थी जो हमारे लिए अधिक महत्वपूर्ण थी वो उससे भी लम्बी नज़र आ रही थी - इतनी लम्बी कि एयरलाइन ने बिज़नेस लाइन से हमें अंदर पहुंचाने के लिए अपने कर्मचारी को साथ भेजा - जो बिलकुल खाली थी। एक बन्दा भी नहीं था।

पर भारत में कुछ भी इतना आसान कहाँ होता है। अब पुलिसकर्मी ने हमें रोक दिया। तभी मेरी पत्नी ने पर्स में से वरिष्ठ नागरिक कार्ड निकाला। इसके बाद ही उसने दया दृष्टि दिखाते हुए हमें जाने दिया। गेट 700 मीटर दूर था हम किसी तरह हाँफते हाँफते पहुंचे और क्रतज्ञता पूर्वक सीटों में धंस गए। जब थोड़ी सांस आई तो चारों तरफ सर घुमा कर देखा, उस क्षेत्र में इक्का दुक्का आदमी नज़र आ रहा था। मेरी पत्नी बोली, लगता है फ्लाइट खाली जा रही है और हमेशा की तरह अपने फोन में व्यस्त हो गयी।

समय काटने के लिए मैं वैसे ही डिपार्चर बोर्ड को देख रहा था कि अचानक मैंने कुछ देखा और झटके से खड़ा हो गया, शोर मचाते हुए पत्नी से बोला, 'चलो, चलो। बेचारी, इतनी हैरान हो गई कि हड़बड़ाहट में उसने वो किया जो वो कभी कभार ही करती है - मेरी बात पर गौर। वो देखो, एयरलाइन ने गेट बदल दिया परंतु कोविड की वजह से चल रही स्टाफ की कमी के कारण घोषणा नहीं कर पाए। क्या नीच वजह थी, उनकी मेहरबानी।

एयरलाइन ने गेट बदल दिया परंतु कोविड की वजह से चल रही स्टाफ की कमी के कारण घोषणा नहीं कर पाए। क्या नीच वजह थी, उनकी मेहरबानी।

खैर हम फटाफट नए गेट की तरफ बढे और विमान के अंदर बैठ गए - आठ पंक्ति दूर बीच की सीटों पर। हमें और क्या चाहिए था। मैं वापसी फ्लाइट के अनुभव से आपको बोर नहीं करूंगा, यूं समझ लीजिये कि वापसी में भी कमोबेश यही अनुभव रहा था। लेकिन हर चीज में अच्छाई भी छिपी होती है,क्योंकि जब मैंने ये किस्सा अपने मित्र को सुनाया तो उसने मेरा एक नए मुहावरे से परिचय कराया। आह वो बोली , रिवेंज टूरिज्म.। मैंने पूछा इसका क्या मतलब है।

ये लोगों का प्रतिशोध है, वो बोली, लम्बे अरसे तक बंदिश में रखने और यात्रा की अनुमति नहीं देने का प्रतिशोध ।

तो मित्रों, उठो, बाहर निकलो और अपना प्रतिशोध लो, पर ध्यान रहे आपको समय से चार घंटे पहले एयरपोर्ट पर पहुंचना है और हाँ वेब चेक इन ज़रूर कर लेना - और ये भी देखते रहना की बीच में गेट नंबर तो नहीं बदल दिया। क्योंकि बंगलुरु से लौटते समय उन्होंने हमारे साथ यही किया था और जब तक नए गेट पर चेक इन शुरू होता इसमें एक घंटा और लग गया। हवाई जहाज के उतरने के बाद भी 27 मिनट हम भीतर ही बैठे रहे जबकि अपना सामान लेने के लिए 45 मिनट इंतज़ार करना पड़ा।■

संक्षेप में

रोटेरियन डॉक्टर के लिए पद्मश्री

रो ई मंडल 3262 के तहत, रोटरी क्लब बरहामपुर के पूर्व अध्यक्ष डॉ कृष्ण मोहन पथी को ओडिशा के गंजम जिले में आदिवासी समुदाय की सेवा के लिए पद्म श्री पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। पाथी 30 वर्षों से आदिवासियों का इलाज कर रहे हैं और एक धर्मार्थ संगठन, भारद्वाज गुरुकुल आश्रम चलाते हैं, जो आदिवासियों को मुफ्त स्वास्थ्य सेवा प्रदान करता है।

रोटेरियन को मिली कैबिनेट बर्थ

रोटरी क्लब जयपुर राउंडटाउन, RID 3054, के सदस्य डॉ महेश जोशी को राजस्थान कैबिनेट में मंत्री के रूप में शामिल किया गया है। वह पब्लिक हेल्थ इंजीनियरिंग डिपार्टमेंट (पीएचईडी) में पानी और स्वच्छता संभालेंगे जो रोटरी का भी एक प्रमुख फोकस क्षेत्र है।

मलाला की शादी

युवा आइकन और लड़कियों के लिए शिक्षा की चैंपियन, मलाला यूसुफजई ने हाल ही में उस समय सुर्खियां बटोरीं जब उन्होंने पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड के एक उद्यमी और महाप्रबंधक असर मलिक से अपनी शादी की घोषणा की। मलाला ने इंस्टाग्राम और ट्विटर पर अपने विवाह समारोह की तस्वीरें साझा कीं, जो इंग्लैंड के बर्मिंघम में उनके घर पर हुई थी। जब उन्होंने अपने पति असर मलिक का हाथ चूमते हुए एक और झलक साझा की तो नेटिज़न्स एक उन्माद में आ गए।

हेलिकॉप्टर की सवारी पर गर्भवती गायें

वार्षिक गाय परेड के लिए, 12 गर्भवती या घायल गायों को पहाड़ों से अपने ग्रीष्मकालीन चरागाहों से स्विट्ज़रलैंड में उर्नरबोडेन घाटी में उतरने में मदद करने के लिए, किसानों ने गोवंश को समुद्र तल से लगभग 6,400 फीट ऊपर, हेलीकॉप्टर द्वारा एक बार में सिर्फ एक गाय करते हुए पहाड़ से नीचे उतारा। हर साल लगभग 1,000 गायें गाला परेड के लिए स्विस आल्प्स में उच्च भूमि से घाटी की ओर वार्षिक यात्रा करती हैं।

1,500 साल पुरानी वाइनरी का पता चला

इज़राइल पुरातनता प्राधिकरण के पुरातत्वविदों ने मध्य इज़राइल में दुनिया की सबसे बड़ी ज्ञात बीजान्टिन-युगीन वाइनरी की अचानक खोज लगायी है। खोज में पांच वाइनप्रेस का एक जटिल वेब शामिल है, प्रत्येक में लगभग 2,400 वर्ग फुट वाइनप्रेस; चार गोदाम जहां शराब को पुरानी किया जाता था; भट्ठे जहां मिट्टी के शराब के जग और टूटे हुए घड़ों के हजारों टुकड़े जलाए जाते थे; कहा जाता है कि वाइनरी में एक वर्ष में आधा मिलियन गैलन वाइन का उत्पादन किया जाता था।

किरण ज़ेहरा द्वारा संकलित; एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा।

Registered No. TN/CCN/359/2021-2023
Licensed to post WPP No.TN/PMG(CCR)/WPP 421/21-23
Total number of pages in this monthly issue, including cover, 84. Price: ₹35
Registered with Registrar of News Papers for India TNHIN/2001/05271 Rotary Samachar Published on the first week of every month

ADVT.